''अब स्वयं को मुक्त कर मास्टर मुक्तिदाता बन सबको मुक्ति दिलाने के निमित्त बनो''

आज स्नेह के सागर बापदादा चारों ओर के स्नेही बच्चों को देख रहे हैं। दो प्रकार के बच्चे देख-देख हर्षित हो रहे हैं। एक हैं लवलीन बच्चे और दूसरे हैं लवली बच्चे, दोनों के स्नेह की लहरें बाप के पास अमृतवेले से भी पहले से पहुँच रही हैं। हर एक बच्चे के दिल से ऑटोमेटिक गीत बज रहा है - ``मेरे बाबा''। बापदादा के दिल से भी यही गीत बजता -``मेरे बच्चे, लाडले बच्चे, बापदादा के भी सिरताज बच्चे''।

आज स्मृति दिवस के कारण सबके मन में स्नेह की लहर ज्यादा है। अनेक बच्चों की स्नेह के मोतियों की मालायें बापदादा के गले में पिरो रही हैं। बाप भी अपने स्नेही बांहों की माला बच्चों को पहना रहे हैं। बेहद के बापदादा की बेहद की बांहों में समा गये हैं। आज सब विशेष स्नेह के विमान में पहुंच गये हैं और दूर-दूर से भी मन के विमान में अव्यक्त रूप से, फरिश्तों के रूप से पहुंच गये हैं। सभी बच्चों को बापदादा आज स्मृति दिवस सो समर्थ दिवस की पदमापदम याद दे रहे हैं। यह दिवस कितनी स्मृतियां दिलाता है और हर स्मृति सेकण्ड में समर्थ बना देती है। स्मृतियों की लिस्ट सेकण्ड में स्मृति में आ जाती है ना। स्मृति सामने आते समर्थी का नशा चढ़ जाता है। पहली-पहली स्मृति याद है ना! जब बाप के बने तो बाप ने क्या स्मृति दिलाई ? आप कल्प पहले वाली भाग्यवान आत्मा हो। याद करो इस पहली स्मृति से क्या परिवर्तन आ गया ? आत्म अभिमानी बनने से परमात्म बाप के स्नेह का नशा चढ़ गया। क्यों नशा चढ़ा ? दिल से पहला स्नेह का शब्द कौन सा निकला ? ``मेरा मीठा बाबा'' और इस एक गोल्डन शब्द निकलने से नशा क्या चढ़ा ? सारी परमात्म प्राप्तियां मेरा बाबा कहने से, जानने से, मानने से आपकी अपनी प्राप्तियां हो गई। अनुभव है ना! मेरा बाबा कहने से कितनी प्राप्तियां आपकी हो गई! जहाँ प्राप्तियां होती हैं वहाँ याद करनी नहीं पड़ती लेकिन स्वतः ही आती है, सहज ही आती है क्योंकि मेरी हो गई ना! बाप का खजाना मेरा खजाना हो गया, तो मेरापन याद किया नहीं जाता है, याद रहता ही है। मेरा भुलाना मुश्किल होता है, याद करना मुश्किल नहीं होता। जैसे अनुभव है मेरा शरीर, तो भूलता है ? भुलाना पड़ता है, क्यों ? मेरा है ना! तो जहाँ मेरापन आता है वहाँ सहज याद हो जाती है। तो स्मृति ने समर्थ आत्मा बना दिया। एक शब्द मेरा बाबा ने। भाग्य विधाता अखुट खजाने के दाता को मेरा बना लिया। ऐसी कमाल करने वाले बच्चे हो ना! परमात्म पालना के अधिकारी बन गये, जो परमात्म पालना सारे कल्प में एक बार मिलती है, आत्मायें और देव आत्माओं की पालना तो मिलती है लेकिन परमात्म पालना सिर्फ एक जन्म के लिए मिलती है।

तो आज के स्मृति सो समर्थी दिवस पर परमात्म पालना का नशा और खुशी सहज याद रही ना! क्योंकि आज का वायुमण्डल सहज याद का था। तो आज के दिन सहजयोगी रहे कि आज के दिन भी युद्ध करनी पड़ी याद के लिए ? क्योंकि आज का दिन स्नेह का दिन कहेंगे ना, तो स्नेह मेहनत को मिटा देता है। स्नेह सब बातें सहज कर देता है। तो सभी आज के दिन विशेष सहजयोगी रहे या मुश्किल आई ? जिसको आज के दिन मुश्किल आई हो वह हाथ उठाओ। किसको भी नहीं आई ? सब सहजयोगी रहे। अच्छा जो सहजयोगी रहे वह हाथ उठाओ। अच्छा - सहजयोगी रहे ? आज माया को छुट्टी दे दी थी। आज माया नहीं आई ? आज माया को विदाई दे दी ? अच्छा आज तो विदाई दे दी, उसकी मुबारक हो, अगर ऐसे ही स्नेह में समाये रहो तो माया को तो विदाई सदा के लिए हो जायेगी क्योंकि अभी 70 साल पूरे हो रहे हैं, तो बापदादा इस वर्ष को न्यारा वर्ष, सर्व का प्यारा वर्ष, मेहनत से मुक्त वर्ष, समस्या से मुक्त वर्ष मनाने चाहते हैं। आप सभी को पसन्द है ? पसन्द है ? मुक्त वर्ष मनायेंगे ? क्योंकि मुक्तिधाम में जाना है, अनेक दुःखी अशान्त आत्माओं को मुक्तिदाता बाप से साथी बन मुक्ति दिलाना है। तो मास्टर मुक्तिदाता जब स्वयं मुक्त बनेंगे तब तो मुक्ति वर्ष मनायेंगे ना! क्योंकि आप ब्राह्मण आत्मायें स्वयं मुक्त बन अनेकों को मुक्ति दिलाने के निमित्त हो। एक भाषा जो मुक्ति दिलाने के बजाए बंधन में बांधती है, समस्या के अधीन बनाती है, वह है ऐसा नहीं, वैसा। वैसा नहीं ऐसा। जब समस्या आती है तो यही कहते हैं बाबा ऐसा नहीं था, वैसा था ना।

ऐसा नहीं होता, ऐसा होता ना। यह है बहाने बाजी करने का खेल।

बापदादा ने सबका फाइल देखा, तो फाइल में क्या देखा ? मैजॉरिटी का फाइल प्रतिज्ञा करने के पेपर से फाइल भरा हुआ है। प्रतिज्ञा करने के टाइम बहुत दिल से करते हैं, सोचते भी हैं लेकिन अभी तक देखा कि फाइल बड़ा होता जाता है लेकिन फाइनल नहीं हुआ है। दृढ़ प्रतिज्ञा के लिए कहा हुआ है - जान चली जाए लेकिन प्रतिज्ञा न जाए। तो बापदादा ने आज सबके फाइल देखे। बहुत प्रतिज्ञायें अच्छी-अच्छी की है। मन से भी की है और लिख करके भी की है। तो इस वर्ष क्या करेंगे ? फाइल को बढ़ायेंगे या प्रतिज्ञा को फाइनल करेंगे ? क्या करेंगे ? पहली लाइन वाले बताओ, पाण्डव सुनाओ, टीचर्स सुनाओ। इस वर्ष जो बापदादा के पास फाइल बड़ा होता जाता है, उसको फाइनल करेंगे या इस वर्ष भी फाइल में कागज एड करेंगे ? क्या करेंगे ? बोलो पाण्डव ? फाइनल करेंगे ? जो समझते हैं - झुकना पड़े, बदलना पड़े, सहन करना भी पड़े, सुनना भी पड़े, लेकिन बदलना ही है, वह हाथ उठाओ। देखो टी.वी. में सबका फोटो निकालो। सभी का फोटो निकालना, दो तीन चार टी.वी. हैं, सब तरफ के फोटो निकालो। यह रिकार्ड रखना, बाप को यह फोटो निकाल के देना। कहाँ है टी.वी. वाले ? बापदादा भी फाइल का फायदा तो उठावे। मुबारक हो, मुबारक हो, अपने आपके लिए ही ताली बजाओ।

देखो जैसे एक तरफ साइन्स दूसरे तरफ भ्रष्टाचारी, तीसरे तरफ पापाचारी, सब अपने-अपने कार्य में और वृद्धि करते जा रहे हैं। बहुत नये-नये प्लैन बनाते जाते हैं। तो आप तो क्रियेटर के बच्चे हो, वर्ल्ड क्रियेटर के बच्चे हो तो आप इस वर्ष ऐसी नवीनता के साधन अपनाओ जो प्रतिज्ञा दृढ़ हो जाए क्योंकि सभी प्रत्यक्षता चाहते हैं। कितना खर्चा कर रहे हैं, जगह-जगह पर बड़े-बड़े प्रोग्राम कर रहे हैं। हर एक वर्ग मेहनत अच्छी कर रहे हैं लेकिन अभी इस वर्ष यह एडीशन करो कि जो भी सेवा करो, मानो मुख की सेवा करते हो, तो सिर्फ मुख की सेवा नहीं, मन्सा वाचा और स्नेह सहयोग रूपी कर्म एक ही समय में तीन सेवायें इक्ट्ठी हों। अलग-अलग नहीं हों। एक सेवा में देखा जाता है कि जो बापदादा रिजल्ट देखने चाहते हैं वह नहीं होती। जो आप भी चाहते हो, प्रत्यक्षता हो जाए, अभी तक यह रिजल्ट अच्छी है। पहले से बहुत अच्छी रिजल्ट है, सब अच्छा अच्छा, बहुत अच्छा कहके जाते हैं। लेकिन अच्छा बनना अर्थात् प्रत्यक्षता होना। तो अब एडीशन करो कि एक ही समय पर मन्सा-वाचा-कर्मणा में स्नेही सहयोगी बनना, हर एक साथी चाहे ब्राह्मण साथी हैं, चाहे बाहर वाले सेवा के निमित्त जो बनते हैं, वह साथी हों लेकिन सहयोग और स्नेह देना यह है कर्मणा सेवा में नम्बर लेना। यह भाषा नहीं कहना, यह ऐसा किया ना, तभी ऐसा करना पड़ा। स्नेह के बजाए थोड़ा-थोड़ा कहना पड़ा, बाबा शब्द नहीं बोलता। यह करना ही पड़ता है, कहना ही पड़ता है, देखना ही पड़ता है... यह नहीं। इतने वर्षो में देख लिया, बापदादा ने छुट्टी दे दी। ऐसा नहीं वैसा करते रहे, लेकिन अभी कब तक ? बापदादा से सभी रूहरिहान में मैजॉरिटी कहते हैं बाबा आखिर भी पर्दा कब खोलेंगे ? कब तक चलेगा ? तो बापदादा आपको कहते हैं कि यह पुरानी भाषा, पुरानी चाल, अलबेलेपन की, कड़ुवेपन की कब तक ? बापदादा का भी क्वेश्चन है कब तक ? आप उत्तर दो तो बापदादा भी उत्तर देगा कब तक विनाश होगा। क्योंकि बापदादा विनाश का पर्दा तो अभी भी खोल सकता है, इस सेकण्ड लेकिन पहले राज्य करने वाले तो तैयार हों। तो अब से तैयारी करेंगे तब समाप्ति समीप लायेंगे। किसी भी कमजोरी की बात में कारण नहीं बताओ, निवारण करो, यह कारण था ना। बापदादा सारे दिन में बच्चों का खेल तो देखते हैं ना, बच्चों से प्यार है ना, तो बार-बार खेल देखते रहते हैं। बापदादा की टी.वी. बहुत बड़ी है। एक समय पर वर्ल्ड दिखाई दे सकती है, चारों ओर के बच्चे दिखाई दे सकते हैं। जैसे अमेरिका हो, चाहे गुडगांव हो, सब दिखाई देते हैं। तो बापदादा खेल बहुत देखते हैं। टालने की भाषा बहुत अच्छी है, यह कारण था ना, बाबा मेरी गलती नहीं है, ऐसा किया ना। उसने तो किया लेकिन आपने समाधान किया ? कारण को कारण ही बनने दिया या कारण को निवारण में बदली किया ? तो सभी पूछते हैं ना कि बाबा आपकी क्या आशा है। तो बापदादा आशा सुना रहे हैं। बापदादा की एक ही आशा है निवारण दिखाई देवे, कारण खत्म हो जाए। समस्या समाप्त हो जाए, समाधान होता रहे। हो सकता है ? हो सकता है ? पहली लाइन - हो सकता है ? कांध तो हिलाओ। पीछे वाले हो सकता है ? हो सकता है ? अच्छा। तो कल अगर टी.वी. खोलेंगे, टी.वी में देखेगे जरूर ना। तो कल टी.वी. देखेंगे तो चाहे फारेन चाहे इन्डिया, चाहे छोटे गांव चाहे बहुत बड़ी स्टेट, कहाँ भी कारण दिखाई नहीं देगा ? पक्का ? इसमें हाँ नहीं कर रहे हैं ? होगा ? हाथ उठाओ। हाथ बहुत अच्छा

उठाते हो, बापदादा खुश हो जाता। कमाल है हाथ उठाने की। खुश करना तो आता है बच्चों को। क्योंकि बापदादा देखते हैं सोचो - जो आप कोटों में कोई, कोई में कोई निमित्त बने हो, अभी इन बच्चों के सिवाए और कौन करेगा ? आपको ही तो करना है ना! तो बापदादा की आप बच्चों में उम्मीदें हैं। और आयेंगे ना, वह तो आपकी अवस्था देख करके ही ठीक हो जायेंगे, उन्हों को मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। आप बन जाओ बस क्योंकि आप सभी ने जन्म लेते ही बाप से वायदा किया है - साथ रहेंगे, साथी बनेंगे और साथ चलेंगे और ब्रह्मा बाप के साथ राज्य में आयेंगे। यह वायदा किया है ना ? जब साथ रहेंगे, साथ चलेंगे तो साथ में सेवा के साथी भी तो हो ना!

तो अभी क्या करेंगे ? हाथ तो बहुत अच्छा उठाया, बापदादा खुश हो गये लेकिन जब भी कोई बात आवे ना तो यह दिन, यह तारीख, यह टाइम याद करना तो हमने क्या हाथ उठाया था। मदद मिल जायेगी। बनना तो पड़ेगा आपको। अभी सिर्फ जल्दी बन जाओ। आप सोचते हो ना, हम ही कल्प पहले भी थे, अभी भी हैं और हर कल्प हमें ही बनना है, यह तो पक्का है ना कि दो साल बनेंगे तीसरे साल जायेंगे, ऐसे तो नहीं होगा। तो सदा याद रखो हम ही निमित्त हैं, हम ही कोटों में कोई, कोई में कोई हैं। कोटो में कोई तो आयेंगे लेकिन आप कोई में कोई हो।

तो आज स्नेह का दिन है, तो स्नेह में कुछ भी करना मुश्किल नहीं होता। इसलिए बापदादा आज ही सभी को याद दिला रहे हैं। शिवबाबा को, ब्रह्मा बाबा से कितना बच्चों का प्यार है, यह देख करके बहुत खुशी होती है। चारों ओर देखा चाहे सप्ताह का स्टूडेन्ट है, चाहे 70 साल वाला है। 70 साल वाला और 7 दिन वाला भी आज के दिन प्यार में समाया हुआ है। तो शिव बाप भी ब्रह्मा बाप से बच्चों का प्यार देख करके हर्षित होते हैं।

आज के दिन का और समाचार सुनायें। आज के दिन एडवान्स पार्टी भी बापदादा के पास इमर्ज होती है। तो एडवांस पार्टी भी आपको याद कर रही है कि कब बाप के साथ मुक्तिधाम का दरवाजा खोलेंगे! आज सारी एडवांस पार्टी बापदादा को यही कह रही थी कि हमको तारीख बताओ। तो क्या जवाब दें ? बताओ क्या जवाब दें ? जवाब देने में कौन होशियार है ? बापदादा तो यही उत्तर देते हैं कि जल्द से जल्द हो ही जायेगा। लेकिन इसमें आप बच्चों का बाप को सहयोग चाहिए। सभी साथ चलेंगे ना! साथ चलने वाले हैं या रुक-रूक कर चलने वाले हैं ? साथ में चलने वाले हैं ना! पसन्द है ना साथ में चलना ? तो समान तो बनना पड़ेगा ना। अगर साथ में चलना है तो समान तो बनना ही पड़ेगा ना! कहावत क्या है ? हाथ में हाथ हो, साथ में साथ हो। तो हाथ में हाथ अर्थात् समान। तो बोलो दादियां बोलो, तैयारी हो जायेगी ? दादियां बोलो। दादियां हाथ उठाओ। दादायें हाथ उठाओ। आपको कहा जाता है ना बड़े दादा। तो बताओ दादियां, दादायें क्या तारीख है कोई ? (अभी नहीं तो कभी नहीं) अभी नहीं तो कभी नहीं का अर्थ क्या हुआ ? अभी तैयार है ना! जवाब तो अच्छा दिया। दादियां ? पूरा होना ही है। हर एक अपने को जिम्मेवार समझे। छोटे बड़े, इसमें छोटे नहीं होना है। 7 दिन का बच्चा भी जिम्मेवार है। क्यों साथ चलना है ना। अकेला बाप जाने चाहे तो चला जाए लेकिन बाप जा नहीं सकता। साथ चलना है। वायदा है बाप का भी और आप बच्चों का भी। वायदा तो निभाना है ना! निभाना है ना ? यह मधुबन वाले बैठते हैं ना!

मधुबन में जो भी चार्ज के हेडस हैं, चार्जेज तो बहुत हैं ना, शान्तिवन, ज्ञान सरोवर, पाण्डव भवन सब जगह हैं। तो जो चार्ज वाले हैं उनके नामों की लिस्ट बापदादा को देना, उनसे हिसाब लेंगे। और जो सभी टीचर्स इन्चार्ज हैं, सेन्टर इन्चार्ज हैं या जोन इन्चार्ज है, उन्हों का एक दिन संगठन करेंगे, हिसाब-किताब तो पूछेंगे ना! क्योंकि बापदादा के पास बहुत दुःख और अशान्ति के आवाज आते हैं। परेशानी के आवाज आते हैं। आप लोगों के पास नहीं सुनने आते, आपके भी तो भक्त होंगे ना! तो भक्तों की पुकार आप इष्ट देवों को नहीं आती ? टीचर्स को भक्तों की आवाज सुनाई देती है ? अच्छा।

महाराष्ट्र ज़ोन, बम्बई और आंध्रप्रदेश के सेवाधारी:- अच्छा सभी चांस अच्छा ले लेते हैं। नाम ही महाराष्ट्र है। अच्छी संख्या आई है। तो महाराष्ट्र अर्थात् महान आत्माओं का राष्ट्र है। तो बापदादा देखते हैं कि महाराष्ट्र में बापदादा के महान बच्चे बहुत अच्छे-अच्छे हैं क्योंकि बापदादा की नज़र, महाराष्ट्र के बाम्बे और दिल्ली में ज्यादा है। बाम्बे नरदेसावर है और दिल्ली आवाज बुलन्द करने के निमित्त है और ड्रामानुसार महाराष्ट्र बाम्बे या आसपास और दिल्ली दोनों को साकार ब्रह्मा बाप और जगदम्बा की पालना मिली है। विशेष पालना मिली है। तो कोई भी कार्य होता है तो बापदादा महाराष्ट्र और दिल्ली को याद करते हैं। बाकी जो भी हैं वह तो साथी बन ही जाते हैं। दूसरे छोटे

ज़ोन नहीं हैं, दूसरे भी बड़े बड़े ज़ोन हैं लेकिन साकार पालना के लिए विशेष बापदादा दिल्ली और बाम्बे को याद करते हैं। छोटे ज़ोन भी कमाल कर सकते हैं, छोटे को हमेशा बापदादा कहता है बड़े तो बड़े हैं लेकिन छोटे समान बाप हैं। अभी महाराष्ट्र को कुछ महान कार्य करना पड़ेगा। अभी बहुत टाइम हो गया है कोई नये कार्य की इन्वेन्शन नहीं निकाली है। वर्गीकरण का कार्य भी अभी काफी टाइम चल चुका, कान्फ्रेन्सेज भी चल चुकी, यूथ यात्रायें भी चल गई। अभी कोई नई सेवा की विधि निकालो। सोचो। जिससे आवाज सहज फैल जाये। अभी तक जो भी किया है, सेवा के प्लैन बापदादा को पसन्द हैं और वृद्धि भी हुई है। लेकिन बहुत समय यह प्रोग्रामस चल चुके। अभी कोई नई इन्वेन्शन तैयार करो। कोई भी करे, छोटे करे तो इनएडवांस मुबारक हैं। अच्छा है महाराष्ट्र में भी वृद्धि अच्छी हो रही है। अभी महाराष्ट्र का टर्न है तो महाराष्ट्र क्यों नहीं नम्बरवन में बाप के स्नेह का रिटर्न देवे। बापदादा ने सुना दिया है - बापदादा को स्नेह का रिटर्न है - स्वयं को और विश्व को टर्न करना। बस रिटर्न में रि निकाल दो तो टर्न हो जायेगा क्योंकि बापदादा को बच्चों में बहुत-बहुत, अच्छी-अच्छी उम्मीदें हैं, उम्मींदवार हो। तो क्या करेगा महाराष्ट्र ? रिटर्न देगा ? अच्छा है, अच्छे अच्छे महारथी हैं महाराष्ट्र में। संगठित रूप में मीटिंग करो, चारों ओर महाराष्ट्र में बापदादा ने देखा है उम्मींदवार सितारे हैं। जो चाहे वह कर सकते हैं। तो ऐसे संगठित रूप में प्रोग्राम करना और नया कोई प्लैन बनाना, कर सकते हैं। महाराष्ट्र कर सकता है। करेंगे ना! अरे नाम ही महाराष्ट्र है तो महान कार्य करना ही है ना! क्या समझते हैं पाण्डव ? करेंगे ? पाण्डव सेना करेंगे, शक्ति सेना करेंगे ? टीचर्स भी बहुत हैं। बहुत अच्छा है।

डबल विदेशी:– बहुत अच्छा - बापदादा ने पहले भी कहा तो जब डबल विदेशी आते हैं तो मधुबन का श्रृंगार हो जाता है। डबल विदेशियों से सभी का प्यार बहुत है। जब भी आपके ग्रुप को देखते हैं ना तो सभी खुश हो जाते हैं क्योंकि आप भी कोटों में कोई, कोई में कोई निकले हो और आजकल विदेश सेवा की अच्छी न्यूज़ है। अच्छे-अच्छे मुस्लिम धर्म में भी सन्देश दे रहे हैं। डबल विदेशियों की विशेषता एक बहुत अच्छी गाई हुई है कि डबल विदेशी अगर किसी भी कार्य में लगेंगे तो हाँ तो हाँ, ना तो ना। जिस कार्य में लगेंगे उस कार्य में फिर विजयी बनेंगे। तो आप जो भी ग्रुप में है वह विजयी ग्रुप है ना। विजय का तिलक लगा हुआ है ना। बापदादा देख रहे हैं कि सेवा में वृद्धि भी हो रही है, सन्देश दे रहे हैं, रहमदिल आत्मा बनके आत्माओं को सन्देश देना यह बाप समान सेवाधारी बनना है। अभी सुनाया ना आज अभी एक समय पर एक सेवा नहीं करो, तीनों ही सेवायें इकट्ठी इकट्ठी हों तो उसका प्रभाव जल्दी होगा। अपने चेहरे से, अपनी चलन से भी सेवा कर सकते हैं। चलते-फिरते म्युजियम हो। जैसे म्युजियम में वा प्रदर्शनी में भिन्न-भिन्न चित्र होते हैं ना वैसे आपके नयन, आपका मस्तक, आपके मुस्कराते हुए होंठ, यह भिन्न-भिन्न जो साधन हैं, उससे सेवा कर सकते हैं। अच्छे हैं, बापदादा को हिम्मत वाले भी लगते हैं सिर्फ अभी थोड़ा सा रियलाइजेशन सूक्ष्म चाहिए। रियलाइज करते हो लेकिन थोड़ा सा सूक्ष्म रूप से रियलाइजे-शन करके नम्बरवन बन जाओ। विन करो और वन, सेकण्ड नम्बर नहीं, वन। ठीक है ना! वन है ना, टू तो नहीं ना! वन नम्बर हैं ? कांध हिलाओ। अच्छा। अच्छा है, बापदादा को विदेशियों का ग्रुप मधुबन में आता रहे, यह अच्छा लगता है। सज़ जाता है मधुबन। अच्छा।

इण्डियन यूथ ग्रुप:– यूथ ग्रुप आया है ना - इन्डियन यूथ ग्रुप उठो। अच्छा इन्डिया का यूथ ग्रुप क्या कमाल करेगा ? सन्देश देने में चारों ओर आवाज फैलाने में यूथ में डबल ताकत है। बापदादा ने सुना, टॉपिक बहुत अच्छी रखी है, विक्ट्री। ऐसा है ना। तो सदा विजयी बन, विजयी बनाने वाले। तो विजयी तब बनेंगे जो बापदादा ने इस वर्ष का काम दिया है, वह एक्जैम्पुल बनकर दिखाना। सब कहें यूथ ग्रुप विजयी अर्थात् निर्विघ्न। ऐसा संकल्प किया है ? किया है ? कोई कारण तो नहीं बतायेंगे ना! ऐसा वैसा तो नहीं कहेंगे ना! मुझे बदलना है। मुझे एडजेस्ट होना है। मुझे सहयोग देना है। मुझे स्नेह देना है। पहले मैं, इसमें पहले मैं भले करो। अच्छा है आपस में संगठन फॉरेन वालों ने भी किया, इन्डिया वाले भी कर रहे हैं, अच्छा है। मुबारक हो। आगे उड़ते रहना। अच्छा।

बापदादा के पास फूलों के श्रृंगार वाले ग्रुप की यादप्यार भी आई है, (कलकत्ता के भाई बहिनें) वह संगठन उठो कहाँ है। देखो सभी को फूलों का श्रंगार अच्छा लगा ना। फूलों का श्रृंगार तो कामन बात है, लोग भी करते हैं लेकिन आपके श्रृंगार और लोगों के श्रृंगार में फर्क है कि आपने स्नेही स्वरूप बन श्रृंगार किया है, वह ड्युटी समझके करते

हैं और आपने स्नेह से किया है तो जहाँ स्नेह होता है वह फूलों की सुगन्ध और श्रृंगार और सुन्दर हो जाती है। तो बापदादा को अच्छा लगा कि स्नेह देखो कलकत्ता से यहाँ ले आते हैं तो स्नेह के विमान में लाये ना, ट्रेन में नहीं लाये, स्नेह के विमान में लाये हैं, अच्छा है। जो आने वाले आपके भाई-बहिन हैं वह भी देख करके खुश हो जाते हैं, वाह! कमाल है, कमाल है। तो आप सभी ने जिस स्नेह से सजाया है, तो बापदादा उससे ज्यादा पदमगुणा आपको स्नेह दे रहा है, मुबारक हो। अच्छा।

चारों ओर के पत्र, याद-पत्र ईमेल, फोन, चारों ओर के बहुत-बहुत आये हैं, यहाँ मधुबन में भी आये हैं तो वतन में भी पहुंचे हैं। आज के दिन जो बंधन वाली मातायें हैं, उन्हों की भी बहुत स्नेह भरी मन की यादें बापदादा के पास पहुंच गई हैं। बापदादा ऐसे स्नेही बच्चों को बहुत याद भी करते और दुआयें भी देते हैं। आजकल बापदादा देख रहे हैं सब बहुत खुशी खुशी से दूर बैठे भी नजदीक में अनुभव कर रहे हैं। लेकिन मधुबन में सम्मुख आना, अपनी झोली भरना, इतने बड़े परिवार से मिलना, यह परिवार कम नहीं है, किसी भी रीति से देख लिया लेकिन सम्मुख परिवार को देख कितनी खुशी होती है क्योंकि 5 हजार वर्ष के बाद मिले हैं। तो वह अनुभव अपना है लेकिन मधुबन निवासी बनना यह गोल्डन चांस बहुत सहयोग देता है। अनुभव भी करते हैं सभी। लेकिन बापदादा खुश है कि सभी को मुरली से प्यार है और मुरली से प्यार अर्थात् मुरलीधर से प्यार। कोई कहे मुरलीधर से तो प्यार है लेकिन मुरली कभी कभी सुन लेते हैं, बापदादा कहते हैं बापदादा उसका प्यार, प्यार नहीं समझते हैं। प्यार निभाना अलग है, प्यार करना अलग है। जिसको मुरली से प्यार है वह है प्यार निभाने वाले और मुरली से प्यार नहीं तो प्यार करने वालों की लिस्ट में है निभाने वाले नहीं। मधुबन में मुरली बाजे, मधुबन का गायन है। मधुबन की धरनी का ही महत्व है। अच्छा।

तो चारों ओर के स्नेही बच्चों को लवली और लवलीन दोनों बच्चों को, सदा बाप के श्रीमत प्रमाण हर कदम में पदम जमा करने वाले नॉलेजफुल पावरफुल बच्चों को, सदा स्नेही भी और स्वमानधारी भी, सम्मानधारी भी, ऐसे सदा बाप की श्रीमत को पालन करने वाले विजयी बच्चों को, सदा बाप के हर कदम पर कदम उठाने वाले सहजयोगी बच्चों को बापदादा का लेकिन आज वतन में जो आपकी एडवांस पार्टी वाले बच्चे हैं, उन्होंने भी, एक एक ने यही कहा है कि हमारी तरफ से भी सभी को, चारों ओर के बच्चों को यादप्यार हमारी देना और हमारा सन्देश देना कि हम आपका इन्तजार कर रहे हैं। आप जल्दी से जल्दी इन्तजाम करो। विशेष आप सबकी प्यारी माँ, दीदी, भाऊ विश्वकिशोर और जो भी साथी गये हैं उन्होंने, सभी ने आप सबको याद प्यार दिया है और साथ-साथ मीठी माँ आपकी, उसने यही कहा है कि अभी विजयी बन दुःख दर्द दूर कर जल्दी-जल्दी मुक्तिधाम का गेट खोलने के लिए बाप के साथी बन जाओ। ब्रह्मा बाप ने, जिन्होंने साकार में बाप को नहीं देखा है तो ब्रह्मा बाप भी विशेष आप सभी को बहुत दिल से यादप्यार दे रहे हैं। तो यादप्यार और नमस्ते।

दादियों से:– (दादी रतनमोहिनी, दादी मनोहर इन्द्रा से) आप भी देखो आलराउन्ड पार्ट बजा रही हो ना। जितना भी कर सकी सेवा में नम्बरवन। आप तो शुरू से नम्बरवन रही हैं। ब्रह्मा बाप के दिल में आपका नाम है। कुछ भी हो करते चलो, देख करके औरों को भी हिम्मत आती है। करावनहार साथ में है ही।

दादी जी से:– बहुत अच्छी, आप मुस्कराती हो ना तो सभी खुश होते हैं। अभी एक बात करो, करेंगी ? करेंगी पक्का ? अभी खाना अच्छी तरह से खाओ। ऑख खोलके खाना खाओ। बन्द नहीं करो क्योंकि आपकी ऑखें बन्द होती है ना, तो सभी का संकल्प चलता है क्यों किया, क्यों किया। इसलिए अभी खाना बहुत प्यार से खाओ। अभी ऑखे बन्द नहीं करना। करेंगी ना। यह बहुत खुश हो जायेंगे। हाँ करेंगी। करना ही है, करना ही है।

दादी शान्तामणी:– अरे वाह! आपको याद है ना, आपको बापदादा ने एक स्पेशल टाइटल दिया था, (सचली कौड़ी) बापदादा ने खास टाइटल दिया था - सचली कौड़ी। उस दिनों में कौड़ी का महत्व था।

सभी को दादियों को देखकर खुशी होती है ना। क्या गीत गाते हो ? वाह! दादियां वाह! और यह वाह! वाह! नहीं होते तो आप भी नहीं होते। अच्छा।

परमात्म प्राप्तियों से सम्पन्न आत्मा की निशानी - होलीएस्ट, हाइएस्ट और रिचेस्ट

आज विश्व परिवर्तक बापदादा अपने साथी बच्चों से मिलने आये हैं। हर एक बच्चे के मस्तक में तीन परमात्म विशेष प्राप्तियां देख रहे हैं। एक है होलीएस्ट, 2- हाइएस्ट और 3- रिचेस्ट। इस ज्ञान का फाउण्डेशन ही है होली अर्थात् पवित्र बनना। तो हर एक बच्चा होलीएस्ट है, पवित्रता सिर्फ ब्रह्मचर्य नहीं लेकिन मन-वाणी-कर्म, सम्बन्ध-सम्पर्क में पवित्रता। आप देखो, आप परमात्म ब्राह्मण आत्मायें आदि-मध्य-अन्त तीनों ही काल में होलीएस्ट रहती हो। पहले-पहले आत्मा जब परमधाम में रहते हो तो वहाँ भी होलीएस्ट हो फिर जब आदि में आते हो तो आदिकाल में भी देवता रूप में होलीएस्ट आत्मा रहे। होलीएस्ट अर्थात् पवित्र आत्मा की विशेषता है - प्रवृत्ति में रहते सम्पूर्ण पवित्र रहना। और भी पवित्र बनते हैं लेकिन आपकी पवित्रता की विशेषता है - स्वप्नमात्र भी अपवित्रता मन-बुद्धि में टच नहीं करे। सतयुग में आत्मा भी पवित्र बनती और शरीर भी आपका पवित्र बनता। आत्मा और शरीर दोनों की पवित्रता जो देव आत्मा रूप में रहती है, वह श्रेष्ठ पवित्रता है। जैसे होलीएस्ट बनते हो, इतना ही हाइएस्ट भी बनते हो। सबसे ऊंचे ते ऊंचे ब्राह्मण आत्मायें और ऊंचे ते ऊंचे बाप के बच्चे बने हो। आदि में परमधाम में भी हाइएस्ट अर्थात् बाप के साथ-साथ रहते हो। मध्य में भी पूज्य आत्मायें बनते हो। कितने सुन्दर मन्दिर बनते हैं और कितनी विधिपूर्वक पूजा होती है। जितनी विधिपूर्वक आप देवताओं के मन्दिर में पूजा होती है उतने औरों के मन्दिर बनते हैं लेकिन विधिपूर्वक पूजा आपके देवता रूप की होती है। तो होलीएस्ट भी हो और हाइएस्ट भी हो, साथ में रिचेस्ट भी हो। दुनिया में कहते हैं रिचेस्ट इन दी वर्ल्ड लेकिन आप श्रेष्ठ आत्मायें रिचेस्ट इन कल्प हैं। सारा कल्प रिचेस्ट हो। अपने खजाने स्मृति में आते हैं, कितने खजानों के मालिक हो! अविनाशी खजाने जो इस एक जन्म में प्राप्त करते हो वह अनेक जन्म चलते हैं। और कोई का भी खजाना अनेक जन्म नहीं चलते। लेकिन आपके खजाने आध्यात्मिक हैं। शक्तियों का खजाना, ज्ञान का खजाना, गुणों का खजाना, श्रेष्ठ संकल्प का खजाना और वर्तमान समय का खजाना, यह सर्व खजाने जन्म-जन्म चलते हैं। एक जन्म के प्राप्त हुए खजाने साथ चलते हैं क्योंकि सर्व खजानों के दाता परमात्मा बाप द्वारा प्राप्त होता है। तो यह नशा है कि हमारे खजाने अविनाशी हैं?

इस आध्यात्मिक खजानों को प्राप्त करने के लिए सहजयोगी बने हो। याद की शक्ति से खजाने जमा करते हो। इस समय भी इन सर्व खजानों से सम्पन्न बेफिक्र बादशाह हो, कोई फिक्र है? है फिक्र? क्योंकि यह खजाने जो हैं इसको न चोर लूट सकता, न राजा खा सकता, न पानी डुबो सकता, इसलिए बेफिक्र बादशाह हो। तो यह खजाने सदा स्मृति में रहते हैं ना! और याद भी सहज क्यों है? क्योंकि सबसे ज्यादा याद का आधार होता है एक सम्बन्ध और दूसरा प्राप्ति। जितना प्यारा सम्बन्ध होता है उतनी याद स्वत: आती है क्योंकि सम्बन्ध में स्नेह होता है और जहाँ स्नेह होता है तो स्नेही की याद करना मुश्किल नहीं होता, लेकिन भूलना मुश्किल होता है। तो बाप ने सर्व सम्बन्ध का आधार बना दिया है। सभी अपने को सहजयोगी अनुभव करते हो? वा मुश्किल योगी हैं? सहज है? कि कभी सहज है, कभी मुश्किल है? जब बाप को सम्बन्ध और स्नेह से याद करते हो तो याद मुश्किल नहीं होती और प्राप्तियों को याद करो। सर्व प्राप्तियों के दाता ने सर्व प्राप्तियां करा दी। तो अपने को सर्व खजानों से सम्पन्न अनुभव करते हो? खजानों को जमा करने की सहज विधि भी बापदादा ने सुनाई - जो भी अविनाशी खजाने हैं उन सभी खजानों की प्राप्ति करने की विधि है - बिन्दी। जैसे विनाशी खजानों में भी बिन्दी लगाते जाओ तो बढ़ता जाता है ना। तो अविनाशी खजानों की जमा करने की विधि है बिन्दी लगाना। तीन बिन्दियां हैं - एक मैं आत्मा बिन्दी, बाप भी बिन्दी और ड्रामा में जो भी

बीत जाता वह फुलस्टाप अर्थात् बिन्दी। तो बिन्दी लगाने आती है? सबसे ज्यादा सहज मात्रा कौन सी है? बिन्दी लगाना ना! तो आत्मा बिन्दी हूँ, बाप भी बिन्दी है, इस स्मृति से स्वत: ही खजाने जमा हो जाते हैं। तो बिन्दी को सेकण्ड में याद करने से कितनी खुशी होती है! यह सर्व खजाने आपके ब्राह्मण जीवन का अधिकार हैं क्योंकि बच्चे बनना अर्थात् अधिकारी बनना। और विशेष तीन सम्बन्ध का अधिकार प्राप्त होता है - परमात्मा को बाप भी बनाया है, शिक्षक भी बनाया है और सतगुरू भी बनाया है। इन तीनों सम्बन्ध से पालना, पढ़ाई से सोर्स आफ इनकम और सतगुरू द्वारा वरदान मिलता है। कितना सहज वरदान मिलता है? क्योंकि बच्चे का जन्म सिद्ध अधिकार है बाप के वरदान प्राप्त करने का।

बापदादा हर बच्चे का जमा का खाता चेक करते हैं। आप सभी भी अपने हर समय का जमा का खाता चेक करो। जमा हुआ वा नहीं हुआ, उसकी विधि है जो भी कर्म किया, उस कर्म में स्वयं भी सन्तुष्ट और जिसके साथ कर्म किया वह भी सन्तुष्ट। अगर दोनों में सन्तुष्टता है तो समझो कर्म का खाता जमा हुआ। अगर स्वयं में वा जिससे सम्बन्ध है, उसमें सन्तुष्टता नहीं आई तो जमा नहीं होता।

बापदादा सभी बच्चों को समय की सूचना भी देते रहते हैं। यह वर्तमान संगम का समय सारे कल्प में श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ समय है क्योंकि यह संगम ही श्रेष्ठ कर्मो के बीज बोने का समय है। प्रत्यक्ष फल प्राप्त करने का समय है। इस संगम समय में एक एक सेकण्ड श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ है। सभी एक सेकण्ड में अशरीरी स्थिति में स्थित हो सकते हो? बापदादा ने सहज विधि सुनाई है कि निरन्तर याद के लिए एक विधि बनाओ - सारे दिन में दो शब्द सभी बोलते हो और अनेक बार बोलते हो वह दो शब्द हैं ``मैं'' और ``मेरा''। तो जब मैं शब्द बोलते हो तो बाप ने परिचय दे दिया है कि मैं आत्मा हूँ। तो जब भी मैं शब्द बोलते हो तो यह याद करो कि मैं आत्मा हूँ। अकेला मैं नहीं सोचो, मैं आत्मा हूँ, यह साथ में सोचो क्योंकि आप तो जानते हो ना कि मैं श्रेष्ठ आत्मा हूँ, परमात्म पालना के अन्दर रहने वाली आत्मा हूँ और जब मेरा शब्द बोलते हो तो मेरा कौन? मेरा बाबा अर्थात् बाप परमात्मा। तो जब भी मैं और मेरा शब्द कहते हो उस समय यह एडीशन करो, मैं आत्मा और मेरा बाबा। जितना मेरापन लायेंगे बाप में, उतना याद सहज होती जायेगी क्योंकि मेरा कभी भूलता नहीं है। सारे दिन में देखो मेरा ही याद आता है। तो इस विधि से सहज निरन्तर योगी बन सकते हो। बापदादा ने हर बच्चे को स्वमान की सीट पर बिठाया है। स्वमान की लिस्ट अगर स्मृति में लाओ तो कितनी लम्बी है! क्योंकि स्वमान में स्थित हैं तो देह अभिमान नहीं आ सकता। या देह अभिमान होगा या स्वमान होगा। स्व मान का अर्थ ही है - स्व अर्थात् आत्मा का श्रेष्ठ स्मृति का स्थान। तो सभी अपने स्वमान में स्थित हैं? जितना स्वमान में स्थित होंगे उतना दूसरे को सम्मान देना स्वत: ही हो जाता है। तो स्वमान में स्थित रहना कितना सहज है!

तो सभी खुशनुमा रहते हैं? क्योंकि खुशनुमा रहने वाला दूसरे को भी खुशनुमा बना देता है। बापदादा सदा कहते हैं कि सारे दिन में खुशी कभी नहीं गंवाओ। क्यों? खुशी ऐसी चीज़ है जो एक ही खुशी में हेल्थ भी है, वेल्थ भी है और हैपी भी है। खुशी नहीं तो जीवन नीरस रहती है। खुशी को ही कहा जाता है - ``खुशी जैसा कोई खजाना नहीं।'' कितने भी खजाने हो लेकिन खुशी नहीं तो खजाने से भी प्राप्ति नहीं कर सकते हैं। खुशी के लिए कहा जाता है - खुशी जैसी कोई खुराक नहीं। तो वेल्थ भी है खुशी और खुशी हेल्थ भी है और नाम ही खुशी है तो हैपी तो है ही है। तो खुशी में तीनों ही चीज़े हैं। और बाप ने अविनाशी खुशी का खजाना दिया है, बाप का खजाना गंवाना नहीं। तो सदा खुश रहते?

बापदादा ने होमवर्क दिया तो खुश रहना है और खुशी बांटनी है क्योंकि खुशी ऐसी चीज़ है जो जितनी बांटेंगे उतनी बढ़ेगी। अनुभव करके देखा है! किया है ना अनुभव? अगर खुशी बांटते हैं तो बांटने से पहले अपने पास बढ़ती है। खुश करने वाले से पहले स्वयं खुश होते हैं। तो सभी ने होमवर्क किया है? किया है? जिसने किया है वह हाथ उठाओ। जिसने किया है - खुश रहना है, कारण नहीं निवारण करना है, समाधान स्वरूप बनना है। हाथ उठाओ। अभी यह तो नहीं कहेंगे ना - यह हो गया! बापदादा के पास कई बच्चों ने अपनी

रिजल्ट भी लिखी है कि हम कितने परसेन्ट ओ.के. रहे हैं। और लक्ष्य रखेंगे तो लक्ष्य से लक्षण स्वत: ही आते हैं। अच्छा। अभी क्या करना है?

सेवा का टर्न कर्नाटक का है:- कर्नाटक वाले उठो। अच्छा है कर्नाटक वालों ने सेवा का गोल्डन चांस ले लिया है क्योंकि अब संगमयुग में प्रत्यक्ष फल मिलता है। जमा भी होता है लेकिन प्रत्यक्षफल मिलता है जो उसी समय खुशी प्राप्त होती है। तो जितना दिन भी सेवा की है, तो प्रत्यक्षफल अपने में खुशी अनुभव किया? खुशी मिली? हाथ उठाओ। माया आई? नहीं आई? जिसको माया नहीं आई वह हाथ उठाओ। पाण्डवों को माया आई? थोड़ी-थोड़ी आई है? अच्छा है, यहाँ का वायुमण्डल बहुत सहयोग देता है। जैसे साइन्स वाले साइन्स की शक्ति से वायुमण्डल को परिवर्तन कर देते हैं ना। गर्मी में सर्दी, हवा का वायुमण्डल बना देते हैं ना! सर्दी में गर्मी का वायुमण्डल बना देते हैं, तो साइलेन्स की शक्ति आध्यात्मिक स्मृति का वायुमण्डल बना देता है क्योंकि यहाँ सेवा करते वृत्ति में क्या रहता है? यज्ञ सेवा है, यज्ञ का पुण्य बहुत बड़ा होता है। तो इस अविनाशी यज्ञ में सेवा करने से वृत्ति श्रेष्ठ बन जाती है। तो वायुमण्डल भी श्रेष्ठ बन जाता है। अभी कर्नाटक वाले क्या विशेषता दिखायेंगे? कोई नया कार्य करके दिखाओ। देखो कर्नाटक में संख्या बहुत है और एरिया भी बहुत है। सेवा की एरिया बहुत बड़ी है। कर्नाटक वाले बड़े ते बड़ी सेवा यही कर सकते हैं जो कर्नाटक के कोई भी छोटे बड़े कोई स्थान नहीं रहें जो आपको उल्हना देवें कि हमारा बाप आया और हमें आपने सूचना नहीं दी, सन्देश नहीं दिया। यह उल्हना नहीं रह जाये। जैसे अफ्रीका वालों ने अपनी एरिया को सन्देश देने का कार्य सफल किया है। बापदादा को यह कार्य अच्छा लगता है, कोई का भी उल्हना नहीं रह जाना चाहिए। आपका काम है सन्देश देना, वह अभी आवे या पीछे आवे लेकिन आपने अपना कार्य सम्पन्न किया तो कर्नाटक वाले दूसरे वर्ष में जब आयेंगे, क्या करके आयेंगे? कोई भी एरिया खाली नहीं रहनी चाहिए। क्योंकि आप तो जानते हो ना - कि बाप का परिचय मिलने से, बाप के सम्बन्ध में आने से आत्मायें कितनी सुखी बन जायेंगी। अभी तो दिन-प्रतिदिन दु:ख और अशान्ति बढ़ती जा रही है क्योंकि दिन-प्रतिदिन भ्रष्टाचार, पापाचार बढ़ रहा है। अति में जा रहा है। लेकिन आप जानते हो कि अति के बाद क्या होता है? अन्त आती है। और अन्त किसको लाती है? आदि को। तो अपने भाई फिर भी बाप तो एक ही है ना, चाहे जाने चाहे मानें, नहीं भी मानें लेकिन बाप तो बाप ही है। तो अपने भाईयों को, अपनी बहनों को सन्देश जरूर दे दो। तो क्या करेंगे? रिकार्ड बनायेंगे, टीचर्स? कोई गांव भी नहीं रहना चाहिए। हाथ उठाओ, जो करेगा, ऐसे ही नहीं हाथ उठाना। करेंगे? रिजल्ट जाके भेजना, प्लैन बनाना। कमाल तो करना है ना! जितनी कमाल करने में लग जायेंगे, उतनी छोटी छोटी धमाल खत्म हो जायेगी। तो बहुत अच्छा चांस मिला है, चांस लिया है और चांस का जो काम मिला है वह भी करके आयेंगे। पक्का है ना? पाण्डव, पक्का? थक नहीं जाना। कितना पुण्य जमा होगा! तो अच्छा है, बापदादा को भी खुशी होती है कि बच्चे अपने पुण्य का खाता भिन्न-भिन्न विधि से आगे बढ़ा रहे हैं। बापदादा ने सुनाया ना - तीन खाते जमा करने हैं - एक अपने पुरुषार्थ से जमा हुआ खाता और दूसरा है - दूसरी आत्माओं को सन्तुष्ट करने में पुण्य का खाता। सन्तुष्टता पुण्य का खाता जमा करती है और तीसरा है मन्सा-वाचा-स्नेह सम्बन्ध द्वारा सेवा का खाता। तो तीनों खाते चेक करना। तीनों में कमी नहीं होनी चाहिए। तो नम्बरवन लेंगे? जमा के खाते में नम्बरवन लेना। कर्नाटक है, कम थोड़ेही है। बापदादा की नज़र में है कर्नाटक। बहुत कुछ कर सकते हैं, इस नज़र में है। हाँ आगे लाइन में खड़े हुए क्या करेंगे? कमाल करेंगे ना! करो कमाल, लो नम्बर। स्व-उन्नति और सेवा की उन्नति, दोनों का बैलेन्स रखना। ठीक है बैठ जाओ। (बैंगलोर की सेवा मम्मा ने शुरू की और दादी हृदयपुष्पा और सुन्दरी बहन ने बहुत प्यार से सेवा की है) हृदयपुष्पा बच्ची ने बहुत प्यार से सेवा की है। तो प्यार का सबूत देना है। जगदम्बा माँ की सेवा का रिटर्न करना है। तो कितने दिनों में समाचार देंगे। हर मास अपने समाचार देते रहना, कि यह कर रहे हैं और यह हुआ है, यह होना है। बापदादा तो हर ज़ोन को कहते हैं लेकिन जिसका विशेष टर्न होता है उसको विशेष अटेन्शन रखना है।

तो सभी सदा मन को बिजी रखो क्योंकि मन ही धोखा देता, मन में ही टेन्शन आता, मन ही यहाँ वहाँ भागता है। तो मन को बिजी रखना अर्थात् सम्पन्न स्थिति में जल्दी से जल्दी स्थित रहना। बापदादा कहते हैं जब स्थूल कर्मेन्द्रियों को मेरा कहते हो, मेरा हाथ कहते हो, तो हाथ को कन्ट्रोल कर सकते हो ना! जहाँ चाहे जैसे चाहे वैसे करते हो ना! तो मन मेरा है, या आप मन के हो? मन के मालिक भी तो आप हो ना! मैं मन तो नहीं है ना? मन राजा तो नहीं है, आत्मा राजा है। तो कन्ट्रोलिंग पावर रूलिंग पावर धारण करेंगे तो मन आपके अच्छे ते अच्छा नम्बरवन सहयोगी साथी बन जायेगा। करके देखो। सिर्फ मालिक बनो, राजा बनो। इस दुनिया में तीन शक्तियां तो चल रही हैं - देखो यह राजनीति की आई है ना? (राजस्थान की राज्यपाल महामहिम प्रतिभा पाटिल जी बापदादा से मिलने आई हैं) तो तीन सत्तायें तो चल रही हैं, राज्य सत्ता भी चल रही है। धर्मसत्ता भी चल रही है और साइन्स की सत्ता भी चल रही है, लेकिन रिजल्ट? आपमें कितनी सत्तायें हैं? आपमें चार सत्तायें हैं क्योंकि विश्व में आध्यात्मिक शक्ति की कमी है। आपमें राज्य सत्ता है? अपनी कर्मेन्द्रियों के राजा बने हो ना! स्वराज्य अधिकारी हो ना! और धर्मसत्ता भी है, धर्म का अर्थ है दिव्य गुणों की धारणा, श्रेष्ठ चरित्र की धारणा, श्रेष्ठ कर्म की धारणा। जहाँ चरित्र है वहाँ सब कुछ है। चरित्र नहीं तो सब कुछ होते हुए भी कुछ नहीं है। और साइन्स की सत्ता, उसके साधन हैं आपके साइलेन्स की साधना है। तो चारों ही सत्ता जब इकट्ठी होती है तब विश्व परिवर्तन होता है। इसलिए बापदादा कहते हैं, बच्ची को भी कहते हैं, बहुत अच्छा किया पहुंच गई है। राज्य सत्ता में है ना तो अभी कम से कम राजस्थान को तो आध्यात्मिक सत्ता से भरपूर करो। राजस्थान पान का बीड़ा उठावे, विश्व परिवर्तन तो आपेही हो जायेगा। पहले राजस्थान को परिवर्तन करो। (बाबा राजस्थान तो आध्यात्मिकता का गढ़ है, यहाँ से विश्व में परिवर्तन का कार्य चल रहा है)

विश्व को मिल तो रही है लेकिन राजस्थान के राज्य अधिकारी भी सहयोगी बन जायें। देखो आप शक्ति रूप हो, बापदादा ने शक्तियों को आगे रखा है। तो आप भी शिव शक्ति हो। शक्ति जो चाहे वह कर सकती है। अच्छा है, बापदादा ने देखा है उमंग इनको बहुत है, राजस्थान को बहुत अच्छे ते अच्छा बनायें, लेकिन आपके सभी सहयोगी भी हैं, सब मिल करके करेंगे तो क्या नहीं हो सकता। राजस्थान दीपक जगायेगा, चरित्र का और वह दीपक चारों ओर दौड़ेगा। अच्छा किया। बापदादा को बच्चों का इस कार्य में सहयोगी बनने का उमंग-उत्साह देख खुशी होती है। आपके साथ और भी तो आये हैं ना। जो साथ में आये हैं वह हाथ उठाओ। बापदादा को बहुत अच्छा लगता है, अभी आप सभी आपस में मीटिंग करना, प्लैन बनाना कि क्या-क्या कर सकते हैं। और सब यहाँ के आपके सहयोगी बनेंगे। उमंग है ना! अच्छा है। राजस्थान को निमित्त बनना चाहिए। अच्छा है।

डबल विदेशी:- विदेशियों को अपना ओरीज्नल विदेश तो नहीं भूलता होगा। ओरीज्नल आप किस देश के हो, वह तो याद रहता है ना। इसलिए सभी आपको कहते हैं डबल विदेशी। सिर्फ विदेशी नहीं हो, डबल विदेशी। तो आपको अपना स्वीट होम कभी भूलता नहीं होगा। तो कहाँ रहते हो? बापदादा के दिलतख्त नशीन हो ना। बापदादा कहते हैं जब कोई भी छोटी मोटी समस्या आये, समस्या नहीं है लेकिन पेपर है आगे बढ़ाने के लिए। तो बापदादा का दिलतख्त तो आपका अधिकार है। दिलतख्तनशीन बन जाओ तो समस्या खिलौना बन जायेगी। समस्या से घबरायेंगे नहीं, खेलेंगे। खिलौना है। सब उड़ती कला वाले हो ना? उड़ती कला है? या चलने वाले हो? उड़ने वाले हो या चलने वाले हैं? जो उड़ने वाले हैं वह हाथ उठाओ। उड़ने वाले। आधा आधा हाथ उठा रहे हैं। उड़ने वाले हैं? अच्छा। कभी कभी उड़ना छोड़ते हैं क्या? चल रहे हैं नहीं, कई बापदादा को कहते हैं बाबा हम बहुत अच्छे चल रहे हैं। तो बापदादा कहते हैं चल रहे हो या उड़ रहे हो? अभी चलने का समय नहीं है, उड़ने का समय है। उमंग-उत्साह के, हिम्मत के पंख हर एक को लगे हुए हैं। तो पंखों से उड़ना होता है। तो रोज़ चेक करो, उड़ती कला में उड़ रहे हैं? अच्छा है, रिजल्ट में बापदादा ने देखा है कि सेन्टर्स विदेश में भी बढ़ रहे हैं। और बढ़ते जाने ही हैं। जैसे डबल विदेशी हैं वैसे डबल सेवा

मंसा भी, वाचा भी साथ-साथ करते चलो। मन्सा शक्ति द्वारा आत्माओं की आत्मिक वृत्ति बनाओ। वायुमण्डल बनाओ। अभी दु:ख बढ़ता हुआ देख रहम नहीं आता है ? आपके जड़ चित्र के आगे चिल्लाते रहते हैं, मर्सी दो, मर्सी दो, अब दयालु कृपालु रहमदिल बनो। अपने ऊपर भी रहम और आत्माओं के ऊपर भी रहम। अच्छा है - हर सीजन में, हर टर्न में आ जाते हैं। यह सभी को खुशी होती है। तो उड़ते चलो और उड़ाते चलो। अच्छा है, रिजल्ट में देखा है कि अभी अपने को परिवर्तन करने में भी फास्ट जा रहे हैं। तो स्व के परिवर्तन की गति विश्व परिवर्तन की गति बढ़ाता है। अच्छा।

जो पहली बार आये हैं वह उठो:- तो आप सभी को ब्राह्मण जन्म की मुबारक हो। अच्छा मिठाई तो मिलेगी लेकिन बापदादा दिलखुश मिठाई खिला रहे हैं। पहले बारी मधुबन आने की यह दिलखुश मिठाई सदा याद रखना। वह मिठाई तो मुख में डाला और खत्म हो जायेगी लेकिन यह दिलखुश मिठाई सदा साथ रहेगी। भले आये, बापदादा और सारा परिवार देश विदेश में आप अपने भाई बहनों को देख खुश हो रहे हैं। सभी देख रहे हैं, अमेरिका भी देख रही है तो अफ्रीका भी देख रहे हैं, रशिया वाले भी देख रहे हैं, लण्डन वाले भी देख रहे हैं, 5 खण्ड ही देख रहे हैं। तो जन्म दिन की आप सबको वहाँ बैठे बैठे मुबारक दे रहे हैं। अच्छा।

बापदादा की रूहानी ड्रिल याद है ना! अभी बापदादा हर बच्चे से चाहे नये हैं, चाहे पुराने हैं, चाहे छोटे हैं चाहे बड़े हैं, छोटे और ही समान बाप जल्दी बन सकते हैं। तो अभी सेकण्ड में जहाँ मन को लगाने चाहो वहाँ मन एकाग्र हो जाए। यह एकाग्रता की ड्रिल सदा ही करते चलो। अभी एक सेकण्ड में मन के मालिक बन मैं और मेरा बाबा संसार है, दूसरा न कोई, इस एकाग्र स्मृति में स्थित हो जाओ। अच्छा।

चारों ओर के सर्व तीव्र पुरुषार्थी बच्चों को सदा उमंग-उत्साह के पंखों से उड़ती कला के अनुभवी मूर्त बच्चों को, सदा अपने स्वमान की सीट पर सेट रहने वाले बच्चों को, सदा रहमदिल बन विश्व की आत्माओं को मन्सा शक्ति द्वारा कुछ न कुछ अंचली सुख-शान्ति की देने वाले दयालु, कृपालु बच्चों को, सदा बाप के स्नेह में समाये हुए दिलतख्तनशीन बच्चों को, बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

दादियों से:- अच्छा है - सभी आदि रत्न हैं। आदि रत्नों में विशेषता है, सभी रत्नों को देख खुश हो जाते हैं। दादी को भी सभी याद कर रहे हैं। (दादी जी को विशेष ट्रीटमेंट और चेकिंग निमित्त बम्बई हॉस्पिटल में 31 जनवरी को लेकर गये हैं। मोहिनी बहन, मुन्नी बहन, निर्वैर भाई, योगिनी बहन आदि सबने याद भेजी है) बड़ों के आगे कुछ तो अनुभव आयेंगे ना। न्यारे और बाप के प्यारे, न्यारे रहते छोटी-छोटी बातों में पार होने का एक एक्जैम्पुल बनते हैं। बिल्कुल 100 परसेन्ट सम्पन्न बनना है क्योंकि पहले नम्बर वाले जरा भी अंश का अंश भी रह नहीं जाए, सब यहाँ खत्म होना है क्योंकि इन्हों के आधार से नई दुनिया का राज्य स्थापन होना है और राज्य घराना बनना है। तो अंश मात्र को भी भस्म कर रहे हैं। इसीलिए कुछ भी होता है लेकिन फिर भी न्यारापन रहता है। सर्वगुण सम्पन्न, सम्पूर्ण निर्विकारी, मर्यादा पुरुषोत्तम यह प्रैक्टिकल सम्पन्न बनने के लिए थोड़ा बहुत यह खेल तो करना ही पड़ता है। (दादी जानकी जी ने कहा बाबा के लिए खेल है) आपके लिए भी खेल है, यह भी पार्ट है। जैसे और पार्ट बजाते हैं, यह भी पार्ट नूंधा हुआ है। यह जरा सा भी भस्म हो रहा है। बिल्कुल प्युअर, अंश मात्र भी नहीं रहे। तो सभी को प्यार तो है, और प्यार की दुआयें दादी को भी मिल रही हैं। अच्छा है, आप सब मिल करके, निमित्त बनके चला रहे हैं, यह भी बहुत अच्छा है। (परदादी ने भी याद दी है) यह भी एक खेल में खेल है कि सभी इकट्ठे इकट्ठे प्युअर बन रहे हैं। इसने (शान्तामणि दादी) तो हिम्मत दिखाई और करके दिखाया। डाक्टरों को भी अपनी हिम्मत तो दिखा दी ना। हर एक की अपनी अपनी विशेषता है। तो अच्छा है मिलके, साथी बनके, यज्ञ का कार्य तो रुकना है ही नहीं, अमर है, चलना है और बढ़ना है। सभी साक्षी होके खेल देख रहे हो या क्वेश्चन मार्क उठता है ? क्यों, क्या तो नहीं उठता ना! जो होता है, उसमें कई राज़ समाये हुए होते हैं। वह बाप जाने और ड्रामा जाने। अच्छा। सब ठीक है ना! अच्छा है।

अव्यक्त बापदादा से राजस्थान की राज्यपाल महामहिम बहन प्रतिभा पाटिल जी की मुलाकात

आपने हिम्मत अच्छी की है और बापदादा को एक बात की खुशी है कि राजस्थान में दोनों ही विशेष मातायें हैं। त्रिमूर्ति है। (चीफ मिनिस्टर, राज्यपाल और स्पीकर तीनों ही बहनें हैं) तो बापदादा ने यहाँ भी माताओं द्वारा स्थापना की। तो अभी सहयोगी बन सेवा को बढ़ाओ। राजस्थान को नम्बरवन होना चाहिए। (हो जायेगा, आपका आशीर्वाद है) क्यों नहीं होगा, जहाँ दृढ़ संकल्प है वहाँ सफलता है ही है। सफलता की चाबी दृढ़ संकल्प है। यह चाबी सदा साथ रखना। अभी आप साथी बन गई। आशीर्वाद तो शुभ कार्य और हिम्मत वाले को स्वत: मिलती है। कहे न कहे जिसमें हिम्मत है, उमंग है उसको मिलती है। बाप का वायदा है एक कदम आपकी हिम्मत का, हजार कदम बाप की मदद का। यह सब साथी भी सहयोग देना। बहुत अच्छा। आप सभी सहयोग देना। क्या नहीं कर सकते हैं, जब मनुष्यात्मा विश्व को अकल्याण कर सकते हैं तो कल्याण क्यों नहीं कर सकते। अकल्याण का पार्ट बजा रहे हैं ना! (यह क्यों हो रहा है?) यह सब अति में जाना है। देखो 10 साल पहले भ्रष्टाचार, पापाचार गुप्त था, आजकल खुले बजार में हो गया है, अति में जाना है। कलियुग है ना। कलियुग अति में जा रहा है। (इसे खत्म करने का उपाय क्या है?) इसका उपाय है आध्यात्मिक शक्ति को बढ़ाना। यह सन्देश देके उन्हों में श्रेष्ठ कर्म की भावना पैदा करना। अच्छा।

(जयकुमार रावल, एम.एल.ए. दोढांइचा महाराष्ट्र) कुछ भी हैं लेकिन बाप के कार्य में सहयोगी बनना है।

(राज्यपाल से) यह तो घर की बन गई है। देखो दादियों के साथ आ गई है। अच्छा।

पटना से कमिश्नर आये हैं: कुछ भी हो, अभी ईश्वरीय कार्य में साथी बनना है। बस यह दृढ़ संकल्प करके जाओ, करना ही है। साथ देना ही है। हिलो नहीं, दृढ़ता रखो।

भ्राता प्रभाकर रेडी जी (जिलाध्यक्ष) आंध्र प्रदेश:- कुछ भी हो, अभी क्या करना है? अभी ईश्वरीय कार्य में सहयोगी बनके चलना। अच्छा।

दादियों की सेवा में रहने वाली बहनों से:- आप सेन्टर पर नहीं रहती हो, मधुबन में नहीं रहती हो, सब ब्राह्मण परिवार के बीच में रहती हो। सबकी नज़र आपके ऊपर है, बड़ी जिम्मेवारी है, थकना नहीं, साधारण नहीं हो। फरिश्तों जैसे चलो, दादियों को सम्भाल रही हो, कोई कम्पलेन नहीं है, बापदादा खुश है।

बापदादा ने बाम्बे हॉस्पिटल में दादी जी की सेवा में गये हुए सभी भाई बहिनों को विशेष याद दी:- बापदादा बॉम्बे में सबकी प्यारी, सबके दिल की दुलारी दादी की जो सेवा के निमित्त हैं उन सबको याद-प्यार दे रहे हैं। दादी का जो भी ड्रामा में देखते हो, देखते हए साक्षी होके, दुआओं की, दिल के स्नेह की और स्नेह की सकाश देने की सेवा करते रहते हैं, करते रहो। खेल में खेल देखते रहो। साक्षी होके देखो और उड़ते रहो। बापदादा दिल से सबको दुआयें दे रहे हैं और सब प्यार से सेवा कर रहे हैं। सेवा की भी मुबारक है। (दादी जानकी जी ने कहा डाक्टर्स भी बहुत अच्छी सेवा कर रहे हैं) जो भी होता है उसमें सेवा और कल्याण तो भरा हुआ ही है। अच्छा।

सभी बहुत-बहुत-बहुत खुश हैं, खुश है! बहुत खुश है? कितना बहुत? तो सदा ऐसे रहना। कुछ भी हो जाये होने दो, अभी खुश रहना है। हमें उड़ना है, कोई नीचे नहीं ला सकता। पक्का! पक्का वायदा है? कितना पक्का? बस, खुश रहो सबको खुशी दो। कोई भी बात अच्छी नहीं लगे तो भी खुशी नहीं गँवाओ। बात को चला लो, खुशी नहीं चली जाये। बात तो खत्म हो ही जानी है लेकिन खुशी तो साथ में चलनी है ना! तो जो साथ में चलने वाली है उसको छोड़ देते हो और जो छूटने वाली है उस छोड़ने वाली को पास में रख देते हो। यह नहीं करना। अमृतवेले रोज़ पहले अपने आपको खुशी की खुराक खिलाओ। अच्छा।

``अलबेलेपन, आलस्य और बहाने बाजी की नींद से जागना ही शिवरात्रि का सच्चा जागरण है''

आज बापदादा विशेष अपने चारों ओर के अति लाडले, अति सिकीलधे, परमात्म प्यार के पात्र बच्चों से मिलने और विचित्र बाप बच्चों का बर्थ डे मनाने आये हैं। आप सभी भी आज विशेष विचित्र बर्थ डे मनाने आये हो ना! यह बर्थ डे सारे कल्प में किसी का नहीं होता। कभी भी नहीं सुना होगा कि बाप और बच्चे का एक ही दिन में बर्थ डे हो। तो आप सभी बाप का बर्थ डे मनाने आये हो वा बच्चों का भी मनाने आये हो? क्योंकि सारे कल्प में परमात्म बाप और परमात्म बच्चों का इतना अथाह प्यार है जो जन्म भी साथ-साथ है। बाप को अकेला विश्व परिवर्तन का कार्य नहीं करना है, बच्चों के साथ-साथ करना है। यह अलौकिक साथ रहने का प्यार, साथी बनने का प्यार इस संगम पर ही अनुभव करते हो। बाप और बच्चों का इतना गहरा प्यार है, जन्म भी साथ है और रहते भी कहाँ हो? अकेले या साथ में? हर एक बच्चा उमंग-उत्साह से कहते हैं कि हम बाप के कम्बाइन्ड हैं। कम्बाइन्ड रहते हो ना! अकेले तो नहीं रहते हो ना! साथ जन्म है, साथ रहते हैं और आगे भी क्या वायदा है? साथ है, साथ रहेंगे, साथ चलेंगे अपने स्वीट होम में। इतना प्यार कोई और बाप बच्चों का देखा है? कोई भी बच्चा हो, कहाँ भी है, कैसा भी है, लेकिन साथ है और साथ ही चलने वाले हैं। तो ऐसा यह विचित्र और प्यारे ते प्यारा जन्म दिन मनाने आये हैं। चाहे सम्मुख मना रहे हो, चाहे देश विदेश में चारों ओर एक ही समय साथ-साथ मना रहे हैं।

बापदादा चारों ओर देख रहे हैं कि कैसे सभी बच्चे उमंग-उत्साह से दिल ही दिल में वाह बाबा! वाह बाबा! वाह बर्थ डे! का गीत गा रहे हैं। अगर स्विच खोलते हैं तो चारों ओर के आवाज, दिल के आवाज, उमंग-उत्साह के आवाज बापदादा के कानों में सुनाई दे रहे हैं। बापदादा सभी बच्चों का उत्साह देख बच्चों को भी अपने दिव्य जन्म की पदम-पदम-पदमगुणा बधाईयां दे रहे हैं। वास्तव में उत्सव का अर्थ ही है उमंग-उत्साह में रहना। तो आप सभी उत्साह से यह उत्सव मना रहे हैं। नाम भी भक्तों ने शिवरात्रि रखा है।

आज बापदादा उस भगत आत्मा, जिसने आपके इस विचित्र जन्म दिन मनाने को, आप ज्ञान और प्रेम रूप में मनाते और उस भगत आत्मा ने भावना, श्रद्धा के रूप में आपके मनाने की कापी अच्छी की है, तो आज उस बच्चे को मुबारक दे रहे थे कि कापी करने में अच्छा पार्ट बजाया है। देखो हर बात को कापी की है। कापी करने का भी तो अक्ल चाहिए ना! मुख्य बात तो इस दिन भक्त लोग भी व्रत रखते हैं, वह व्रत खाने पीने का रखते हैं, भावना में वृत्ति को श्रेष्ठ बनाने के लिए व्रत रखते हैं, उन्हों को हर वर्ष रखना पड़ता और आपने क्या व्रत लिया? एक ही बार व्रत लेते हो, वर्ष-वर्ष व्रत नहीं लेते। एक ही बार व्रत लिया पवित्रता का। सभी ने पवित्रता का व्रत लिया है, पक्का लिया है? जिन्होंने पक्का लिया है वह हाथ उठाओ, पक्का, थोड़ा भी कच्चा नहीं। पक्का? अच्छा। दूसरा भी प्रश्न है, अच्छा व्रत तो लिया मुबारक हो। लेकिन अपवित्रता के मुख्य पांच साथी हैं, ठीक है ना! कांध हिलाओ। अच्छा पांचों का व्रत लिया है? या दो तीन का लिया है? क्योंकि जहाँ पवित्रता है वहाँ अगर अंश मात्र भी अपवित्रता है तो क्या सम्पूर्ण पवित्र आत्मा कहा जायेगा? और आप ब्राह्मण आत्माओं की तो पवित्रता ब्राह्मण जन्म की प्रापर्टी है, पर्सनैलिटी है, रॉयल्टी है। तो चेक करो - कि सम्पूर्ण पवित्रता में ऐसे तो नहीं, मुख्य पवित्रता के ऊपर अटेन्शन है लेकिन और

जो साथी हैं, उसको हल्का तो नहीं छोड़ा है? छोटों से प्यार रखा है और बड़े को ठीक किया है। तो क्या बाप की छुट्टी है कि जो और चार हैं। पवित्रता सिर्फ ब्रह्मचर्य को नहीं कहा जाता, ब्रह्माचारी। ब्रह्माचारी बनना अर्थात् पवित्रता का व्रत पालन किया। कई बच्चे रूहरिहान में कहते हैं, रूहरिहान तो सभी करते हैं ना। तो बहुत मीठी-मीठी बातें करते हैं। कहते हैं बाबा मुख्य तो अच्छा है ना, बाकी छोटे-छोटे ऐसे कभी मन्सा संकल्प में आ जाते हैं। मन्सा में आते हैं, वाचा में नहीं आते और मन्सा को तो कोई देखता नहीं है। और कोई फिर कहते हैं कि छोटे छोटे बाल बच्चों से प्यार होता है ना। तो इन चारों से भी प्यार हो जाता है। क्रोध आ जाता है, मोह आ जाता है, चाहते नहीं हैं आ जाता है। बापदादा कहते हैं कोई भी आता है तो आपने दरवाजा खोला है तब आता है ना! तो दरवाजा खोला क्यों है? दरवाजा खोला है कमजोरी का, कमजोरी का दरवाजा खोलना अर्थात् आह्वान करना।

तो आज के दिन बर्थ डे तो बाप का और अपना मना रहे हो लेकिन जो जन्मते व्रत का वायदा किया है। पहला-पहला वरदान बाप ने क्या दिया, याद है? बर्थ डे का वरदान याद है? क्या दिया? **पवित्र भव, योगी भव।** सभी को याद है ना वरदान? याद है भूल तो नहीं गये? पवित्र भव का वरदान एक का नहीं दिया, पांचों का दिया। तो आज बापदादा क्या चाहते हैं? बर्थ डे मनाने आये हो, बाप का भी मनाने आये हो ना। शिवरात्रि मनाने आये हो, तो बर्थ डे की सौगात लाये हो या खाली हाथ आये हैं? 70 वर्ष स्थापना के समाप्त हो रहे हैं। याद है ना! 70 वर्ष सोचो, चाहे आप पीछे आये हो लेकिन स्थापना के तो 70 वर्ष हो गये ना! चाहे अभी आये हो, लेकिन स्थापना के कर्तव्य में आप सभी साथी हो ना! साथी तो हो ना! चाहे आज पहले बारी आये हैं। पहले बारी जो आये हैं वह हाथ उठाओ। जो मधुबन में पहली बार मिलने आये हैं वह हाथ उठाओ। लम्बा हाथ उठाओ। अच्छा आप सभी भी चाहे अभी एक साल हुआ है, दो साल हुआ है लेकिन अपने को क्या कहलाते हो? ब्रह्माकुमारी, ब्रह्माकुमार या पुरुषार्थी कुमार? क्या कहलाते हो? कोई अपने को पुरुषार्थी कुमार कहते है क्या! ब्रह्माकुमार का साइन लगाते हो ना! सभी बी.के. लिखते हो या पी.के. लिखते हो? पुरुषार्थी कुमार। तो वायदा क्या है? साथी रहेंगे, साथ चलेंगे, कम्बाइण्ड रहेंगे, तो कम्बाइण्ड में समानता तो चाहिए ना!

आज के 70 वर्ष का उत्सव तो मनाते आते हो, बापदादा ने देखा है, जो भी ज़ोन टर्न देता है वह 70 वर्ष का मनाते हैं। सम्मान समारोह मनाते हैं। मनाते हैं ना सभी। बस सिर्फ छोटी छोटी गिफ्ट दे देते हैं बस। लेकिन आज एक तो बर्थ डे है, मनाने आये हो ना, पक्का है ना? और दूसरा 70 वर्ष समाप्त हुए, तो सम्मान भी मना रहे हो, बर्थ डे भी मना रहे हो, उसमें सौगात क्या देंगे? ट्रे दे देंगे, चादर दे देंगे? क्या सौगात लाये हो? चलो चांदी का गिलास दे देंगे! लेकिन आज के दिन बापदादा की शुभ आशा है अपने आशाओं के दीपक बच्चों प्रति। तो बतायें, पहली लाइन बताओ बतायें? बताना वा सुनना माना क्या? एक कान से सुनना और दिल में समा देना, ऐसे? निकालेंगे तो नहीं, इतना तो नहीं है लेकिन दिल में ही समा देते हैं। तो आज के दिन, बतायें पहली लाइन बताओ, कांध हिलाओ, टीचर्स कांध हिलाओ। अच्छा झण्डा हिला रहे हैं। डबल फारेनर्स बतायें? अपने को बांधना पड़ेगा, तभी कहो हाँ, ऐसे ही नहीं। क्योंकि 70 वर्ष देखो, 70 वर्ष तो बापदादा ने भी अलबेलेपन, आलस्य और बहाने बाजी, 70 वर्ष खेल देख लिया। चलो 70 नहीं तो 50, 40, 30, 20 लेकिन इतना समय तो यह तीन खेल तो खूब देखे बच्चों के। तो आज के दिन भक्त जागरण करते हैं, सोते नहीं हैं, तो आप बच्चों का जागरण कौन सा है? कौन सी नींद में घड़ी-घड़ी सो

जाते हो, अलबेलापन, आलस्य और बहाने बाजी की नींद में आराम से सो जाते हैं।

तो आज बापदादा इन तीन बातों का हर समय जागरण देखने चाहता है। कभी भी देखो क्रोध आता है, अभिमान आता है, लोभ आता है, कारण क्या बताते हैं? एक बापदादा को ट्रेडमार्क दिखाई देती है, कोई भी बात होती है ना! तो क्या कहते हैं, यह तो चलता है, पता नहीं किसने चलाया है? लेकिन शब्द यही कहते हैं यह तो होता ही है, यह तो चलता ही है। यह कोई नई बात थोड़ेही है, यह होता ही है। यह क्या है? अलबेलापन नहीं है? यह भी तो करता है, मैजॉरिटी क्रोध से बचने के लिए यह किया तब हुआ। मैंने किया रांग वह नहीं कहेंगे। यह किया ना, यह हुआ ना, इसलिए हुआ। दूसरे पर दोष रखना बहुत सहज है। यह ना करे तो नहीं होगा। और बाप ने कहा वह नहीं होगा। वह करे तो होगा, बाप की श्रीमत पर क्या क्रोध को नहीं खत्म कर सकते? आजकल क्रोध का बच्चा रोब, रोब भी भिन्न-भिन्न प्रकार के हैं। तो क्या आज चार का भी व्रत लेंगे? जैसे पहली बात का विशेष दृढ़ संकल्प मैजारिटी ने किया है। क्या ऐसे ही चार का संकल्प, यह बहाना नहीं देना, इसने यह किया तब मेरा हुआ, और बाप जो बार-बार कहता है, वह याद नहीं, उसने जो किया वह याद आ गया, तो यह बहानेबाजी हुई ना! तो आज बापदादा बर्थ डे की गिफ्ट चाहते हैं यह तीन बातें, जो चार को हल्का कर देती हैं। संस्कार का सामना तो करना ही है, संस्कार का सामना नहीं, यह पेपर है। एक जन्म की पढ़ाई और सारे कल्प की प्राप्ति, आधाकल्प राज्य भाग्य, आधाकल्प पूज्य, सारे कल्प की एक जन्म में प्राप्ति, वह भी छोटा जन्म, फुल जन्म नहीं है, छोटा जन्म है। तो क्या हिम्मत है? जो समझते हैं, हिम्मत रखेंगे जरूर, यह नहीं पुरुषार्थ करेंगे, अटेन्शन रखेंगे.. गे गे नहीं चाहिए। छोटे बच्चे नहीं हो, 70 वर्ष पूरे हो रहे हैं। वह तो तीन चार मास के बच्चे गे गे करते हैं। तो आप बाप के साथी हो ना! विश्व कल्याणकारी हो, उसको तो 70 वर्ष पूरे हो रहे हैं। बापदादा हाथ नहीं उठवाते क्योंकि बापदादा ने देखा है हाथ उठाके भी कभी कभी अलबेले हो जाते हैं। लेकिन जो समझते हैं कुछ भी हो जाए, पहाड़ जैसा पेपर भी आ जाए लेकिन पहाड़ को रूई बना देंगे, ऐसा दृढ़ संकल्प करने की, क्योंकि संकल्प बहुत अच्छे करते हो, बापदादा भी खुश हो जाते हैं, जिस समय संकल्प करते हो। लेकिन है क्या, 70 वर्ष तो हल्का छोड़ा लेकिन बापदादा देख रहे हैं कि समय का कोई भरोसा नहीं और इस ज्ञान के आधार पर हर पुरुषार्थ की बात में बहुतकाल का हिसाब है। अच्छा अभी अभी कर लेंगे, बहुतकाल का हिसाब है। क्योंकि प्राप्ति हर एक क्या चाहता है? अभी हाथ उठवाते हैं, राम सीता बनेगा कोई? जो रामसीता बनने चाहते हैं वह हाथ उठाओ, राजाई मिलेगी। कोई हाथ उठा रहे हैं। राम सीता बनेंगे, लक्ष्मी नारायण नहीं बनेंगे? उठा रहे हैं? देखो, आप देखो उठा रहे हैं। फारेनर्स उठा रहे हैं? डबल फारेनर्स में कोई उठाता है? जब बहुतकाल का भाग्य प्राप्त करने चाहते हो, लक्ष्मी नारायण बनना अर्थात् बहुतकाल का राज्य भाग्य प्राप्त करना। तो बहुतकाल की प्राप्ति है। तो हर बात में बहुतकाल तो चाहिए ना! अभी 63 जन्म के बहुतकाल का संस्कार है तो कहते हो ना, हमारा भाव नहीं है, भावना नहीं है, संस्कार है 63 जन्म का। तो बहुतकाल का हिसाब है ना। इसीलिए बापदादा यही चाहते हैं कि संकल्प में दृढ़ता की कमी हो जाती है, हो जायेगा.. चलता है, चलने दो, कौन बना है, और एक तो बहुत अच्छी बात सबको आती है, बापदादा ने नोट किया है बातें, अपनी हिम्मत नहीं चलती ना, तो कहते हैं महारथी भी ऐसे करते हैं, हमने किया तो क्या हुआ? लेकिन बापदादा पूछते हैं कि क्या जिस समय महारथी गलती करता है, उस समय महारथी है? तो महारथी का नाम क्यों खराब करते हो? उस समय वह महारथी है ही नहीं, तो महारथी कहके अपने को कमजोर करना यह अपने को धोखा देना है। दूसरे को देखना सहज

होता है, अपने को देखने में थोड़ी हिम्मत चाहिए। तो आज बापदादा हिसाब लेने आये हैं। लेकिन हिसाब का किताब खत्म कराने की गिफ्ट लेने आये हैं। कमजोरी और बहानेबाजी का हिसाब किताब, बहुत बड़ा किताब है उसको खत्म करना है। तो हर एक जो समझते हैं हम करके दिखायेंगे, करना ही है, झुकना ही है, बदलना ही है, परिवर्तन सेरीमनी मनानी ही है। जो समझते हैं संकल्प करेंगे वह हाथ उठाओ। दृढ़ या चालू? चालू संकल्प भी होता है और दृढ़ संकल्प भी होता है। तो आप सबने दृढ़ उठाया है? दृढ़ उठाया है? मधुबन वाले बड़ा हाथ उठाओ, इतना नहीं। यहाँ मधुबन वाले बैठते हैं। बहुत नजदीक बैठने का चांस हैं। मधुबन वाले तो एकदम सामने बैठे हैं। पहली सीट मधुबन वालों को मिलती है, बापदादा खुश है। पहले बैठे हो, पहले ही रहना।

तो आज की गिफ्ट तो बढ़िया हुई ना। बापदादा को भी खुशी है क्योंकि आप एक नहीं हो। आपके पीछे अपनी राजधानी में आपकी रॉयल फैमिली, आपकी रॉयल प्रजा, फिर द्वापर से आपके भक्त, सतो रजो तमोगुणी, तीन प्रकार के भक्त, लम्बी लाइन है आपके पीछे। जो आप करेंगे वह आपके पीछे वाले करते हैं। आप बहानेबाजी देते हो तो आपके भक्त भी बहुत बहानेबाजी करते हैं। अभी ब्राह्मण परिवार भी आपको देख उल्टी कापी करने में तो होशियार होते हैं ना। तो अभी दृढ़ संकल्प करो, संस्कार का टक्कर हो, स्वभाव का मतभेद हो, तीसरी बात कमजोरों की होती है, कोई ने किसी के ऊपर झूठी बात कह दी, तो कई बच्चे कहते हैं हमको ज्यादा क्रोध आता है, झूठ पर। लेकिन सच्चे बाप से वेरीफाय कराया, सच्चा बाप आपके साथ है, तो सारी झूठी दुनिया एक तरफ हो और एक बाप आपके साथ है, विजय आपकी निश्चित हुई पड़ी है। कोई आपको हिला नहीं सकता, क्योंकि बाप आपके साथ है। कह रहे हैं, झूठ है। तो झूठ को झूठा ही कर दो ना, बढ़ाते क्यों हो! तो आज बाप को बहानेबाजी अच्छी नहीं लगती, यह हुआ, यह हुआ, यह हुआ... यह यह का गीत समाप्त होना चाहिए। अच्छा हुआ, अच्छा होगा, अच्छा रहेंगे, अच्छा सबको बनायेंगे। अच्छा अच्छा अच्छा का गीत गाओ। तो पसन्द है? पसन्द है? बहानेबाजी को खत्म करेंगे? करेंगे? दो-दो हाथ उठाओ। दो-दो हाथ उठाओ। अच्छा। हाँ अच्छी तरह से हिलाओ। अच्छा, देखने वाले भी हाथ हिला रहे हैं। कहाँ भी देख रहे हैं, हाथ हिलाओ। आप तो हिला रहे हो। अच्छा अभी नीचे करो, अभी अपने परिवर्तन की ताली बजाओ। अच्छा

यह दिन, यह समय, संगठन का चित्र सदा अपने सामने रखना। कभी भी कमजोरी आ जाए, आने नहीं देना, गेट बन्द। गेट तो पता है ना! बन्द करो। डबल बन्द करो, डबल ताला लगाना, आजकल सिंगल ताला नहीं चलता। एक याद का, एक मन को सेवा में बिजी रखने का। यह दो आलमाइटी ताले लगा देना। गाडरेज का नहीं गॉड का। पक्का जागरण करना, पक्का व्रत रखना।

बापदादा को हर बच्चे से अति प्यार है। चाहे लास्ट नम्बर भी हो फिर भी बापदादा का उस बच्चे पर भी अति प्यार है। क्यों? ऐसे बच्चे कोई बाप को मिलने हैं? एक ही बापदादा है, जिसको ब्राह्मण बच्चे मिलते हैं। कोई भी महात्मा हो, महामण्डेश्वर हो, धर्मपिता हो, कोई को भी ऐसे बच्चे मिले हैं? जो हर बच्चा कहे मेरा बाबा। है कोई, हिस्ट्री में है? इसीलिए बापदादा हर बच्चे के महत्व को जानते हैं। बच्चे कहते हैं हम गीत गाते हैं वाह बाबा वाह! बाप कहते हैं आपसे भी 100 गुणा ज्यादा बाप गीत गाता है, वाह बच्चे वाह! ठीक है ना! वाह वाह हो ना! मधुबन वाले वाह वाह बच्चे हो ना! पीछे वाले वाह वाह बच्चे हो ना! अच्छा।

भोपाल ज़ोन की सेवा का टर्न है:- हाँ झण्डा हिलाओ तो पता पड़े। अच्छा है, भोपाल भी मध्यप्रदेश में है और मध्यप्रदेश बहुत बड़ा है। सेवा तो की है, शुरू-शुरू में अच्छे-अच्छे गवर्नर और वी.आई.पी.

लाये हैं लेकिन अभी इतना कोई नहीं लाया है। लाये हैं, लेकिन ऐसे गवर्नर या कोई विशेष नहीं लाये हैं। तो भोपाल को विशेष बापदादा, टीचर्स सुनना ध्यान से, दो सेवायें देना चाहते हैं। बतायें कौन सी ? एक तो कोई ऐसा वी.आई.पी लायें जैसे अभी अभी एक्जैम्पुल देखा राजस्थान की गवर्नर आई और दैवी फैमिली है, यह अनुभव अच्छा करके गई। और साथ-साथ जिम्मेवारी भी सेवा की उठाके गई। सिर्फ अच्छा है, अच्छा है, बहुत अच्छा काम कर रहे हैं, नहीं। अपने ऊपर जिम्मेवारी उठाके गई। ऐसे कोई विशेष वी.आई.पी मध्य प्रदेश में हैं, बापदादा जानते हैं, छिपे हुए हैं, सिर्फ उसको मैदान पर लाना है। और दूसरा जो भी बड़े-बड़े सेवाकेन्द्र हैं, जिसको आप बड़े कहते हो वह लिस्ट देना। तो हर एक बड़े सेन्टर जिसके अन्डर छोटे उपसेवाकेन्द्र गीता पाठशालायें बहुत-बहुत हैं। क्योंकि गीता पाठशालाओं की लिस्ट बापदादा पूछते हैं तो बहुत-बहुत गीता पाठशालायें भी हैं। उन बड़े सेन्टरों को कम से कम एक साल के अन्दर, बहुत टाइम दे रहे हैं, इतना देना नहीं चाहिए। लेकिन एक साल के अन्दर कम से कम बड़े सेन्टर को अपना एक वारिस क्वालिटी सामने लाना है। चाहे अभी हो भी, लेकिन यज्ञ के अन्दर वह वारिस क्वालिटी प्रसिद्ध हो। ऐसे नहीं हैं तो बहुत। कई सेन्टर कहते हैं हमारे पास वारिस हैं, लेकिन वारिस छिप नहीं सकते। वारिस की क्वालिटी होगी तो वह छिप नहीं सकता। बापदादा गुप्त वारिस को नहीं मानता है। उसका कनेक्शन उसका रिलेशन कायदे प्रमाण होना ही चाहिए। ऐसा वारिस हरेक बड़ा सेन्टर सामने लाये। ला सकते हैं ना बड़े सेन्टर्स ? इसमें नहीं कहना हम तो छोटे हैं। छोटे नहीं बनना। छोटे भी बड़े बनना। ठीक है टीचर्स ? ठीक बोला। हाथ उठाओ जो समझते हैं छोटे भी बड़े बनकर दिखायेंगे, वह झण्डा हिलाओ। दिल से हिला रहे हो ना! तो यह दो कार्य भोपाल को करना है, ठीक है। भोपाल वाले, आपमें से ही तो कोई वारिस बनेंगे ना। तो देखेंगे, वैसे तो 6 मास में तैयार होना चाहिए लेकिन फिर भी बापदादा एक वर्ष की छुट्टी देते हैं। ठीक है। बाकी सेवा का यह गोल्डन चांस लेते हो, यह अच्छा है। बापदादा सदा ही सुनाते हैं, कि बहुत स्व उन्नति के लिए अच्छा चांस है क्योंकि सेवा की जिम्मेवारी भी अलग नहीं है, यज्ञ सेवा की जिम्मेवारी है। वहाँ तो फिर भी समय और अटेन्शन देना पड़ता है यहाँ तो एक ही अटेन्शन है स्व उन्नति या यज्ञ सेवा। यज्ञ सेवा का पुण्य अगर हर समय जमा करो तो आपके पुण्य का खाता बहुत बहुत जल्दी बढ़ सकता है। तो अच्छा किया है, संख्या भी अच्छी लाये हैं। चांस अच्छा लिया है। अभी आगे की रिजल्ट देखेंगे। अच्छा।

60 देशों के 700 डबल विदेशी आये हैं:- बापदादा को डबल विदेशियों को देख एक बात की विशेष खुशी होती है, एकस्ट्रा खुशी होती है। वह इस बात की कि शुरू शुरू में जब डबल फारेनर्स आये थे, टीचर्स को याद होगा तो भिन्न-भिन्न कल्चर से ट्रांसफर होने में बड़ी मेहनत लगती थी लेकिन अभी बापदादा ने देखा है कि इसकी चर्चा इतनी नहीं होती है, क्यों कारण क्या है ? क्योंकि एक दो के संगठन को देख वृद्धि अच्छी हुई है ना! और बापदादा ने सुना भी है कि मैजॉरिटी अपने अपने आसपास सन्देश देने का कोई न कोई साधन अपनाते हैं, सन्देश देने का उमंग अच्छा है। तो उसकी रिजल्ट में देखा गया है कि हर टर्न में विदेशियों का ग्रुप कम नहीं होता है। क्वालिटी भी अच्छी है और क्वान्टिटी भी बढ़ती जाती है इसलिए एक चंदन का वृक्ष बन गये हैं। तो चंदन का वृक्ष देख बापदादा खुश होते हैं। समाचार तो बापदादा के पास पहुंच ही जाता है। चाहे आप ईमेल में भेजते हो, तो बापदादा के पास तो कापी पहले आती है। सेवा का उमंग अच्छा है। अभी सिर्फ आज का व्रत पक्का करना है। नम्बर लेंगे ना विदेशी ? नम्बर लेना है ? कौन सा नम्बर ? पहला कि दूसरा भी चलेगा ? (पहला) जिसका एक बाप से प्यार है वह एक समान एक ही नम्बर बनेंगे। जो

स्लोगन है एक बाप ही संसार है, जब है ही एक संसार तो नम्बर एक हुआ ना। जैसे आपका टाइटल है डबल फारेनर्स। तो पुरुषार्थ में संकल्प के दृढ़ता में भी डबल फोर्स का पुरुषार्थ करके दिखाओ। अटेन्शन रखते हैं, सिर्फ अन्तर क्या हो जाता है? तीव्रता की दृढ़ता कम हो जाती है, प्रोग्राम बहुत अच्छा बनाते हो, बापदादा भी टापिक सुनते हैं, ग्रुप ग्रुप के पुरुषार्थ के विषय देखकर बहुत खुश होते हैं लेकिन क्या है, जब टापिक शुरू करते या लक्ष्य रखते हो वह बहुत फोर्स का रखते हो फिर कुछ न कुछ पेपर तो आता ही है, और आना ही है बिना पेपर कोई पास नहीं होता। उसमें दृढ़ता की कमी हो जाती है और साधारण पुरूषार्थ हो जाता है। सदा दृढ़ता रहे इसकी कमी हो जाती है। तो सबमें डबल पुरुषार्थी। करके ही दिखायेंगे, बनके ही दिखायेंगे। ठीक है ना। इतना उमंग-उत्साह है ना! है? है, सिर्फ दृढ़ता को चेक करो, बातों में नहीं जाओ। दृढ़ता को देखो। अच्छा।

डबल विदेशी कुमारियों का ग्रुप:- अच्छा यह बैनर बनाया है। हाथ हिलाओ। यह अच्छा करते हो क्योंकि मधुबन के वायुमण्डल का भी प्रभाव पड़ता है। दादियों का भी प्यार और वृत्तियों के वायुमण्डल का साथ होता है तो यह जो स्पेशल टापिक रखते हो और आपस में रूहरिहान करते हो तो इसमें समझते हो कि स्पेशल मदद मिलती है। मिलती है मदद? अच्छा, यह नशा कितना समय रहता है? 6-8 मास रहता है कि सदा रहता है? इसको रिवाइज करो, अन्दर में रिवाइज करो और रियलाइज़ करो, जो भी ज्ञान की बातें हैं ना, उसको रिवाइज भी करो और रियलाइज भी करो, एक एक प्वाइंट जो शिक्षा की मिलती है, या नशे की खुशी की मिलती है उसको रियलाइज करो। अपने आपसे रियलाइज करो, कि हर बात अनुभव में है? अनुभव किया है या सिर्फ नॉलेज के आधार से सोचते हैं, सुनते हैं, वर्णन करते हैं? बापदादा ने टोटल देखा है चाहे देश में, चाहे विदेश में हर प्वाइंट के अनुभव में डीप में जाना यह थोड़ा अटेन्शन कम है। सुनने और सुनाने में अटेन्शन अच्छा है, उसमें नम्बरवन हैं, लेकिन अनुभवी मूर्त बनना, चलते फिरते आत्मा का अनुभव होना, बाप के कम्बाइण्ड रूप का अनुभव होना, अनुभव में कमी है? इसलिए रियलाइज़ करो, तो रीयल गोल्ड बन जायेंगे। बाकी बापदादा खुश है, अटेन्शन भी टीचर्स देती हैं, आपकी दादी (जानकी दादी) बहुत अटेन्शन देती है। इतना ही अटेन्शन, जितना यह आपके ऊपर देती है और उम्मीदें रखती है, उतना हर एक अपने ऊपर जो बाप की उम्मीदें हैं, वह अटेन्शन रखें तो नम्बरवन तो हुए ही पड़े हो। अपनी कमी को रियलाइज़ करते भी हो लेकिन परिवर्तन करने में कमी पड़ जाती है। उसमें बापदादा ने देखा है एक दृढ़ता की कमी है और दूसरी मन को एकाग्र करने की विशेषता जिस घड़ी चाहे उस घड़ी मन एकाग्र हो जाए, जहाँ चाहो वहाँ हो जाए, इसकी कमी है। इसके ऊपर अटेन्शन देंगे, चाहे भारत वाले चाहे फारेनर्स। दृढ़ता और एकाग्रता, अभी तक वेस्ट है, एकॉनामी नहीं है। संकल्प, वाणी, सम्बन्ध-सम्पर्क में भी, हर संस्कार स्वभाव में भी एकॉनामी से खर्च करो। एकॉनामी भी जरूरी है। यज्ञ की एकॉनामी, जितनी संकल्पों की एकॉनामी होगी उतनी यज्ञ की एकॉनामी के बिना रह नहीं सकेंगे। यज्ञ की एकॉनामी का नहीं आता, संस्कार इमर्ज नहीं होता, इससे समझो, समय, संकल्प खजाने के एकानामी की आदत नहीं है इसलिए यज्ञ एकानामी का संस्कार इमर्ज नहीं होता। तो दृढ़ता, एकाग्रता और एकॉनामी। ठीक है। बाकी बापदादा खुश है, सेवा के प्लैन में भी खुश है। अच्छी सेवा कर रही है ना। यह सामने गायत्री बैठी है ना। सेवा का उमंग बहुत है ना।

इन्टरनेशनल मदर ग्रुप:- चित्र बहुत अच्छा बना लेते हैं, यह इन्हों की विशेषता है। अच्छा बनाते हैं। देखो इतनी मदर्स अगर एक एक मदर जगतमाता बन जाए, वृत्ति से हर समय, हर संकल्प में हर माता जगत माता के स्वरूप में स्थित हो जाए तो कितने वायब्रेशन वर्ल्ड में मिलेंगे। क्योंकि माँ

की भावना जल्दी पहुंचती है। तो जितनी भी मदर्स खड़ी हुई हैं, हर समय अपने जगत के बच्चों को, भाईयों को वायब्रेशन देती रहो। जैसे माँ प्यार से बच्चे की पालना करती, ऐसे आप सभी को बच्चे समझके पालना करो। वायब्रेशन फैलाओ। ठीक है। अभी देखेंगे, सारे दिन में हर माता ने जगतमाता बन वायब्रेशन फैलाये! इसमें स्व-उन्नति ऑटोमेटिक है, यह करके दिखाना। अच्छी हैं मातायें, बापदादा की नज़र में हैं, और हिम्मत वाली हैं, कर सकती हैं। तो आगे बढ़ते रहना। अच्छा।

रसिया वालों ने प्रोजेक्ट बनाया है, जिसमें 50 हजार किलोमीटर का सफर तय करके 150 शहरों की सेवा करेंगे:-

अच्छा है, बापदादा ने बच्ची द्वारा भी समाचार सुना था और बापदादा को एक बात यह भी अच्छी लगी, जो बापदादा ने कहा था तो ओ.के. में रिजल्ट भेजना, वह भी अच्छी तरह से भेजी थी, तो मुबारक हो। और यह भी प्लैन सुना था, अच्छा उमंग-उत्साह से बनाया है और विधि भी जो बनाई है वह सहज हो जायेगी। तो उमंग-उत्साह में सफलता समाई हुई है। हैण्डस भी अच्छे हैं। संख्या भी अच्छी है। तो बापदादा को पसन्द है। और सबकी शुभ भावना, अभी सभी सुन रहे हैं तो सभी की शुभ भावना भी आपके इस प्रोग्राम के साथ है, मुबारक हो।

मोहनी बहन ने सुनाया - बाम्बे से दादी जी ने और साथ में सभी सेवा साथियों ने बहुत-बहुत याद भेजी है:- दादी तो सबके दिल की प्यारी दादी है। सभी दिल से अपने प्यार की बहुत शुभ लहरें भेज रहे हैं। और बापदादा ने सुनाया था, कि चाहे दादी के लिए कहेंगे ऐसे कि पेशेन्ट है, लेकिन वह प्रैक्टिकल में डाक्टर्स भी आश्चर्य खाते हैं, कि यह पेशेन्ट नहीं है लेकिन पेशन्स में रहने वाली, पेशेन्ट होते भी पेशन्स का स्वरूप क्या होता है, वह दिखा रही है। आपको लगेगा दादी को कुछ हो रहा है, लेकिन दादी से पूछेंगे, तो कहेगी कुछ नहीं है। तो यह पेशेन्ट नहीं है, पेशन्स स्वरूप दिखा रही है। बीमारी भी है लेकिन न्यारी और प्यारी है। बीमारी चल रही है लेकिन वह अपनी मस्ती में है। यह शरीर प्युअरीफाय हो रहा है। अपनी लास्ट स्टेज, भविष्य और भक्ति की स्टेज बन रही है। अभी है जीवन में होते मुक्त और लास्ट समय में है अष्ट देवता प्रसिद्ध होना और भक्ति में है इष्ट देव बनना। तीनों ही संस्कार का पार्ट बजा रही है। बाकी जो भी सेवाधारी सेवा करते हैं, वह भी दिल से कर रहे हैं, लेकिन सिर्फ उन्हों के लिए नहीं है, वह तो दिन रात अपने दिल से कर रहे हैं लेकिन सारे ब्राह्मण परिवार में भी कोई वेस्ट थाट्स नहीं चलाओ। दादी आपकी है, आपकी ही रहेगी। बापदादा ने देखा है जब ब्रह्मा बाप अव्यक्त हुए और दादी को दृष्टि दी उस दृष्टि की विल पावर से बहुत सर्व स्नेही, सर्व समर्थ, सर्व कार्यकर्ता निमित्त और निर्माण इसमें ब्रह्मा बाप को पूरा-पूरा फॉलो करते हुए सारे ब्राह्मण परिवार में शक्ति भरी और बापदादा के अपनी दादियों के साथ-साथ रहके बहुत अच्छा पार्ट बजाया, अभी भी सूक्ष्म में आपके साथ पार्ट बजा रही है। बापदादा भी दादी की कमाल गाते हैं। सबको संगठन के बंधन में, स्नेह और सहयोग के आधार से बांधा और यह अमर वरदान है। सबका प्यार अच्छा है, यह देख करके भी बापदादा को खुशी है।

बाकी बापदादा देख रहे हैं - जो भी सभी ने कार्ड भेजे हैं, पत्र भेजे हैं, ग्रीटिंग्स भेजे हैं, वह बापदादा ने स्वीकार की और रिटर्न में एक एक को नाम और विशेषता सहित यादप्यार और दुआयें दे रहे हैं। जिन्होंने कार्ड और पत्र द्वारा नहीं लेकिन दिल से, संकल्प से भी अपना उमंग-उत्साह भेजा है, उन सभी बच्चों को बहुत-बहुत पदमगुणा यादप्यार और बाप के दिल की दुआयें।

बाकी आप सभी सम्मुख बैठे हो, सम्मुख का मजा अपना ही है। साइंस के साधनों द्वारा चाहे कितना भी स्पष्ट हो, कितना भी अच्छा लगता हो, लेकिन सम्मुख मधुबन में उन्नति का द्वार अपना

ही अनुभव कराता है। अच्छा अभी जो बापदादा ने कहा वह हरेक एक मिनट के लिए दृढ़ संकल्प स्वरूप में बैठो कि बहानेबाजी, आलस्य, अलबेलापन को हर समय दृढ़ संकल्प द्वारा समाप्त कर बहुतकाल का हिसाब जमा करना ही है। कुछ भी हो, कुछ नहीं देखना है लेकिन बाप के दिलतख्तनशीन बनना ही है, विश्व के तख्तनशीन बनना ही है। इस दृढ़ संकल्प स्वरूप में सभी बैठो। अच्छा।

चारों ओर के सदा उमंग-उत्साह के अनुभव में रहने वाले, सदा दृढ़ता सफलता की चाबी को कार्य में लगाने वाले, सदा बाप के साथ और हर कार्य में साथी बन रहने वाले, सदा एकनामी और एकॉनामी, एकाग्रता स्वरूप में आगे से आगे उड़ते रहने वाले, बापदादा के अति लाडले, सिकीलधे, विशेष बच्चों को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

दादियों से:- अभी दादियां भी सिकीलधी हो गई हैं। गिनती में आ गई हैं। सिकीलधी हो गई हैं ना। बस गीत गाते रहो इतना प्यार करेगा कौन! बाप कहता है इतना करते हैं बच्चे, बच्चे नहीं होते तो बाप क्या करता। बच्चे नहीं होते तो बाप कौन कहता! (जानकी दादी ने कहा, बाबा संसार तो है लेकिन संस्कार में आ जाए, बाबा यह करो ना) लेकिन बाप करेगा तो पायेगा कौन? यह भी बाप करे तो बाप को तो फल पाना नहीं है। सहयोग देना यह बाप का कर्तव्य है, टांग भी लगा दे, पांव भी लगा दे, लेकिन चलना तो खुद को पड़ेगा ना। अच्छा। बहुत अच्छा।

तीनों बड़े भाईयों से:- शिवरात्रि का यादगार बाप और बच्चों के इकट्ठे जन्म का यादगार है, तो संगठन की शक्ति, बाप ने भी अकेला कुछ नहीं किया, बच्चों के साथ हर कार्य किया, तो संगठन की शक्ति, उसको फिर से प्रैक्टिकल स्टेज पर लाना चाहिए। एक ने कहा और दूसरे ने किया। एक दो की बातों को न देख संगठन को मिलाना, यही आवश्यक है। आप निमित्त आत्माओं का यह काम है। संगठन को स्टेज पर प्रत्यक्ष करना। यही आवश्यकता है। ठीक है ना!

भोली दादी ने 9 फरवरी को शरीर छोड़ दिया: भोली से भी सबका प्यार था। चाहे कैसी भी तबियत रही लेकिन भण्डारा नहीं छोड़ा, जो ब्रह्मा बाप ने भण्डारे में बिठाया तो अन्त तक भण्डारा नहीं छोड़ा। यह भी कर्मणा की विशेष देवी रही। इसलिए सभी का आन्तरिक प्यार अच्छा रहा। (अभी मीरा भी अच्छा करेगी) हाँ क्यों नहीं करेगी, जरूर करेगी। पालना तो अच्छी ली है। अच्छा।

बापदादा ने डायमण्ड हाल की स्टेज पर अपने हस्तों से शिवध्वज फहराया और सबको बधाईयां दी:

सभी ने बहुत-बहुत प्यार से बाप का बर्थ डे और अपना बर्थ डे मनाया, इसकी पदम पदम पदमगुणा मुबारक हो, बधाई हो। जैसे यह चिन्ह रूप का झण्डा लहराया और फूल बरसाये ऐसे ही हर एक आत्मा के दिल में बाप की याद का झण्डा, स्मृति का झण्डा लहराओ। आपके दिल में तो है ही लेकिन अभी सर्व के दिलों में बाप का झण्डा अर्थात् याद का झण्डा लहराओ तो सारा विश्व फूलों का बगीचा बन जायेगा। कांटों का जंगल खत्म हो फूलों का बगीचा बन जायेगा। ऐसा संकल्प सदा दिल में इमर्ज करो, करना ही है, होना ही है, हुआ ही पड़ा है, सिर्फ निमित्त बनना है। अच्छा।

''परमात्म संग में, ज्ञान का गुलाल, गुण और शक्तियों का रंग लगाना ही सच्ची होली मनाना है''

आज बापदादा अपने लकीएस्ट और होलीएस्ट बच्चों से होली मनाने आये हैं। दुनिया वाले तो कोई भी उत्सव सिर्फ मनाते हैं लेकिन आप बच्चे सिर्फ मनाते नहीं, मनाना अर्थात् बनना। तो आप होली अर्थात् पवित्र आत्मायें बन गये। आप सभी कौन सी आत्मायें हो? होली अर्थात् महान पवित्र आत्मायें। दुनिया वाले तो शरीर को स्थूल रंग से रंगते हैं लेकिन आप आत्माओं ने आत्मा को कौन से रंग में रंगा है? सबसे अच्छे ते अच्छा रंग कौनसा है? अविनाशी रंग कौनसा है? आप जानते हो, आप सबने परमात्म संग का रंग आत्मा को लगाया जिससे आत्मा पवित्रता के रंग में रंग गई। यह परमात्म संग का रंग कितना महान और सहज है इसलिए परमात्म संग का महत्व अभी अन्त में भी सतसंग का महत्व होता है। सतसंग का अर्थ ही है परमात्म संग, जो सबसे सहज है। संग में रहना और ऊंचे ते ऊंचे संग में रहना क्या मुश्किल है क्या? और इस संग के रंग में रहने से जैसे परमात्मा ऊंचे ते ऊंचा है वैसे आप बच्चे भी ऊंचे ते ऊंचे पवित्र महान आत्मायें पूज्य आत्मायें बन गई। यह अविनाशी संग का रंग प्यारा लगता है ना! दुनिया वाले कितना प्रयत्न करते हैं परम आत्मा का संग तो छोड़ो सिर्फ याद करने में भी कितनी मेहनत करते हैं। लेकिन आप आत्माओं ने बाप को जाना, दिल से कहा मेरा बाबा। बाप ने कहा ''मेरे बच्चे'' और रंग लग गया। बाप ने कौन सा रंग लगाया? ज्ञान का गुलाल लगाया, गुणों का रंग लगाया, शक्तियों का रंग लगाया, जिस रंग से आप तो देवता बन गये लेकिन अब कलियुग अन्त तक भी आपके पवित्र चित्र देव आत्माओं के रुप में पूजे जाते हैं। पवित्र आत्मायें बहुत बनते हैं, महान आत्मायें बहुत बनते हैं, धर्म आत्मायें बहुत बनते हैं लेकिन आपकी पवित्रता देव आत्माओं के रूप में आत्मा भी पवित्र बनती और आत्मा के साथ शरीर भी पवित्र बनता है। इतनी श्रेष्ठ पवित्रता बनी कैसे? सिर्फ संग के रंग से। आप सभी फलक से कहते हो, अगर कोई आप बच्चों से पूछे, परमात्मा कहाँ रहता है? परमधाम में तो है ही लेकिन अभी संगम में परमात्मा आपके साथ कहाँ रहता है? आप क्या जवाब देंगे? परमात्मा को अभी हम पवित्र आत्माओं का दिलतख्त ही अच्छा लगता है। ऐसे है ना? आपके दिल में बाप रहता, आप बाप के दिल में रहते। रहते हैं? हाथ उठाओ जो रहता है? रहते हैं? अच्छा। बहुत अच्छा। फलक से कहते हो परमात्मा को मेरे दिल के सिवाए और कहाँ अच्छा नहीं लगता है क्योंकि कम्बाइण्ड रहते हो ना! कम्बाइण्ड रहते हो ना! कई बच्चे कम्बाइण्ड कहते हुए भी सदा बाप की कम्पनी का लाभ नहीं लेते हैं। कम्पैनियन तो बना लिया है, पक्का है। मेरा बाबा कहा तो कम्पैनियन तो बना लिया लेकिन हर समय कम्पनी का अनुभव करना, इसमें अन्तर पड़ जाता है। इसमें बापदादा देखते हैं नम्बरवार फायदा उठाते हैं। कारण क्या होता, आप सभी अच्छी तरह से जानते हो।

बापदादा ने पहले भी सुनाया है अगर दिल में रावण की कोई पुरानी जायदाद, पुराने संस्कार के रूप में रह गये है तो रावण की चीज़ पराई चीज़ हो गई ना! पराई चीज़ को कभी भी अपने पास रखा नहीं जाता है। निकाल दिया जाता है। लेकिन बापदादा ने देखा है, रूहरिहान में सुनते भी हैं कि क्या कहते बच्चे, बाबा मैं क्या करूं, मेरे संस्कार ही ऐसे हैं। क्या यह आपके हैं, जो कहते हो मेरे संस्कार? यह कहना राइट है कि मेरे पुराने संस्कार हैं, मेरी नेचर है, राइट है? राइट है? जो समझते हैं राइट है वह हाथ उठाओ। कोई नहीं उठाता। तो कहते क्यों हो? गलती से कह देते हो? जब मरजीवा बन गये, आपका अभी सरनेम क्या है? पुराने जन्म का सरनेम है वा बी.के. का सरनेम है। क्या अपना लिखते हो? बी.के. या फलाना, फलाना..? जब मरजीवा बन गये तो पुराने संस्कार मेरे संस्कार कैसे हुए? यह पुराने तो पराये संस्कार हुए। मेरे तो नहीं हुए ना! तो इस होली में कुछ तो जलायेंगे ना! होली जलाते भी हैं और रंग लगाते भी हैं तो आप सभी इस होली पर क्या जलायेंगे? मेरे संस्कार, यह अपने ब्राह्मण जीवन की डिक्शनरी से समाप्त करना। जीवन भी एक डिक्शनरी है ना! तो अभी कभी स्वप्न में भी यह नहीं सोचना, संकल्प की तो बात ही छोड़ो लेकिन पुराने संस्कार को मेरे संस्कार मानना, यह स्वप्न में भी नहीं सोचना। अब तो जो बाप के संस्कार वह आपके संस्कार, सभी कहते हो ना हमारा लक्ष्य है बाप समान बनना। तो सभी ने अपने दिल

में यह दृढ़ संकल्प का अपने से प्रतिज्ञा की? गलती से भी मेरा नहीं कहना। मेरा मेरा कहते हो ना, तो जो पुराने संस्कार हैं ना वह फायदा उठाते हैं। जब मेरा कहते हैं तो वह बैठ जाते हैं, निकलते नहीं हैं।

बापदादा सभी बच्चों को किस रूप में देखना चाहते हैं? जानते तो हो, मानते भी हो। बापदादा हर एक बच्चे को भ्रकुटी के तख्तनशीन, स्वराज्य अधिकारी राजा बच्चा, अधीन बच्चा नहीं, राजा बच्चा, कन्ट्रोलिंग पावर, रूलिंग पावर, मास्टर सर्वशक्तिवान स्वरूप में देख रहे हैं। आप अपना कौन सा रूप देखते? यही ना, राज्य अधिकारी हो ना! अधीन तो नहीं हैं ना? अधीन आत्माओं को आप सभी अधिकारी बनाने वाले हो। आत्माओं के ऊपर रहमदिल बन अधीन से उन्हों को भी अधिकारी बनाने वाले हो। तो आप सभी भी होली मनाने आये हो ना?

बापदादा को भी खुशी है कि सभी स्नेह के विमान द्वारा, सभी के पास विमान है ना! है विमान? बापदादा ने हर ब्राह्मण को जन्मते ही गिफ्ट दी मन के विमान की। तो मन का विमान है सभी के पास? अच्छा हाथ उठा रहे हैं। ठीक है? पेट्रोल ठीक है? पंख ठीक हैं? स्टार्ट करने का आधार ठीक है? चेक करते हो? ऐसा विमान जो तीनों लोकों में सेकण्ड में जा सकता है। अगर हिम्मत और उमंग उत्साह के दोनों पंख यथार्थ हैं तो एक सेकण्ड में स्टार्ट हो सकता है। स्टार्ट करने की चाबी क्या है? मेरा बाबा। मेरा बाबा कहो तो मन जहाँ पहुंचना चाहे वहाँ पहुंच सकता है। दोनों पंख ठीक होने चाहिए। हिम्मत कभी नहीं छोड़नी है। क्यों? बापदादा का वायदा है, वरदान है, एक कदम हिम्मत का आपका और हजार कदम मदद बाप की। चाहे कैसा भी कड़ा संस्कार हो, हिम्मत कभी नहीं हारो। कारण? सर्वशक्तिवान बाप मददगार है और कम्बाइण्ड है, सदा हाज़िर है। आप हिम्मत से सर्वशक्तिवान कम्बाइण्ड बाप के ऊपर अधिकार रखो और दृढ़ रहो, होना ही है, बाप मेरा, मैं बाप की हूँ, यह हिम्मत नहीं भूलो। तो क्या होगा? जो कैसे करूं, यह संकल्प उठता है वह कैसे शब्द बदल ऐसे हो जायेगा। कैसे करूं, क्या करूं, नहीं। ऐसे हुआ ही पड़ा है। सोचते हो, करते तो हैं, होगा, होना तो चाहिए, बाप मदद तो देगा...। हुआ ही पड़ा है, बाप बंधा हुआ है, दृढ़ निश्चयबुद्धि वाले को मदद देने के लिए। सिर्फ रूप थोड़ा चेंज कर देते हो, हक रखते हो बाप के ऊपर, लेकिन रूप चेंज कर देते हो। बाबा आप तो मदद करेंगे ना! आप तो बंधे हुए हो ना! तो ना लगा देते हो। निश्चयबुद्धि, निश्चित विजय हुई पड़ी है क्योंकि बापदादा ने हर बच्चे को जन्मते ही विजय का तिलक मस्तक में लगाया है। दृढ़ता को अपने तीव्र पुरुषार्थ की चाबी बनाओ। प्लैन बहुत अच्छे बनाते हो। बापदादा जब रूहरिहान सुनते हैं, रूहरिहान बहुत हिम्मत की करते हो, प्लैन भी बड़े पावरफुल बनाते हो लेकिन प्लैन को जब प्रैक्टिकल में करते हो तो प्लेन बुद्धि होके नहीं करते हो। उसमें थोड़ा सा करते तो हैं, होना तो चाहिए...यह स्वयं में निश्चय के साथ संकल्प नहीं, लेकिन वेस्ट संकल्प मिक्स कर देते हो।

अभी समय के प्रमाण प्लेन बुद्धि बन संकल्प को साकार रूप में लाओ। ज़रा भी कमजोर संकल्प इमर्ज नहीं करो। स्मृति रखो कि अभी एक बार नहीं कर रहे हैं, अनेक बार किया हुआ सिर्फ रिपीट कर रहे हैं। याद करो कितनी बार कल्प-कल्प विजयी बने हैं! अनेक बार के विजयी हैं, विजय अनेक कल्प का जन्म सिद्ध अधिकार है। इस अधिकार से निश्चयबुद्धि बन दृढ़ता की चाबी लगाओ, विजय आप ब्राह्मण आत्माओं के बिना कहाँ जायेगी! आप ब्राह्मणों का विजय जन्म सिद्ध अधिकार है, गले की माला है। है ना नशा? नशा है? होगा, नहीं होगा, नहीं। हुआ ही पड़ा है। इतने निश्चयबुद्धि बन हर कार्य करो, विजय निश्चित है ही। ऐसे निश्चयबुद्धि आत्मायें, है ही, यह नहीं बापदादा कहते है या नहीं, है ही। यही नशा रखो। थे, हैं और होंगे। तो ऐसे होली हो ना! होलीएस्ट तो हो। तो बापदादा के ज्ञान के गुलाल की होली तो खेल ली, अभी और क्या खेलेंगे?

बापदादा ने देखा कि सभी को मैजॉरिटी उमंग-उत्साह बहुत अच्छा आता है, यह कर लेंगे, यह कर लेंगे, यह हो जायेगा। बापदादा भी बड़े खुश होते हैं लेकिन यह उमंग-उत्साह सदा इमर्ज रहे, कभी-कभी मर्ज हो जाता है, कभी इमर्ज हो जाता है। मर्ज नहीं हो जाए, इमर्ज ही रहे क्योंकि आपका उत्सव पूरा संगमयुग ही उत्सव है। वह तो कभी-कभी उत्सव इसीलिए मनाते हैं, क्योंकि बहुत समय टेन्शन में रहते हैं ना, तो समझते हैं उत्साह में नाचें, गायें, खायें, तो चेंज हो जाए। लेकिन आप लोगों के पास तो नाचना और गाना है ही, हर सेकण्ड। आप सदा मन में खुशी से नाचते रहते हो ना! कि नहीं! नाचते हैं, नाचना आता है खुशी में? नाचना आता है! जिसको आता है वह हाथ

उठाओ। नाचना आता है, अच्छा, मुबारक हो, आता है तो। तो सदा नाचते रहते हो या कभी कभी?

बापदादा ने इस वर्ष का होमवर्क दिया था, दो शब्द कभी नहीं सोचना, समटाइम, समथिंग। वह किया है? कि अभी भी समटाइम है? समटाइम, समथिंग खत्म। इस नाचने में थकने की तो कोई बात ही नहीं है। चाहे लेटे रहे, चाहे काम करो, चाहे पैदल करो, चाहे बैठो, खुशी का डांस तो कर ही सकते हो और बाप के प्राप्तियों का गीत भी गा सकते हो। गीत भी आता है ना, यह गीत तो सभी को आता है, मुख का गीत तो किसको आता है किसको नहीं आता है लेकिन बाप के प्राप्तियों का, बाप के गुणों का गीत वह तो सबको आता है ना। तो बस हर दिन उत्सव है, हर घड़ी उत्सव है, और सदा नाचो और गाओ और काम तो दिया ही नहीं है। यही तो दो काम हैं ना, नाचो और गाओ। तो इन्ज्वाय करो। बोझ क्यों उठाते? इन्ज्वाय करो, नाचो गाओ बस। अच्छा।

होली तो मना ली ना! अभी रंग की होली भी मनायेंगे? अच्छा आपको ही तो भक्त कापी करेंगे ना! आप भगवान के साथ होली खेलते हो तो भक्त भी होली कोई न कोई आप देवताओं के साथ खेलते रहते हैं। अच्छा, तो आज कई बच्चों के ईमेल भी आये हैं, पत्र भी आये हैं, फोन भी आये हैं, जो भी साधन हैं उससे होली की मुबारक भेजी है। बापदादा के पास तो जब संकल्प करते हैं ना तभी पहुंच जाता है। लेकिन चारों ओर के बच्चे विशेष याद करते हैं और किया है, बापदादा भी हर बच्चे को पदम पदम दुआयें और पदमगुणा दिल की यादप्यार रिटर्न में हर एक को नाम सहित विशेषता सहित दे रहे हैं। जब सन्देशी जाती है ना तो हर एक अपने अपने तरफ की यादें देते हैं। जिन्होंने नहीं भी दी हो ना, बापदादा के पास पहुंच गई है। यही तो परमात्म प्यार की विशेषता है। यह एक एक दिन कितना प्यारा है। चाहे गांव में हैं, चाहे बहुत बड़े-बड़े शहरों में हैं, गांव वालों की भी याद साधन न होते हुए भी बाप के पास पहुंच जाती है क्योंकि बाप के पास स्प्रीचुअल साधन तो बहुत हैं ना!

अच्छा - सभी ने दादी की याद भी बहुत-बहुत दी है। सभी का एक ही संकल्प है कि दादी जल्दी से जल्दी अपने मधुबन में पहुंच जाए। बापदादा भी यही चाहते हैं। दादी बोलती नहीं है लेकिन दिल में संकल्प द्वारा मधुबन की याद, ब्राह्मणों की याद, अपनी बेहद सेवा के जिम्मेवारी की याद रहती ही है। अभी प्यार से याद तो आप सभी बहुत करते हो। बापदादा देखते हैं कि बापदादा से तो सभी का प्यार है लेकिन दादी से भी कम नहीं है। प्यार की याद तो दादी तक पहुंचती है लेकिन अभी ऐसे शक्तिशाली, जैसे पावरफुल दवाई देते हैं ना, दवाई में भी पावर का फर्क होता है ना! तो आप सबने स्नेह की दवाई तो भेजी है लेकिन अभी सब मिलकर शक्तिशाली तन्दरूस्त भव के दृढ़ संकल्प की किरणें ऐसी भेजो जो वह किरणें अपना काम शुरू कर दें। टाइम तो थोड़ा लगेगा लेकिन यह आप सब ब्राह्मणों के दिल के सहयोग की किरणें अपना काम दिखायेंगी। वहाँ कमरे का वायुमण्डल भी दिल के शक्तिशाली वायब्रेशन क्या हुआ, क्या हो रहा है, नहीं। हो रहा है। होना ही है। इस उमंग-उत्साह का, सर्व ब्राह्मण चाहे कोई भी सेवाधारी का वायुमण्डल ऐसा शक्तिशाली हो, आप सबके दिल के प्यार का वायब्रेशन बापदादा के पास भी पहुंचता है। जो भी सेवाधारी सेवा के निमित्त बनते हैं, उन्हों का सदा यही वायब्रेशन हो, निश्चयबुद्धि बन शक्तिशाली किरणों की स्प्रीचुअल शक्ति सदा देते रहो। सेवा दिल से कर रहे हैं, भावना बहुत अच्छी है, अभी शक्तिशाली संकल्प की दुआ दो। कोई भी व्यर्थ संकल्प दिल में लाना नहीं, क्या होगा नहीं, अच्छा होना ही है। अच्छा।

सेवा का टर्न गुजरात का है, गुजरात के 6500 आये हैं:- गुजरात दर पर है ना। गुजरात के साढ़े छः हजार आ गये हैं, अच्छा है भले आये। गुजरात में बापदादा ने देखा है कि मैजॉरिटी एक तो गीता पाठशालायें बहुत हैं और गीता पाठशालायें चलाने वाले हैण्डस भी बहुत हैं। और साथ में गुजरात में सेवा भी बहुत है, सेवाधारी हैण्डस भी बहुत हैं। अभी गुजरात क्या करेगी? सेवाधारी भी बहुत हैं, सेवा भी बहुत है, अभी नई सेवा क्या करेंगे? जो किसने नहीं की हो, ऐसा कोई प्लैन बनाया है? जो किसने नहीं की हो, वह गुजरात करके दिखावे। प्लैन बनाया है? (थोड़ा सोचा है, आपस में मिलकर करेंगे) वैसे बापदादा सभी ज़ोन को कहते हैं कि ऐसा कोई स्पीकर तैयार करो, आप स्पीच करो वह नहीं, लेकिन आपकी तरफ से कोई ऐसा स्पीकर तैयार हो जिसका आवाज बड़ा हो, बुलन्द हो। जिसको देख करके अनेकों का कल्याण हो जाए। ऐसे हैं, हर एक ज़ोन में ऐसे हैं लेकिन स्टेज पर नहीं आये हैं। बापदादा अभी यह चाहते हैं कि ब्राह्मण बैकबोन हों और सामने ऐसी आत्मायें निमित्त हों जिसका सुन करके अनेकों

के दिल में वह आवाज लग जाए। क्योंकि समय के अनुसार हर ज़ोन ने, जिस भी विधि से सेवा की है, वह अच्छी की है, बापदादा सेवा के निमित्त बने हुए बच्चों का उमंग-उत्साह देख करके भी खुश होते हैं लेकिन अभी कोई नवीनता हो। कोई स्वयं ही निमित्त बने और प्लैन देवे कि यह यह कर सकते हैं। क्योंकि वर्गीकरण की सेवा को भी काफी समय हो चुका है। हर एक वर्ग से ऐसे कोई स्पीकर तैयार हो, आप टापिक देते हो उस पर भाषण करते हैं, नहीं। खुद उमंग आवे मुझे यह करना है। ऐसा कुछ प्लैन बनाओ। उसका आधार है, स्वयं निमित्त बनने वाले सेकण्ड में वेस्ट को खत्म कर बेस्ट का प्रभाव वायुमण्डल में फैलायें। वेस्ट अभी भी है इसलिए मन्सा द्वारा सेवा का रेसपान्ड प्रैक्टिकल रूप में कम है। जैसे शुरू-शुरू में स्थापना के समय में देखा ब्रह्मा बाप का मन्सा वायब्रेशन कईयों को घर बैठे साक्षात्कार होने लगा, आवाज गया कोई आया है जाओ। ऐसे बेस्ट थॉट्स का वायुमण्डल नजदीक ला सकता है। कोई भी विस्तार में नहीं जाओ, शार्ट। जो भी कारोबार की बातें करनी तो पड़ती हैं लेकिन जहाँ तक हो सके विस्तार से शार्ट करते मन्सा शक्तिशाली सेवा को बढ़ाओ। जैसे शिकारी जो होशियार होते हैं वह ऐसा तीर लगाते जो पंछी तीर सहित आके पांव में पड़ता। यहाँ मन्सा सेवा ऐसी पावरफुल हो, जो आत्माओं को प्राप्ति की अनुभूति हो, रह नहीं सके। मन्सा शक्तिशाली से मन्सा सेवा की सिद्धि प्राप्त होनी है। तो गुजरात क्या करेगा? मन्सा सेवा में नम्बरवन होके दिखाओ। सभी के लिए है। लेकिन गुजरात का टर्न है तो गुजरात को कह रहे हैं लेकिन अभी मन्सा स्वयं की पावरफुल होने से मन्सा सेवा की रिजल्ट सामने आयेगी। जैसे वाचा की पहले नहीं थी, अभी वाचा सेवा की रिजल्ट सामने आ रही है। मेहनत तो अच्छी की है। बापदादा मेहनत, निमित्त मेहनत की मुबारक भी देते हैं लेकिन समय फास्ट है, अभी भी समय बहुत फास्ट जा रहा है। अच्छा। मुबारक हो, गुजरात को टाइटल है कि बिल्कुल नजदीक जैसे देश के हिसाब से हैं वैसे बाप के दिल में भी नजदीक हैं। अच्छे अच्छे हैं, शुरू से देखो तो निकले भी अच्छे अच्छे, पाण्डव या शक्तियां अच्छे निकले हैं। अभी ऐसे स्पीकर तैयार करो। आप सकाश दो और वह भाषण करें। अच्छा। बहुत अच्छा। पदमगुणा मुबारक है।

98 देशों से 1200 विदेशी भाई बहिनें आये हैं: अच्छा। विदेशी उठो। अच्छा आप भी हाथ हिलाओ। बापदादा को जब विदेश के बच्चे आपस में इकट्ठे होके स्व-उन्नति और सेवा की वृद्धि दोनों साथ-साथ प्लैन बनाते हैं तो बापदादा को अच्छा लगता है क्योंकि विदेश में तो बहुत अलग अलग रहते हैं लेकिन यहाँ एक तो फ्री होके आते हैं दूसरा संगठन भी अच्छा होता है, तो स्व-उन्नति और भविष्य प्लैन अच्छा बनाते हैं। बापदादा के पास रिपोर्ट तो आती है। समाचार पहुंचता रहता है। तो जो भी अलग अलग ग्रुप बनके, क्योंकि छोटे ग्रुप में अटेन्शन जाता है, नजदीक आने का चांस मिलता है, तो यह ग्रुप बनाके जो सेवा की है, यह अच्छी की है। अभी डबल विदेशियों में पुरुषार्थ की रफ्तार भी अच्छी चल रही है लेकिन अभी भी थोड़ी थोड़ी कम्पलेन है, पुरुषार्थ की तरफ अटेन्शन अच्छा है, अटेन्शन दिलाते भी अच्छा है और अटेन्शन देते भी अच्छा है सिर्फ उसको अविनाशी बनाने के लिए कोई ऐसा प्लैन बनाओ जो रिफेशमेंट वहाँ जाने के बाद भी बढ़ती रहे। सेवा के साधन भी अच्छे निकालते हैं, वी.आई.पी. वा भिन्न-भिन्न प्रकार की सेवाओं के जो प्लैन बनाते हो वह भी अच्छा बनाया है। अभी दूसरे साल जब आओ, अभी तो नजदीक आ गई है ना सीजन का। लेकिन जब दूसरी बार आओ तो यह रिजल्ट दिखाई दे कि सभी इतने मन्सा सेवा, वाचा सेवा, सम्बन्ध-सम्पर्क द्वारा सेवा कर्मणा हो गई ना यह, चेहरे और चलन द्वारा सेवा करने में इतने सब बिजी रहते जो वेस्ट बातों को आने के लिए मार्जिन ही नहीं है। फुल बिजी। बिजी रहते हैं लेकिन फुल बिजी। माया का आने का कोई मार्जिन ही नहीं रहे। चाहे संकल्प में, चाहे एक दो के साथ सहयोग में ऐसी रिजल्ट निकल सकती है। हो सकता है ऐसे! इतने बिजी हो सकते हो? हो सकते हो? कि टाइम चाहिए? एक साल है। बापदादा तो इण्डिया में भी यही चाहते, विदेश में भी यह चाहते यह आवाज हो कि माया आ नहीं सकती। मेहनत नहीं करनी पड़े। देखो कौन सा ज़ोन करता है? बापदादा ने तो पहले ही कहा है, कि बापदादा डायमण्ड कप देने चाहते हैं लेकिन प्राब्लम प्रूफ हो। प्राब्लम क्या होती है यह नामनिशान नहीं हो। (बाबा ने कहा है तो हुआ ही पड़ा है) देखो होना तो है ही। आप नहीं होंगे तो कौन होंगे। होना तो है, सिर्फ नजदीक लाओ उसको। ठीक है ना। डबल फारेनर्स? डायमण्ड कप लेने वाले हो। बापदादा तो सदा आफर करते हैं। लेकिन एक दो के साथी भी हों, सिर्फ मैं

ठीक हूँ, नहीं। साथी भी ठीक हों। (भारत और विदेश मिलकर ही डायमण्ड कप लेंगे) आपके मुख में गुलाबजामुन। होना ही है। सिर्फ समय को थोड़ा नजदीक लाओ। रिजल्ट अच्छी है। रिजल्ट पहले से काफी फर्क है, इसकी मुबारक है लेकिन अभी फुल नहीं है थोड़ी-थोड़ी फीलिंग है। अभी फुल हो जायेंगे। बापदादा वतन से बहुत बढ़िया फरिश्तेपन की सौगात देंगे। हर एक ऐसे अनुभव करेंगे मैं हूँ फरिश्ता, चमकता हुआ। होना ही है। अच्छा है, बैठ जाओ, थक जायेंगे। अच्छा।

बापदादा कहते हैं आजकल के जमाने में डाक्टर्स कहते हैं दवाई छोड़ो, एक्सरसाइज़ करो। तो बापदादा भी कहते हैं कि युद्ध करना छोड़ो, मेहनत करना छोड़ो, सारे दिन में 5-5 मिनट मन की एक्सरसाइज करो। वन मिनट में निराकारी, वन मिनट में आकारी, वन मिनट में सब तरह के सेवाधारी, यह मन की एक्सरसाइज़ 5 मिनट की सारे दिन में भिन्न-भिन्न टाइम करो। तो सदा तन्दरूस्त रहेंगे, मेहनत से बच जायेंगे। हो सकता है ना! हो सकता है? मधुबन वाले, मधुबन है फाउण्डेशन, मधुबन का वायब्रेशन चारों ओर न चाहते भी पहुंच जाता है। जो मधुबन में एक दिन कोई बात होती है ना, सारे भारत में, जगह जगह में दूसरे दिन पहुंच जाती है। इतना मधुबन में कोई साधन लगे हुए हैं, कोई बात नहीं छिपती, अच्छी भी तो पुरुषार्थ की भी। तो मधुबन जो करेगा वह वायब्रेशन स्वत: और सहज फैलेगा। पहले मधुबन निवासी वेस्ट थॉटस का स्टॉप करें, हो सकता है? हो सकता है? यह आगे-आगे बैठे हैं ना! मधुबन निवासी हाथ उठाओ। तो मधुबन निवासी आपस में कोई ऐसा प्लैन बनाओ वेस्ट खत्म। बापदादा यह नहीं कहते हैं कि संकल्प ही बन्द करो। वेस्ट संकल्प फिनिश। फायदा तो है नहीं। परेशानी ही है। हो सकता है? जो समझते हैं मधुबन निवासी, आपस में मीटिंग करके यह करेंगे, वह हाथ उठाओ। करेंगे करना है तो लम्बा हाथ उठाओ। दो-दो हाथ उठाओ। मुबारक हो। बापदादा दिल से दुआयें दे रहे हैं। मुबारक देते हैं। हिम्मत है मधुबन में, जो चाहे वह कर सकते हैं। करा भी सकते हैं। मधुबन की बहनें भी हैं, बहनें हाथ उठाओ। बड़ा हाथ उठाओ। मीटिंग करना। आप मीटिंग कराना दादियां। देखो हाथ सभी उठा रहे हैं। अभी हाथ की लाज रखना। अच्छा।

अभी अभी सेकण्ड में जो बाप ब्रह्मा ने लास्ट में वरदान दिया, निराकारी, निर्विकारी, निरंहकारी, यह ब्रह्मा बाप के लास्ट वरदान, एक बहुत बड़ी सौगात बच्चों के प्रति रही। तो क्या सेकण्ड में ब्रह्मा बाप की सौगात मन से स्वीकार कर सकते हैं? दृढ़ संकल्प कर सकते हो कि बाप की सौगात को सदा प्रैक्टिकल लाइफ में लाना है? क्योंकि आदि देव की सौगात कम नहीं है। ब्रह्मा ग्रेट-ग्रेट ग्रैण्ड फादर है। उसकी सौगात कम नहीं है। तो अपने-अपने पुरुषार्थ प्रमाण संकल्प करो कि आज के दिन होली अर्थात् जो बीत चुकी, हो ली, हो गई। लेकिन अब से सौगात को बार-बार इमर्ज कर ब्रह्मा बाप को सेवा का रिटर्न देंगे। देखो ब्रह्मा बाप ने अन्तिम दिन, अन्तिम समय तक सेवा की। यह ब्रह्मा बाप का बच्चों से प्यार, सेवा से प्यार की निशानी है तो ब्रह्मा बाप को रिटर्न देना अर्थात् बार-बार जीवन में दी हुई सौगात को रिवाइज कर प्रैक्टिकल में लाना। तो सभी अपने दिल में ब्रह्मा बाप से स्नेह के रिटर्न में संकल्प दृढ़ करो, यह है ब्रह्मा बाप के स्नेह की सौगात का रिटर्न। अच्छा।

चारों ओर के लकीएस्ट, होलीएस्ट बच्चों को सदा दृढ़ संकल्प की चाबी प्रैक्टिकल में लाने वाले हिम्मत वाले बच्चों को, सदा अपने मन को भिन्न-भिन्न प्रकार की सेवा में बिजी रखने वाले, कदम में पदमों की कमाई जमा करने वाले बच्चों को, सदा हर दिन उत्साह में रहने वाले, हर दिन को उत्सव समझ मनाने वाले, सदा खुशनसीब बच्चों को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

मोहिनी बहन, ईशू बहन से:- अभी वहाँ भी (हॉस्पिटल में भी) प्रोग्राम बनाना, जो भी कमरे में बैठो या बाहर भी बैठो वहाँ और कोई बात नहीं। ऐसा वायुमण्डल बनाना जैसे वह लोग साधनों द्वारा कमरे का वायुमण्डल बनाते हैं ना, तो वहाँ बिल्कुल ऐसा शक्तिशाली वायुमण्डल हो, जो आवे वह सेकण्ड में अशरीरी स्थिति का अनुभव करे। इससे यह दवाई शक्तिशाली है। (कुछ दिन तबियत ठीक रहती है, फिर कुछ न कुछ नीचे ऊपर हो जाता है) अभी तो खेल चल रहा है ना, अभी यह वायुमण्डल, दवाई और दुआ दोनों साथ-साथ हो। (चारों ओर सेन्टरों में भी योग चल रहा है) सब तरफ विशेष योग में बैठें या बिजी भी हों लेकिन लक्ष्य वह हो। समझें हमको यह सेवा करनी

है। प्यार का रिटर्न तो यही है।

दादा विश्वरतन ने 26 फरवरी को अचानक अपना पुराना शरीर छोड़ दिया: क्योंकि ड्रामा में कोई-कोई आत्मा को अचानक और एवररेडी का पाठ पक्का कराना है। देखो, जब चन्द्रमणी ने शरीर छोड़ा तो कुछ समय वह लहर अच्छी रही। सभी अचानक के पाठ में पक्के रहे, फिर धीरे-धीरे हल्का हो गया। फिर यह जो ड्रामा में पार्ट हुआ यह वायुमण्डल में अचानक और एवररेडी का पाठ फिर से पक्का कराने के निमित्त बनें। विश्वरतन का निराकारी स्थिति का ध्यान अच्छा रहा, गुप्त में यह पाठ पक्का था। इसीलिए जल्दी सेकण्ड में पार्ट पूरा हो गया। यह भी समय सभी को अटेन्शन खिंचाने के लिए निमित्त बनता है। सभी थोड़ा थोड़ा अभी समझते हैं, अभी तो टाइम पड़ा है, यह लहर अभी होनी नहीं चाहिए। एवररेडी रहना चाहिए क्योंकि बहुतकाल का भी अटेन्शन रहना चाहिए। अच्छा।

(दादियों से) आपका ग्रुप तो अटेन्शन वाला है ही ना। अटेन्शन रहता है ना। अच्छा। आपका अटेन्शन तो रहता है ना, एवररेडी है?

दादा के सेवाधारी मनोज से: ड्रामा को देखके खुश हो ना, ड्रामा में जो भी होता है अच्छा होता है। (दादा की बहुत याद आती है) याद भले आवे, उनके गुण और उनके कर्तव्य याद आवे और फिर फॉलो करो। याद तो आयेगा ही। बस आज्ञा यही है कि फॉलो करो, खुश रहो खुशी बांटो।

निर्वैर भाई ने दादी जी का समाचार सुनाया और सभी की याद दी:- सभी को सेवा की मुबारक और याद देना। (मुन्नी बहन ने याद दी है, दादी जी को जल्दी से जल्दी मधुबन लाने की इच्छा है) जल्दी नहीं करे, जल्दी का संकल्प नहीं, बस। वायुमण्डल को शक्तिशाली बनाये। अभी यह संकल्प करो ही नहीं। यह करो - अच्छा है, अच्छा है, अच्छा है। हो जायेगा कोई बात नहीं

रमेश भाई से:- बाम्बे क्या करेगी? कोई नया प्लैन निकालो। वर्गीकरण के प्रोग्राम तो होते ही रहते हैं कोई नया ऐसा हो जो प्रत्यक्ष दिखाई दे। किया और निकला और सेवा शुरू कर दे, ऐसे अभी तुरत दान महापुण्य।

भोपाल भाई, गोलक भाई से:- मधुबन के चारों ओर भी पावरफुल वायुमण्डल बनाओ।

मीटिंग करना, सभी मिलके मीटिंग करना। (दादी जानकी से) मधुबन वालों की मीटिंग कराना।

चन्द्रहास दादा से:- तबियत अच्छी है। अच्छा है, अपनी तबियत को खुद ही समझके चलाते रहो। बड़े में बड़ा डाक्टर खुद हैं।

डा.करसन भाई पटेल (चेयरमैन निरमा ग्रुप):- अभी जैसे अपने लौकिक बिजनेस में उन्नति कर रहे हो ना, ऐसे अभी यह आध्यात्मिक बिजनेस भी करो। परमात्मा से बिजनेस करो, बहुत इज़ी। जो अविनाशी रहे। यह बिजनेस तो एक जन्म रहेगा ना लेकिन वह 21 जन्म की गैरन्टी है। तो 21 जन्म करना नहीं पड़ेगा। सिर्फ खाना पीना मौज करना पड़ेगा। तो ऐसा बिजनेस करो। करने चाहते हो? निमित्त बनो। आपको देखकर फिर औरों में भी उमंग आयेगा। यहाँ तक पहुंचे हो तो अवश्य कोई भाग्य छिपा हुआ था जो यहाँ पहुंच गये हो। जो भाग्य यहाँ ले आया है। निमित्त तो कोई बनेगा ना! कितने बारी सोचा जाना है, जाना है, आज ही कैसे पहुंचे? तो यह भाग्य आपको ले आया। बहुत अच्छा किया।

स्वामी समर्पणानंदगिरी जी, पुरी: बहुत अच्छा है। साथ-साथ मिलके करेंगे ना तो आवाज बुलन्द होगा। बुलन्द आवाज बहुतों के कानों में जायेगा। अच्छा है। सब धर्म के नेतायें मिलके करें ना तो आवाज बहुत जल्दी फैले। यह भी होना है। थोड़ा टाइम लग रहा है लेकिन होना है। सब मिलकरके एक ही झण्डा लहरायेंगे।

राकेश मेहता, आई.ए.एस. बिजली बोर्ड दिल्ली:- यहाँ भी देखो आत्मा लाइट है और लाइट हाउस होके लाइट देनी है। तो डबल लाइट का ज्ञान लेने वाले भाग्यवान आत्मा हो। वह भी लाइट जरूरी है, यह भी लाइट जरूरी है। अभी निमित्त बनके दु:खी आत्माओं को सुखी करो। टेन्शन फ्री लाइफ बनाओ।

17-03-07

श्रेष्ठ वृत्ति से शक्तिशाली वायब्रेशन और वायुमण्डल बनाने का तीव्र पुरुषार्थ करो, दुआ दो और दुआ लो

आज प्यार और शक्ति के सागर बापदादा अपने स्नेही, सिकीलधे, लाडले बच्चों से मिलने के लिए आये हैं। सभी बच्चे भी दूर-दूर से स्नेह की आकर्षण से मिलन मनाने के लिए पहुंच गये हैं। चाहे सम्मुख बैठे हैं, चाहे देश विदेश में बैठे हुए स्नेह का मिलन मना रहे हैं। बापदादा चारों ओर के सर्व स्नेही, सर्व सहयोगी साथी बच्चों को देख हर्षित होते हैं। बापदादा देख रहे हैं मैजॉरिटी बच्चों के दिल में एक ही संकल्प है कि अभी जल्दी से जल्दी बाप को प्रत्यक्ष करें। बाप कहते हैं सभी बच्चों का उमंग बहुत अच्छा है, लेकिन बाप को प्रत्यक्ष तब कर सकेंगे जब पहले अपने को बाप समान सम्पन्न सम्पूर्ण प्रत्यक्ष करेंगे। तो बच्चे पूछते हैं बाप से कि कब प्रत्यक्ष होगा? और बाप बच्चों से पूछते हैं कि आप बताओ आप कब स्वयं को बाप समान प्रत्यक्ष करेंगे? अपने सम्पन्न बनने की डेट फिक्स की है? फॉरेन वाले तो कहते हैं एक साल पहले डेट फिक्स की जाती है। तो अपने को बाप समान बनने की आपस में मीटिंग करके डेट फिक्स की है?

बापदादा देखते हैं आजकल तो हर वर्ग की भी मीटिंग्स बहुत होती हैं। डबल फारेनर्स की भी मीटिंग बापदादा ने सुनी। बहुत अच्छी लगी। सब मीटिंग्स बापदादा के पास तो पहुंच ही जाती हैं। तो बापदादा पूछते हैं कि इसकी डेट कब फिक्स की है? क्या यह डेट ड्रामा फिक्स करेगा या आप फिक्स करेंगे? कौन करेगा? लक्ष्य तो आपको रखना ही पड़ेगा। और लक्ष्य बहुत अच्छे ते अच्छा, बढ़िये ते बढ़िया रखा भी है, अभी सिर्फ जैसा लक्ष्य रखा है उसी प्रमाण लक्षण, श्रेष्ठ लक्ष्य के समान बनाना है। अभी

लक्ष्य और लक्षण में अन्तर है। जब लक्ष्य और लक्षण समान हो जायेंगे तो लक्ष्य प्रैक्टिकल में आ जायेगा। सभी बच्चे जब अमृतवेले मिलन मनाते हैं और संकल्प करते हैं तो वह बहुत अच्छे करते हैं। बापदादा चारों ओर के हर बच्चे की रूहरिहान सुनते हैं। बहुत सुन्दर बातें करते हैं। पुरुषार्थ भी बहुत अच्छा करते हैं लेकिन पुरुषार्थ में एक बात की तीव्रता चाहिए। पुरुषार्थ है लेकिन तीव्र पुरुषार्थ चाहिए। तीव्रता की दृढ़ता उसकी एडीशन चाहिए।

बापदादा की हर बच्चे के प्रति यही आश है कि समय प्रमाण हर एक तीव्र पुरुषार्थी बनें। चाहे नम्बरवार हैं, बापदादा जानते हैं लेकिन नम्बरवार में भी तीव्र पुरुषार्थ सदा रहे, उसकी आवश्यकता है। समय सम्पन्न होने में तीव्रता से चल रहा है लेकिन अभी बच्चों को बाप समान बनना ही है, यह भी निश्चित ही है सिर्फ इसमें तीव्रता चाहिए। हर एक अपने को चेक करे कि मैं सदा तीव्र पुरुषार्थी हूँ? क्योंकि पुरुषार्थ में पेपर तो बहुत आते ही हैं और आने ही हैं लेकिन तीव्र पुरुषार्थी के लिए पेपर में पास होना इतना ही निश्चित है कि तीव्र पुरुषार्थी पेपर में पास हुआ ही पड़ा है। होना है नहीं, हुआ ही पड़ा है, यह निश्चित है। सेवा भी सभी अच्छी रूचि से कर रहे हैं लेकिन बापदादा ने पहले भी कहा है कि वर्तमान समय के प्रमाण एक ही समय पर मन्सा-वाचा और कर्मणा अर्थात् चलन और चेहरे द्वारा तीनों ही प्रकार की सेवा चाहिए। मन्सा द्वारा अनुभव कराना, वाणी द्वारा ज्ञान के खजाने का परिचय कराना और चलन वा चेहरे द्वारा सम्पूर्ण योगी जीवन के प्रैक्टिकल रूप का अनुभव कराना, तीनों ही सेवा एक समय करनी है। अलग-अलग नहीं, समय कम है और सेवा अभी भी बहुत करनी है। बापदादा ने देखा कि सबसे सहज सेवा का साधन है -वृत्ति द्वारा वायब्रेशन बनाना और वायब्रेशन द्वारा वायुमण्डल बनाना क्योंकि वृत्ति सबसे तेज साधन है। जैसे साइंस की राकेट फास्ट जाती है वैसे आपकी रूहानी शुभ

भावना, शुभ कामना की वृत्ति, दृष्टि और सृष्टि को बदल देती है। एक स्थान पर बैठे भी वृत्ति द्वारा सेवा कर सकते हैं। सुनी हुई बात फिर भी भूल सकती है लेकिन जो वायुमण्डल का अनुभव होता है, वह भूलता नहीं है। जैसे मधुबन में अनुभव किया है कि ब्रह्मा बाप की कर्मभूमि, योग भूमि, चरित्र भूमि का वायुमण्डल है । अब तक भी हर एक उसी वायुमण्डल का जो अनुभव करते हैं वह भूलता नहीं है। वायुमण्डल का अनुभव दिल में छप जाता है। तो वाणी द्वारा बड़े-बड़े प्रोग्राम तो करते ही हो लेकिन हर एक को अपनी श्रेष्ठ रूहानी वृत्ति से, वायब्रेशन से वायुमण्डल बनाना है, लेकिन वृत्ति रूहानी और शक्तिशाली तब होगी जब अपने दिल में, मन में किसी के प्रति भी उल्टी वृत्ति का वायब्रेशन नहीं होगा। अपने मन की वृत्ति सदा स्वच्छ हो क्योंकि किसी भी आत्मा के प्रति अगर कोई व्यर्थ वृत्ति या ज्ञान के हिसाब से निगेटिव वृत्ति है तो निगेटिव माना किचड़ा, अगर मन में किचड़ा है तो शुभ वृत्ति से सेवा नहीं कर सकेंगे। तो पहले अपने आपको चेक करो कि मेरे मन की वृत्ति शुभ रूहानी है? निगेटिव वृत्ति को भी अपनी शुभ भावना शुभ कामना से निगेटिव को भी पॉजिटिव में चेन्ज कर सकते हो क्योंकि निगेटिव से अपने ही मन में परेशानी तो होती है ना! वेस्ट थॉट्स तो चलते हैं ना! तो पहले अपने को चेक करो कि मेरे मन में कोई खिटखिट तो नहीं है? नम्बरवार तो हैं, अच्छे भी हैं तो साथ में खिटखिट वाले भी हैं, लेकिन यह ऐसा है, यह समझना अच्छा है। जो रांग है उसको रांग समझना है, जो राइट है उसको राइट समझना है लेकिन दिल में बिठाना नहीं है। समझना अलग है, नॉलेजफुल बनना अच्छा है, रांग को रांग तो कहेंगे ना! कई बच्चे कहते हैं बाबा आपको पता नहीं यह कैसे हैं! आप देखो ना तो पता पड़ जाए। बाप मानते हैं आपके कहने से पहले ही मानते हैं कि ऐसे हैं, लेकिन ऐसी बातों को अपनी दिल में वृत्ति में रखने से स्वयं भी तो परेशान होते हो। और खराब चीज़ अगर मन में है, दिल में है

तो जहाँ खराब चीज़ है, वेस्ट थॉटस हैं, वह विश्व कल्याणकारी कैसे बनेंगे? आप सभी का आक्यूपेशन क्या है? कोई कहेगा हम लण्डन के कल्याणकारी हैं, दिल्ली के कल्याणकारी हैं, यू.पी. के कल्याणकारी हैं? या जहाँ भी रहते हो, चलो देश नहीं तो सेन्टर के कल्याणकारी हैं, आक्यूपेशन सब यही बताते कि विश्व कल्याणकारी हैं। तो सब कौन हो? विश्व कल्याणकारी हो? हैं तो हाथ उठाओ। (सभी ने हाथ उठाया) विश्व कल्याणक्रारी! विश्व कल्याणकारी! अच्छा। तो मन में कोई भी खराबी तो नहीं है? समझना अलग चीज़ है, समझो भले, यह राइट है यह रांग है, लेकिन मन में नहीं बिठाओ। मन में वृत्ति रखने से दृष्टि और सृष्टि भी बदल जाती है।

बापदादा ने होम वर्क दिया था - क्या दिया था? सबसे सहज पुरुषार्थ है जो सभी कर सकते हैं, मातायें भी कर सकती हैं, बूढ़े भी कर सकते हैं, युवा भी कर सकते हैं, बच्चे भी कर सकते हैं, वह यही विधि है सिर्फ एक काम करो किसी से भी सम्पर्क में आओ - ''दुआ दो और दुआ लो।'' चाहे वह बद्दुआ देता है, लेकिन आप कोर्स क्या कराते हो? निगेटिव को पॉजिटिव में बदलने का, तो अपने को भी उस समय कोर्स कराओ। चैलेन्ज क्या है? चैलेन्ज है कि प्रकृति को भी तमोगुणी से सतोगुणी बनाना ही है। यह चैलेन्ज है ना! है? आप सबने यह चैलेन्ज की है कि प्रकृति को भी सतोप्रधान बनाना है? बनाना है? कांध हिलाओ, हाथ हिलाओ। देखो, देखादेखी नहीं हिलाना। दिल से हिलाना, क्योंकि अभी समय प्रमाण वृत्ति से वायुमण्डल बनाने के तीव्र पुरुषार्थ की आवश्यकता है। तो वृत्ति में अगर ज़रा भी किचड़ा होगा, तो वृत्ति से वायुमण्डल कैसे बनायेंगे? प्रकृति तक आपका वायब्रेशन जायेगा, वाणी तो नहीं जायेगी। वायब्रेशन जायेगा और वायब्रेशन बनता है वृत्ति से, और वायब्रेशन से वायुमण्डल बनता है। मधुबन में भी सब एक जैसे तो नहीं हैं। लेकिन ब्रह्मा बाप और अनन्य बच्चों के वृत्ति द्वारा, तीव्र पुरुषार्थ द्वारा वायुमण्डल बना है।

आज आपकी दादी याद आ रही है, दादी की विशेषता क्या देखी? कैसे कन्ट्रोल किया? कभी भी कैसी भी वृत्ति वाले की कमी दादी ने मन में नहीं रखी। सभी को उमंग दिलाया। आपकी जगदम्बा माँ ने वायुमण्डल बनाया। जानते हुए भी अपनी वृत्ति सदा शुभ रखी, जिसके वायुमण्डल का अनुभव आप सभी कर रहे हो। चाहे फॉलो फादर है लेकिन बापदादा हमेशा कहते हैं कि हर एक की विशेषता को जान उस विशेषता को अपना बनाओ। और हर एक बच्चे में यह नोट करना, बापदादा का जो बच्चा बना है उस एक एक बच्चे में, चाहे तीसरा नम्बर है लेकिन यह ड्रामा की विशेषता है, बापदादा का वरदान है, सभी बच्चों में चाहे 99 गलतियां भी हों लेकिन एक विशेषता जरूर है। जिस विशेषता से मेरा बाबा कहने का हकदार है। परवश है लेकिन बाप से प्यार अटूट होता है। इसीलिए बापदादा अभी समय की समीपता अनुसार हर एक जो भी बाप के स्थान हैं, चाहे गांव में हैं, चाहे बड़े ज़ोन में हैं, सेन्टर्स पर हैं लेकिन हर एक स्थान और साथियों में श्रेष्ठ वृत्ति का वायुमण्डल आवश्यक है। बस एक अक्षर याद रखो अगर कोई बद्दुआ देता भी है, तो लेने वाला कौन? क्या देने वाला, लेने वाला एक होता है या दो? अगर कोई आपको कोई खराब चीज़ दे, आप क्या करेंगे? अपने पास रखेंगे? या वापस करेंगे या फेंक देंगे कि अलमारी में सम्भाल के रखेंगे? तो दिल में सम्भाल के नहीं रखना क्योंकि आपकी दिल बापदादा का तख्त है। इसीलिए एक शब्द अभी मन में पक्का याद कर लो, मुख में नहीं मन में याद करो - दुआ देना है, दुआ लेना है। कोई भी निगेटिव बात मन में नहीं रखो। अच्छा एक कान से सुना, दूसरे कान से निकालना तो आपका काम है कि दूसरे का काम है? तब ही विश्व में, आत्माओं में फास्ट गति की सेवा वृत्ति से वायुमण्डल बनाने की कर सकेंगे। विश्व परिवर्तन करना है ना! तो क्या याद रखेंगे? याद रखा मन से? दुआ शब्द याद रखो, बस क्योंकि आपके जड़ चित्र क्या देते हैं? दुआ देते

हैं ना! मन्दिर में जाते हैं तो क्या मांगते हैं? दुआ मांगते हैं ना! दुआ मिलती है तभी तो दुआ मांगते हैं। आपके जड़ चित्र लास्ट जन्म में भी दुआ देते हैं, वृत्ति से उनकी कामनायें पूरी करते हैं। तो आप बार-बार ऐसे दुआ देने वाले बने हो तब आपके चित्र भी आज तक दुआयें देते हैं। चलो परवश आत्माओं को अगर थोड़ा सा क्षमा के सागर के बच्चे क्षमा दे दी तो अच्छा ही है ना! तो आप सभी क्षमा के मास्टर सागर हो? हो या नहीं हो? हो ना! कहो पहले मैं। इसमें हे अर्जुन बनो। ऐसा वायुमण्डल बनाओ जो कोई भी सामने आये वह कुछ न कुछ स्नेह ले, सहयोग ले, क्षमा का अनुभव करे, हिम्मत का अनुभव करे, सहयोग का अनुभव करे, उमंग-उत्साह का अनुभव करे। ऐसे हो सकता है? हो सकता है? पहली लाइन वाले हो सकता है? हाथ उठाओ। पहले करना पड़ेगा। तो सभी करेंगे? टीचर्स करेंगी?

अच्छा - अभी लास्ट टर्न में 15 दिन पड़े हैं, ठीक है ना। मधुबन में तो मदद है ही, आप सभी जितने भी हैं, जहाँ के भी हो लेकिन यह 15 दिन यह प्रैक्टिस करना कि दुआ देना है और दुआ लेना है। ठीक है? यह होमवर्क ठीक है? करेंगे? मधुबन वाले, अच्छा है, मधुबन वालों को सीट बहुत अच्छी मिली है, सीट अच्छी ले ली है, होशियार हैं मधुबन वाले, सीट अच्छी पकड़ ली है। अभी नम्बरवन की भी सीट लेनी है क्योंकि मधुबन वासी बनना, भाग्य की निशानी है। और अभी सभी कहाँ के हो? लण्डन के, अमेरिका के, अभी सभी मधुबन के हो। इस समय तो मधुबन के हो ना? कितना अच्छा है। अभी सब मधुबन निवासी हैं। तो 15 दिन के बाद बापदादा रिजल्ट लेंगे, ठीक है? पीछे वाले ठीक है? ऊपर गैलरी में भी बैठे है। गैलरी वाले ठीक है? अच्छा। अभी विश्व को बहुत आवश्यकता है। आप निवारण मूर्त बन जाओ। आपके निवारण मूर्त बनने से आत्मायें निर्वाण में जा सकेंगी। अगर आप निवारण मूर्त नहीं बनेंगे तो आत्मायें

बिचारी निर्वाण में जा नहीं सकेंगी। निर्वाण का गेट आपको ही खोलना है। बाप के साथ-साथ गेट खोलेंगे ना? गेट की सेरीमनी करेंगे ना? अभी डेट बनाना आपस में। बापदादा सब मीटिंग सुनते हैं, बापदादा को क्या है, स्वीच आन किया, सुना। एक ही समय पर सभी ज़ोन, सभी देश की बातें सुन सकते हैं, सुनने चाहें तो। अभी बेहद में आओ। कोई कोई बच्चे थोड़े ज्यादा गम्भीर बनते हैं, गम्भीरता अच्छी है लेकिन ज्यादा गम्भीरता सीरियस लगता है, तो सीरियस किसको अच्छा नहीं लगता है। गम्भीर बनो लेकिन अन्दर गम्भीरता हो, बाहर चेहरा मुस्कराता हो। मुस्कराता हुआ चेहरा सभी को पसन्द आता है और ऐसे ज्यादा गम्भीर वाला चेहरा उससे डरते हैं, दूर भागते हैं। सहयोगी नहीं बनेंगे। ब्रह्मा बाप का मुस्कराना, जगत अम्बा माँ का मुस्कराना, अपनी दादी का मुस्कराना, याद है ना! डबल फारेनर्स को भी दादी का मुस्कराता चेहरा अच्छा लगता है ना! हाथ हिला रहे हैं। हँसो नहीं, मुस्कराओ। ज़ोर से हंसना नहीं, मुस्कराना क्योंकि बापदादा को अभी तीव्र पुरुषार्थ चाहिए। क्यों? क्योंकि बापदादा ने देखा कि बहुतकाल का संस्कार आवश्यक है। अगर अन्त में तीव्र पुरुषार्थ करेंगे तो बहुतकाल में जमा नहीं होगा। और बहुतकाल में अगर आपका जमा नहीं होगा तो 21 जन्म का बहुतकाल का अधिकार भी कम हो जायेगा। तो बापदादा नहीं चाहता है कि एक भी बच्चे का अधिकार कम हो, जब मेरा बाबा कहा, तो मेरा बाबा कहने वाले बच्चे का अधिकार कम नहीं होना चाहिए क्योंकि बाप का तो चाहे लास्ट बच्चा है, बाप जानता है, लास्ट है लेकिन कभी मुरली में नहीं कहा कि यह लास्ट बच्चा है। मीठे मीठे बच्चे कहते हैं तो जो कडुवे हैं उन्हों को छोड़के मीठे बच्चों को याद प्यार, यह कभी कहा है? जानते तो हैं कि लास्ट बच्चा है लेकिन फिर भी मीठे मीठे बच्चे कहते हैं, कडुवा नहीं कहते हैं। तो बाप समान बनना है ना! बापदादा को खुशी होती है, जब सभी का लक्ष्य पूछते हैं तो कहते हैं बाप समान

बनना है, लास्ट नम्बर भी यही कहता है, तो बापदादा खुश होते हैं, फिर भी लक्ष्य ऊंचा रखा है तो लक्षण भी आते जायेंगे। बहुतकाल जरूर इकट्ठा करना है फिर लास्ट में नहीं उल्हना देना कि हमें तो बहुतकाल याद ही नहीं था। 63 जन्म के बहुतकाल का प्रभाव अभी तक भी देख रहे हैं। चाहते नहीं हैं हो जाता है, यह क्या है? बहुतकाल का प्रभाव है। इसलिए बापदादा हर एक प्यारे से प्यारे बच्चों को यही कहते हैं तीव्र पुरुषार्थी भव! होमवर्क याद रखना, 15 दिन के बाद रिजल्ट पूछेंगे। 15 दिन में संस्कार पड़ जायेंगे ना! तो आगे भी होगा। यहाँ तो वायुमण्डल की मदद है ना। और सब मधुबन वाले ड्युटी में हैं या ज़ोन जिसका टर्न है, वह ड्युटी पर हैं और तो सब फ्री हैं। तो क्या करेंगे? दादी (दादी जानकी से) सुनाओ क्या करेंगे? करके दिखायेंगे? करके ही दिखाना है। (बाबा जरूर आपको प्रत्यक्ष करके दिखायेंगे) पहले अपने को प्रत्यक्ष करो तब बाप प्रत्यक्ष होगा। क्योंकि आप द्वारा होना है ना! तो बाप कहते हैं आप कब अपने को प्रत्यक्ष करेंगे? आपसे तो बाप प्रत्यक्ष हो ही जायेगा। है उमंग? कितना उमंग है? बहुत उमंग है? सभी को जितना बहुत-बहुत उमंग है उतना ही बापदादा पदम-पदम-पदमगुणा इनएडवांस मुबारक दे रहे हैं। अच्छा।

जगह जगह से बच्चों के ईमेल और पत्र तो आते ही हैं। तो जिन्होंने पत्र भी नहीं लिखा है लेकिन संकल्प किया है तो संकल्प वालों का भी याद प्यार बापदादा के पास पहुंच गया है। पत्र बहुत मीठे मीठे लिखते हैं। पत्र ऐसे लिखते हैं जो लगता है कि यह उमंग-उत्साह में उड़ते ही रहेंगे। फिर भी अच्छा है, पत्र लिखने से अपने को बंधन में बांध लेते हैं, वायदा करते हैं ना! तो चारों ओर के जो जहाँ देख रहे हैं या सुन रहे हैं, उन सभी को भी बापदादा सम्मुख वालों से भी पहले यादप्यार दे रहे हैं क्योंकि बापदादा जानते हैं कि कहाँ कोई टाइम है, कहाँ कोई टाइम है लेकिन सब बड़े उत्साह से बैठे हैं, याद में सुन भी रहे हैं। अच्छा।

सेवा का टर्न - यू.पी. और इन्दौर ज़ोन का है – (सामने टीचर्स खड़ी है) यह सब टीचर्स हैं। दोनों तरफ की टीचर्स हैं। अच्छा है। बापदादा को टीचर्स पर भी नाज़ है क्योंकि हिम्मत रखकर सरेण्डर होके सारी जीवन सेवा के प्रति लगाने का संकल्प ले लिया है। टीचर्स पक्की हैं ना? पक्के हैं कि थोड़े थोड़े कच्चे हैं? टीचर्स कच्चे नहीं बनना। टीचर्स अर्थात् अपने फीचर्स से फ्युचर दिखाने वाली। अभी संगमयुग का फ्युचर है - फरिश्ता भव। और भविष्य का फीचर्स है - देवता भव। तो जो भी सेवाधारी ग्रुप आया है, उनको डबल नशा है कि फरिश्ता सो देवता बनना ही है! सभी पक्के हैं ना? हाँ देखो, आपका फोटो आ रहा है, तो ऐसा नहीं हो कि फोटो दिखाई नहीं दे, पक्के रहना। क्योंकि जब कहाँ थोड़ी बहुत हलचल होती है ना तो कई बहुत जल्दी घबरा जाते हैं। गहराई में नहीं जाते, घबरा जाते हैं। अगर गहराई में जाये ना, तो कभी भी कितना भी बड़ा हलचल वाला पेपर हो या बात हो लेकिन गहराई में जाने वाले जैसे समुद्र होता है ना, तो समुद्र के तले में जाने वाले बहुत माल लेके आते हैं। ऊपर-ऊपर वाले नहीं, ऊपर वालों को तो मछली मिलेगी लेकिन गहराई में जाने वाले बहुत चीज़ें ले आते हैं। तो यहाँ भी कोई भी बात होवे, बातें तो आयेंगी, बातें नहीं आयेंगी - यह बापदादा नहीं कहेगा। जितना आगे जायेंगे उतनी सूक्ष्म बातें आयेंगी क्योंकि पास विद आनर होना है ना। टीचर्स ने क्या सोचा है? पास विद आनर होना है या 33 मार्क्स से पास होना है? पास विद आनर होना है तो हाथ उठाओ। इन्हों का अच्छी तरह से फोटो निकालो। अच्छा। तो हलचल में घबराना नहीं। बापदादा को उस समय भूल जाते हो, अकेले बन जाते हो ना तो छोटी बात भी बड़ी लगती है। बापदादा कम्बाइण्ड है, कम्बाइण्ड रखो, अनुभव करो तो देखो पहाड़ भी रूई बन जायेगा। कोई बड़ी बात नहीं है। कितने बारी पास हुए हो, कितने कल्प पास हुए हो, पता है? नशा है? अनेक बार मैं ही पास हुआ हूँ, अभी

रिपीट करना है। नई बात नहीं है, सिर्फ रिपीट करना है, यह स्मृति रखो। तो इन्दौर और यू.पी., यू.पी. को तो साकार माँ बाप की बहुत पालना मिली है। तो यू.पी. को तो कमाल करना है। और इन्दौर की भी विशेषता है कि साकार बाप की प्रेरणा से सेन्टर खुला है। ऐसे है ना? दोनों की विशेषता है, तो अभी दोनों ही करो कमाल। ऐसा वायुमण्डल बनाके दिखाओ, जैसे अभी किसको भी परिचय देते हो तो क्या कहते हो? मधुबन में आके देखो, कहते हो ना! तो अभी अपने ज़ोन को, अपने स्थान को ऐसा बनाओ जो किसको भी कहें कि इन्दौर में जाके देखो, यू.पी. में जाके देखो। ठीक है ना? पसन्द है ना? क्या नहीं हो सकता है! आप एक-एक मास्टर सर्वशक्तिवान के संकल्प में इतनी ताकत है जो चाहो वह हो सकता है। सिर्फ दृढ़ता चाहिए। दृढ़ता की चाबी कभी-कभी माया चोरी कर देती है। इस चाबी को सदा यूज़ करो, ऐसे नहीं सम्भाल के रखो, दिमाग में है, चाबी है लेकिन समय पर यूज़ करो। समय बीत जाता है ना, फिर क्या कहते हैं, करना तो ऐसे था, था, था करते हैं। तो था, था नहीं करना। समय पर करना। तो ज़ोन नम्बरवन हो जायेगा। सभी का लक्ष्य अच्छा है, नम्बरवन होना है। यही लक्ष्य है ना, कि जो भी नम्बर मिले ठीक है? बापदादा को भी हर ज़ोन प्यारे ते प्यारा है, क्योंकि हर ज़ोन में कोई न कोई विशेषता है, लेकिन अभी खास विशेषता प्रत्यक्ष नहीं किया है। होना तो है ही। होना तो है! नहीं, हुआ ही पड़ा है, सिर्फ रिपीट करो। तो सब खुश हैं? कभी खुशी तो नहीं गंवाते? खुशी गई जीवन गई। नीरस जीवन में कोई मजा नहीं। तो अच्छा है, कोई कमाल करके दिखाओ। अभी बापदादा ने सभी ज़ोन को कहा है कोई नवीनता करके दिखाओ। अभी नवीनता नहीं दिखाई है। यह बड़े प्रोग्राम करना, यह वर्गीकरण के प्रोग्राम करना, यह तो हो रहे हैं, होते रहेंगे। अब कोई नवीनता दिखाओ। उसमें देखें कौन सा ज़ोन आगे जाता है, विदेश जावे या देश जाये। जो सब कापी कर सकें,

ऐसी नवीनता हो। देखेंगे, कौन करता है। करना तो है ही। अच्छा। बहुत अच्छा चांस लिया, बापदादा कहते हैं जो हर विशेषता में चांस लेते हैं वह चांसलर बन जाते हैं। यज्ञ सेवा का पुण्य जमा किया, बहुत बड़ा पुण्य जमा किया क्योंकि यहाँ वायुमण्डल और बेफिकर की मदद है, कोई जिम्मेवारी का फ़िकर नहीं, जो ड्युटी मिली वही करनी है, बस। तो दोनों ज़ोन ने बहुत-बहुत कमाई जमा की? थोड़ी तो नहीं की, बहुत की? अच्छा।

96 देशों से 900 विदेशी भाई-बहिनें आये हैं – विदेश वाले संख्या बढ़ाने में अच्छा रिकार्ड दिखा रहे हैं। एक तरफ संख्या बढ़ा रहे हैं और दूसरी तरफ एरिया को सम्पन्न बनाने का भी उमंग अच्छा है। बापदादा ने सुना कि मैजॉरिटी सभी तरफ अभी एक दो को उमंग आ रहा है, हर एक अपनी एरिया को चेक करके सन्देश देने का प्रोग्राम बना रहे हैं। भिन्न-भिन्न विधि से कर रहे हैं लेकिन जो भी कर रहे हो वह अच्छा कर रहे हो। अपना उल्हना उतार रहे हो। यह उमंग-उत्साह स्वयं को भी उड़ाता है, और औरों में भी खुशी की लहर फैलाता है। जैसे कोई डूबे हुए को पत्ते का भी सहारा मिल जाता है, तिनके का सहारा मिल जाता है ना, ऐसे दु:खी आत्माओं को सहारा मिल जाता है। उनके मन से जो दुआयें निकलती हैं वह आपके पुण्य के खाते में जमा हो जाती हैं। यह गुह्य हिसाब है। जितनों को जो प्राप्ति होती है, आपके खाते में वो प्राप्ति जमा हो जाती है। बाकी अच्छा मीटिंग का भी समाचार सुना, अच्छा अटेन्शन दे रहे हैं। अपनी अवस्था का भी अच्छा चांस लेते हैं और सेवा के प्रोग्राम में भी अच्छा भविष्य प्रोग्राम बना देते हैं। एक उमंग अच्छा है, कि जो स्नेही सहयोगी हैं उन्हों को और सहजयोगी बनाने में समीप लाये हैं। यह भारत वाले भी करते हैं लेकिन फारेन वाले भी अच्छा कर रहे हैं। अभी सभी मैजॉरिटी जहाँ-जहाँ सेवा करते हो चाहे वी.आई.पी हैं, चाहे साधारण हैं लेकिन समझते हैं कि यहाँ कुछ मिलता है। कुछ नवीनता है, अभी यह

वायुमण्डल पहले से काफी चेंज हो गया है। पहले कितना मुश्किल से बुलाने पर आते थे, अभी तो वह खुद कहते हैं कि हमको चांस लेने दो, फ़र्क हो गया ना। तो विदेश की सेवा पर भी बापदादा खुश है। लेकिन स्व की सेवा में क्या सुनाया? तीव्र पुरुषार्थी, पुरुषार्थी सभी हैं लेकिन् तीव्र पुरुषार्थी बनना है, जो सोचा वह किया, बाप ने कहा बच्चों ने किया। यही आपके जगत अम्बा की युक्ति थी, नम्बरवन हो गई। तो रात को और चलते फिरते भी चेक करो कि जो बाप ने कहा करना है, चलना है, सोचना है, वह किया? जो बाप ने कहा वह करना ही है। बाकी वृद्धि भी है और अटेन्शन भी है। प्रोग्राम भी अच्छे बनाये हैं। डबल मुबारक हो। अच्छा।

भिन्न-भिन्न वर्ग वाले भी आये हैं, बापदादा को मालूम है, अपनी अपनी मीटिंग्स कर रहे हैं। जो भी वर्ग वाले आये हैं, प्लैन तो बहुत अच्छा बना रहे हैं, अभी सिर्फ एडीशन यह करो कि जब भी मीटिंग करते हैं तो हमेशा स्व और सेवा दोनों का बैलेन्स रख एक दो को सेवा का उमंग भी दिलाओ, लेकिन साथ में स्व उन्नति का उमंग-उल्हास भी दिलाओ। बैलेन्स रखो। तो डबल करने से डबल ब्लैसिंग मिलेगी। यह ऑटोमेटिक ब्लैसिंग मिलती है, देनी नहीं पड़ती है ऑटोमेटिक मिलती है। बापदादा ने देखा है - स्व-उन्नति का भी समाचार भेजा है। (स्पार्क मीटिंग का समाचार रमेश भाई ने लिखकर सन्देशी द्वारा बापदादा के पास भेजा था) रमेश जो कर रहे हैं ना, उसमें स्व-उन्नति का भी लिखा है, उसको बार-बार अटेन्शन दिलाओ। जैसे सेवा में प्रैक्टिकल कर लेते हो ना, ऐसे स्व-उन्नति में प्रैक्टिकल किया या नहीं उसका भी चार्ट रखो। बाकी समाचार मिला था, सोचा अच्छा है। जिन्होंने भी मीटिंग की है बापदादा को समाचार मिला है। अभी तक बापदादा को एक बात का वर्ग वालों ने रेसपान्ड नहीं दिया है, याद है? कौन सा रेसपान्ड नहीं दिया है? बापदादा चाहते हैं हर

एक वर्ग का एक एक विशेष स्नेही भी हो, सहयोगी भी हो, वी.आई.पी. भी हो, माइक भी हो और सहजयोग के इन्ट्रेस्ट वाला भी हो, ऐसा हर वर्ग का एक-एक का ग्रुप बाप के आगे आवे, सभी वर्ग का, एक वर्ग का नहीं, कभी कोई आई.पी. आते हैं, वी.आई.पी आते हैं वह वेलकम। लेकिन बापदादा एक ही समय पर हर वर्ग के ऐसे क्वालिफिकेशन वाले ग्रुप को देखने चाहता है। आई.पीज का ग्रुप आता है लेकिन वर्गीकरण का एक विशेष माइक हो, आप सकाश बनो वह स्पीकर बने। आप माइट वह माइक। तो यह अभी करके दिखाना। फारेन वाले तो प्रोग्राम करते हैं, उसमें आ जाते हैं। काल आफ टाइम भी करते हैं, उसमें भी आई.पी. आ जाते हैं। यह वर्गीकरण के रूप में माइक लाना। यह ध्यान रखना। (ऐसे हर वर्ग के भारत में तैयार हैं, बापदादा मिलने की डेट दें) अभी सभी वर्गो से एक-एक माइक हो, ऐसा ग्रुप लाओ, उसके लिए टाइम देंगे। अच्छा।

सभी ने संकल्प किया, तीव्र पुरुषार्थ कर नम्बरवन बनना ही है। किया? हाथ उठाओ। अच्छा अभी टीचर्स उठा रही हैं। पहली लाइन तो है ही ना। अच्छा है - बापदादा ने यह भी डायरेक्शन दिया कि सारे दिन में बीच-बीच में 5 मिनट भी मिले, उसमें मन की एक्सरसाइज़ करो क्योंकि आजकल का जमाना एक्सरसाइज़ का है। तो 5 मिनट में मन की एक्सरसाइज़ करो, मन को परमधाम में लेके आओ, सूक्ष्मवतन में फरिश्तेपन को याद करो फिर पूज्य रूप याद करो, फिर ब्राह्मण रूप याद करो, फिर देवता रूप याद करो। कितने हुए? पांच। तो पांच मिनट में 5 यह एक्सरसाइज करो और सारे दिन में चलते फिरते यह कर सकते हो। इसके लिए मैदान नहीं चाहिए, दौड़ नहीं लगानी है, न कुर्सी चाहिए, न सीट चाहिए, न मशीन चाहिए। जैसे और एक्सरसाइज शरीर की आवश्यक है, वह भले करो, उसकी मना नहीं है। लेकिन यह मन की ड्रिल, एक्सरसाइज, मन को सदा खुश रखेंगी। उमंग-उत्साह में रखेगी, उड़ती कला का अनुभव

करायेगी। तो अभी-अभी यह ड्रिल सभी शुरू करो – परमधाम से देवता तक। (बापदादा ने ड्रिल कराई) अच्छा –

चारों ओर के सदा अपने वृत्ति से रूहानी शक्तिशाली वायुमण्डल बनाने वाले तीव्र पुरुषार्थी बच्चों को, सदा अपने स्थान और स्थिति को शक्तिशाली वायब्रेशन में अनुभव कराने वाले दृढ़ संकल्प वाले श्रेष्ठ आत्माओं को, सदा दुआ देने और दुआ लेने वाले रहमदिल आत्माओं को, सदा अपने आपको उड़ती कला का अनुभव करने वाले डबल लाइट आत्माओं को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

दादियों से – आप लोगों का संगठन सभी को सकाश देता है। देता है ना? क्योंकि फिर भी अनुभवी हो ना! तो अनुभवी का प्रभाव ज्यादा पड़ता है। आदि से आप आत्माओं में बाप और माँ ने अनुभवी मूर्त बनने का संस्कार डाल दिया है। डाला है ना! बापदादा भी खुश होते हैं। अच्छा है, ठीक है? कैसी भी तबियत है लेकिन यज्ञ का श्रृंगार हो। (दादी शान्तामणि को देखकर) चाहे भागदौड़ नहीं भी कर सकते हैं लेकिन आप लोगों को देख करके भी, आप लोगों की हाजिरी भी सभी को बल देती है। आदि रत्न हो ना! तो आदि के संस्कार पावरफुल, आदि की भट्ठी सभी याद करते हैं ना! वह साकार की पालना सभी याद करते हैं। अच्छा।

मोहिनी बहन ने दादी जी की याद बापदादा को दी – बापदादा भी बहुत-बहुत याद दे रहे हैं। बाप को सिर्फ याद नहीं है, सभी को याद है। बाप भी याद करते हैं। इसीलिए जैसे ब्रह्मा बाप एक एक्जैम्पुल था, वैसे दादी भी एक एक्जैम्पुल है। अचानक के पार्ट को कितना सहज कर दिया। ब्रह्मा बाप ने यज्ञ को रचा, लेकिन दादी ने ब्रह्मा बाप से भी ज्यादा समय यज्ञ सम्भाला। इसीलिए सभी के दिल में दादी की याद है ही। क्योंकि उनके गुण, उसका चेहरा, उसकी चलन विशेष रही है, इसीलिए सबके दिल में

विशेष याद है ही है। अभी सभी ने योग किया ना, यह प्यार की निशानी है। अभी और जोर से योग करो जो दादी मधुबन में पहुंच जायेगी। जैसे वह आक्सीजन देते हैं ना, वेन्टीलेटर से देते हैं तो साइंस पावर से आपकी साइलेन्स पावर कम थोड़ेही है। और योग लगाओ, पावरफुल योग। देखो, आपके योग से डाक्टर्स को टचिंग हुई, कोई तो विधि चेंज की ना। अभी धीरे-धीरे कर रहे हैं, आप सभी के दृढ़ संकल्प से विधि भी निकल आयेगी। ठीक है ना! और योग लगाओ, योग को कम नहीं करना। अच्छा। जो भी सेवाधारी हैं मुन्नी है, योगिनी है, गुप्ता है और कुमारियां भी हैं सभी दिल से सेवा कर रहे हैं, बापदादा आपके दिल की मेहनत देख खुश हैं और आपकी मेहनत अवश्य रूप दिखायेगी।

निर्वैर भाई ने सबकी याद दी – सभी का मन यहाँ है, तन वहाँ है। (अभी सबका एक ही संकल्प है दादी चले, फिरे) होना तो है ही। अच्छा है।

बृजमोहन भाई से – दिल्ली में कोई ऐसी नई इन्वेन्शन करो जो सब कर सकें, छोटे बड़े सब कर सकें।

विदेश की मुख्य बहनों से – बहुत अच्छा है, विदेश को अनुभवी आत्मायें होने के कारण अच्छा आगे बढ़ा रहे हो क्योंकि जो आप लोगों में बाप की डायरेक्ट पालना का बीज है, वह बीज फल दे रहा है। अभी सेवा की वृद्धि और उमंग-उत्साह बढ़ रहा है। पहले जो नाज़ुकपन था, अभी नाज़ुकपन खत्म हो गया है। वह कलचर भी खत्म हो गया है, क्योंकि आप लोग एक्जैम्पुल हो ना, तो आपके एक्जैम्पुल को देखकर अभी समझ गये हैं कि क्या करना है। बाकी प्लैन बहुत अच्छा बनाया है। यह ग्रुप-ग्रुप बनाके जो उन्हों के अनुसार ट्रेनिंग देते हैं ना, वह बहुत अच्छा। टीचर्स भी रिफ्रेश और आने वाले भी रिफ्रेश हो जाते हैं। जिस डिपार्टमेंट को जो चाहिए वह मिलता है, यह अच्छा है। और अटेन्शन दिलाना भी बहुत

जरूरी है। अच्छा किया है। यज्ञ में भी अटेन्शन दिया, यह भी बहुत अच्छा किया है क्योंकि यज्ञ के हो। सिर्फ सेवा के लिए बाहर गये हैं। तो आप लोगों का जरा भी इशारा अच्छा होता है, इसमें खराब नहीं मानो, अच्छा है। बापदादा खुश है। इतना टाइम भी देते तो हो ना। अभी ऐसा एक दो के विचारों में समीप आओ जो सभी समझें कि यह सब एक हैं, 6 नहीं हैं एक हैं, इतना एक दो के विचारों के भी नजदीक। हो रहा है, बापदादा देख रहे हैं किया है और आगे भी करते रहेंगे। (दिल से बहुत थैंक्स) आपको बहुत थैंक्स।

''सपूत बन अपनी सूरत से बाप की सूरत दिखाना, निर्माण (सेवा) के साथ निर्मल वाणी, निर्मान स्थिति का बैलेन्स रखना''

आज बापदादा चारों ओर के बच्चों के भाग्य की रेखायें देख हर्षित हो रहे हैं। सभी बच्चों के मस्तक में चमकती हुई ज्योति की रेखा चमक रही है। नयनों में रूहानियत की भाग्य रेखा दिखाई दे रही है। मुख में श्रेष्ठ वाणी के भाग्य की रेखा दिखाई दे रही है। होठों में रूहानी मुस्कराहट देख रहे हैं। हाथों में सर्व परमात्म खजाने की रेखा दिखाई दे रही है। हर याद के कदम में पदमों की रेखा देख रहे हैं। हर एक के हृदय में बाप के लव में लवलीन की रेखा देख रहे हैं। ऐसा श्रेष्ठ भाग्य हर एक बच्चा अनुभव कर रहे हैं ना! क्योंकि यह भाग्य की रेखायें स्वयं बाप ने हर एक के श्रेष्ठ कर्म के कलम से खींची है। ऐसा श्रेष्ठ भाग्य जो अविनाशी है, सिर्फ इस जन्म के लिए नहीं है लेकिन अनेक जन्मों की अविनाशी भाग्य रेखायें हैं। अविनाशी बाप है और अविनाशी भाग्य की रेखायें हैं। इस समय श्रेष्ठ कर्म के आधार पर सर्व रेखायें प्राप्त होती हैं। इस समय का पुरुषार्थ अनेक जन्म की प्रालब्ध बना देती है।

बापदादा सभी बच्चों के इस समय भी जो प्रालब्ध अनेक जन्म मिलनी है वह इस जन्म में पुरुषार्थ की प्रालब्ध की प्राप्ति अभी देखने चाहते हैं। सिर्फ भविष्य नहीं लेकिन अभी भी यह सब रेखायें सदा अनुभव में आयें क्योंकि अभी के यह दिव्य संस्कार आपका नया संसार बना रहा है। तो चेक करो, चेक करना आता है ना! स्वयं ही स्वयं के चेकर बनो। तो सर्व भाग्य की रेखायें अभी भी अनुभव होती हैं? ऐसे तो नहीं समझते कि यह प्रालब्ध अन्त में दिखाई देगी? प्राप्ति भी अब है तो प्रालब्ध का अनुभव भी अभी करना है। भविष्य संसार के संस्कार अभी प्रत्यक्ष जीवन में अनुभव होना है। तो क्या चेक करो? भविष्य संसार के संस्कारों का गायन करते हो कि भविष्य संसार में एक राज्य होगा। याद है ना वह संसार! कितने बार उस संसार में राज्य किया है? याद है? कि याद दिलाने से याद आता है? क्या थे, वह स्मृति में है ना? लेकिन वही संस्कार अभी के जीवन में प्रत्यक्ष रूप में हैं? तो चेक करो अभी भी मन में, बुद्धि में, सम्बन्ध-सम्पर्क में, जीवन में एक राज्य है? वा कभी-कभी आत्मा के राज्य के साथ-साथ माया का राज्य भी तो नहीं है? जैसे भविष्य प्रालब्ध में एक ही राज्य है, दो नहीं है। तो अभी भी दो राज्य तो नहीं है? जैसे भविष्य राज्य में एक राज्य के साथ एक धर्म है, वह धर्म कौन सा है? सम्पूर्ण पवित्रता की धारणा का धर्म है। तो अभी चेक करो कि पवित्रता सम्पूर्ण है? स्वप्न में भी अपवित्रता का नामनिशान नहीं हो। पवित्रता अर्थात् संकल्प, बोल, कर्म और सम्बन्ध-सम्पर्क में एक ही धारणा सम्पूर्ण पवित्रता की हो। ब्रह्माचारी हो। अपनी चेकिंग करने आती है? जिसको अपनी चेकिंग करनी आती है वह हाथ उठाओ। आती है और करते भी हैं? करते हैं, करते हैं? टीचर्स को आता है? डबल फारेनर्स को आता है? क्यों? अभी की पवित्रता के कारण आपके जड़ चित्र से भी पवित्रता की मांग करते हैं। पवित्रता अर्थात् एक धर्म अब की स्थापना है जो भविष्य में भी चलती है। ऐसे ही भविष्य का क्या गायन है? एक राज्य, एक धर्म और साथ में सदा सुख-शान्ति, सम्पत्ति, अखण्ड सुख, अखण्ड शान्ति, अखण्ड सम्पत्ति। तो अब के आपके स्वराज्य के जीवन में, वह है विश्व राज्य और इस समय है स्वराज्य, तो चेक करो अविनाशी सुख, परमात्म सुख, अविनाशी अनुभव होता है? ऐसे तो नहीं, कोई साधन वा कोई सैलवेशन के आधार पर सुख का अनुभव तो नहीं होता? कभी दु:ख की लहर किसी भी कारण से अनुभव में नहीं आनी चाहिए। कोई नाम, मान-शान के आधार पर तो सुख अनुभव नहीं होता है? क्यों? यह नाम मान शान, साधन, सैलवेशन यह स्वयं ही विनाशी हैं, अल्पकाल के हैं। तो विनाशी आधार से अविनाशी सुख नहीं मिलता। चेक करते जाओ। अभी भी सुनते भी जाओ और अपने में चेक भी करते जाओ तो पता पड़ेगा कि अब के संस्कार और भविष्य संसार की प्रालब्ध में कितना अन्तर है! आप सबने जन्मते ही बापदादा से वायदा किया है, याद है वायदा? है याद वायदा कि भूल गया है? यही वायदा किया कि हम सभी बाप के साथी बन, विश्व कल्याणकारी बन नया सुख शान्तिमय संसार बनाने वाले हैं। याद है? याद है अपना वायदा? है याद? हाथ उठाओ। पीछे वाले भी उठा रहे हैं। यहाँ भी उठा रहे हैं, पक्का वायदा है या थोड़ा गड़बड़ हो जाती है? नया संसार अब परमात्म संस्कार के आधार से बनाने वाले हैं। तो सिर्फ अभी पुरुषार्थ नहीं करना है लेकिन पुरुषार्थ की प्रालब्ध भी अभी अनुभव करनी है। सुख के साथ शान्ति को भी चेक करो - अशान्त सरकमस्टांश, अशान्त वायुमण्डल उसमें भी आप शान्ति

सागर के बच्चे सदा कमल पुष्प समान अशान्ति को भी शान्ति के वायुमण्डल में परिवर्तन कर सकते हो? शान्त वायुमण्डल है, उसमें आपने शान्ति अनुभव की, यह कोई बड़ी बात नहीं है लेकिन आपका वायदा है अशान्ति को शान्ति में परिवर्तन करने वाले हैं। तो चेक करो - कर रहे हैं ना चेक? परिवर्तक हो? परवश तो नहीं हो ना? परिवर्तक हो। परिवर्तक कभी परवश नहीं हो सकता। इसी प्रकार से सम्पत्ति, अखुट सम्पत्ति, वह स्वराज्य अधिकारी की क्या है? ज्ञान, गुण और शक्तियां स्वराज्य अधिकारी की सम्पत्तियां यह हैं। तो चेक करो - ज्ञान के सारे विस्तार के सार को स्पष्ट जान गये हो ना? ज्ञान का अर्थ यह नहीं है कि सिर्फ भाषण किया, कोर्स कराया, ज्ञान का अर्थ है समझ। तो हर संकल्प, हर कर्म बोल ज्ञान अर्थात् समझदार, नॉलेजफुल बनके करते हैं? सर्वगुण प्रैक्टिकल जीवन में इमर्ज रहते हैं? सर्व हैं वा यथाशक्ति हैं? इसी प्रकार सर्व शक्तियां आपका टाइटिल है - मास्टर सर्वशक्तिवान, शक्तिवान नहीं हैं। तो सर्व शक्तियां सम्पन्न हैं? और दूसरी बात सर्व शक्तियां समय पर कार्य करती हैं? समय पर हाजिर होती हैं या समय बीत जाता है फिर याद आता है? तो चेक करो तीनों ही बातें एक राज्य, एक धर्म और अविनाशी सुख-शान्ति, सम्पत्ति। क्योंकि नये संसार में यह बातें जो अभी स्वराज्य के समय का अनुभव है वह नहीं हो सकेगा। अभी इन सभी बातों का अनुभव कर सकते हैं। अभी से यह संस्कार इमर्ज होंगे तब अनेक जन्म प्रालब्ध के रूप में चलेंगे। ऐसे तो नहीं समझते हैं कि धारण कर रहे हैं, हो जायेगा, अन्त तक तो हो ही जायेंगे!

बापदादा ने पहले से ही इशारा दे दिया है कि बहुतकाल का अभी का अभ्यास बहुतकाल की प्राप्ति का आधार है। अन्त में हो जायेगा नहीं सोचना, हो जायेगा नहीं, होना ही है। क्यों? स्वराज्य का जो अधिकार है वह अभी बहुतकाल का अभ्यास चाहिए। अगर एक जन्म में अधिकारी नहीं बन सकते, अधीन बन जाते तो अनेक जन्म कैसे होंगे! इसलिए बापदादा सभी चारों ओर के बच्चों को बार-बार इशारा दे रहे हैं कि अभी समय की रफ्तार तीव्रगति में जा रही है इसलिए सभी बच्चों को अभी सिर्फ पुरुषार्थी नहीं बनना है लेकिन तीव्र पुरुषार्थी बन, पुरुषार्थ की प्रालब्ध का अभी बहुतकाल से अनुभव करना है। तीव्र पुरुषार्थ की निशानियां बापदादा ने पहले भी सुनाई हैं। तीव्र पुरुषार्थी सदा मास्टर दाता होगा, लेवता नहीं देवता, देने वाला। यह हो तो मेरा पुरुषार्थ हो, यह करे तो मैं भी करूं, यह बदले तो मैं भी बदलूं, यह बदले, यह करे, यह दातापन की निशानी नहीं है। कोई करे न करे, लेकिन मैं बापदादा समान करूं, ब्रह्मा बाप समान भी, साकार में भी देखा, बच्चे करें तो मैं करूं, कभी नहीं कहा, मैं करके बच्चों से कराऊं। दूसरी निशानी है तीव्र पुरुषार्थ की, सदा निर्मान, कार्य करते भी निर्मान, निर्माण और निर्मान दोनों का बैलेन्स चाहिए। क्यों? निर्मान बनकर कार्य करने में सर्व द्वारा दिल का स्नेह और दुआयें मिलती हैं। बापदादा ने देखा कि निर्माण अर्थात् सेवा के क्षेत्र में आजकल सभी अच्छे उमंग उत्साह से नये-नये प्लैन बना रहे हैं। इसकी बापदादा चारों ओर के बच्चों को मुबारक दे रहे हैं।

बापदादा के पास निर्माण के, सेवा के प्लैन बहुत अच्छे-अच्छे आये हैं। लेकिन बापदादा ने देखा कि निर्माण के कार्य तो बहुत अच्छे लेकिन जितना सेवा के कार्य में उमंग-उत्साह है उतना अगर निर्मान स्टेज का बैलेन्स हो तो निर्माण अर्थात् सेवा के कार्य में और सफलता और ज्यादा प्रत्यक्ष रूप में हो सकती है। बापदादा ने पहले भी सुनाया है - निर्मान स्वभाव, निर्मान बोल और निर्मान स्थिति से सम्बन्ध-सम्पर्क में आना, देवताओं का गायन करते हैं लेकिन है ब्राह्मणों का गायन, देवताओं के लिए कहते हैं उनके मुख से जो बोल निकलते वह जैसे हीरे मोती, अमूल्य, निर्मल वाणी, निर्मल स्वभाव। अभी बापदादा देखते हैं, रिजल्ट सुना दें ना, क्योंकि इस सीजन का लास्ट टर्न है। तो बापदादा ने देखा कि निर्मल वाणी, निर्मान स्थिति उसमें अभी अटेन्शन चाहिए।

बापदादा ने पहले खजाने के तीन खाते जमा करो, यह पहले बताया है। तो रिजल्ट में क्या देखा? तीन खाते कौन से हैं? वह तो याद होगा ना! फिर भी रिवाइज कर रहे हैं - एक है अपने पुरुषार्थ से जमा का खाता बढ़ाना। दूसरा है - सदा स्वयं भी सन्तुष्ट रहे और दूसरे को भी सन्तुष्ट करे, भिन्न-भिन्न संस्कार को जानते हुए भी सन्तुष्ट रहना और सन्तुष्ट करना इससे दुआओं का खाता जमा होता है। अगर किसी भी कारण से सन्तुष्ट करने में कमी रह जाती है तो पुण्य के खाते में जमा नहीं होता। सन्तुष्टता पुण्य की चाबी है। चाहे रहना, चाहे करना। और तीसरा है - सेवा में भी सदा नि:स्वार्थ, मैं पन नहीं। मैंने किया, या मेरा होना चाहिए, यह मैं और मेरापन जहाँ सेवा में आ जाता है वहाँ पुण्य का खाता जमा नहीं होता। मेरापन, अनुभवी हो यह रॉयल रूप का भी मेरापन बहुत है। रॉयल रूप के मेरेपन की लिस्ट साधारण मेरेपन से लम्बी है। तो जहाँ भी मैं और मेरेपन का स्वार्थ आ जाता है, नि:स्वार्थ नहीं है वहाँ पुण्य का खाता

कम जमा होता है। मेरेपन की लिस्ट फिर कभी सुनायेंगे, बड़ी लम्बी है और बड़ी सूक्ष्म है। तो बापदादा ने देखा कि अपने पुरुषार्थ से यथाशक्ति सभी अपना-अपना खाता जमा कर रहे हैं लेकिन दुआओं का खाता और पुण्य का खाता वह अभी भरने की आवश्यकता है। इसलिए तीनों खाते जमा करने का अटेन्शन। संस्कार वैरायटी अभी भी दिखाई देंगे, सबके संस्कार अभी सम्पन्न नहीं हुए हैं लेकिन हमारे ऊपर औरों के कमजोर स्वभाव, कमजोर संस्कारों का प्रभाव नहीं पड़ना चाहिए। मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, कमजोर संस्कार शक्तिशाली नहीं हैं। मुझ मास्टर सर्वशक्तिवान के ऊपर कमजोर संस्कार का प्रभाव नहीं पड़ना चाहिए। सेफ्टी का साधन है बापदादा की छत्रछाया में रहना। बापदादा के कम्बाइण्ड रहना। छत्रछाया है श्रीमत।

अभी इस सीजन का लास्ट टर्न है, दूसरी सीजन समय प्रमाण चालू होगी लेकिन जैसे नई सीजन मिलन मनाने की चालू होगी, उसमें नवीनता क्या दिखायेंगे? अपने लिए कोई नया प्लैन बनाया है? जैसे सेवा के लिए नये-नये प्लैन सोचते हो ना, तो स्व के प्रति, जो पुरानी बातें हैं उसमें नवीनता क्या सोची है? अगर नहीं सोची भी है तो बापदादा इशारा दे रहे हैं कि स्व प्रति हर एक को संकल्प, बोल, सम्पर्क-सम्बन्ध, कर्म में नवीनता लाने का प्लैन बनाना ही है। बापदादा पहले रिजल्ट देखेंगे क्या नवीनता लाया? क्या पुराना संस्कार दृढ़ संकल्प से परिवर्तन किया? यह रिजल्ट पहले देखेंगे। क्या सोचते हो? ऐसा करें? करें? हाथ उठाओ जो कहते हैं करेंगे, करेंगे? अच्छा। करेंगे या दूसरे को देखेंगे? क्या करेंगे? दूसरे को नहीं देखना, बापदादा को देखना, अपनी बड़ी दादी को देखना। कितनी न्यारी और प्यारी स्टेज है। बापदादा कहते हैं अगर किसको मैं और हद का मेरापन से न्यारा देखना हो तो अपने बापदादा के दिलतख्तनशीन दादी को देखो। सारी लाइफ में हद का मेरापन, हद का मैं-पन से न्यारी रही है, उसकी रिजल्ट बीमारी कितनी भी है लेकिन दु:ख दर्द की भासना से न्यारी है। एक ही शब्द पक्का है, कोई भी पूछता दादी कुछ दर्द है, दादी कुछ हो रहा है? क्या उत्तर मिलता? कुछ नहीं। क्योंकि निरस्वार्थ और दिल बड़ी, सर्व को समाने वाली, सर्व की प्यारी, इसकी प्रैक्टिकल निशानी देख रहे हैं। तो जब ब्रह्मा बाप की बात कहते हैं, तो कहते हैं उसमें तो बाप था ना, लेकिन दादी तो आपके साथ प्रभू पालना में रही, पढ़ाई में रही, सेवा में साथी रही, तो जब एक बन सकता है, नि:स्वार्थ स्थिति में तो क्या आप सभी नहीं बन सकते? बन सकते हैं ना! बापदादा को निश्चय है कि आप ही बनने वाले हैं। कितने बार बने हैं? याद है? अनेक कल्प बाप समान बने हैं और अभी भी आप ही बनने वाले हो। इसी उमंग से, उत्साह से उड़ते चलो। बाप को आपमें निश्चय है तो आप भी अपने में सदा निश्चयबुद्धि, बनना ही है ऐसा निश्चयबुद्धि बन उड़ते चलो। जब बाप से प्यार है, प्यार में 100 परसेन्ट से भी ज्यादा है, ऐसे कहते हो। यह ठीक है? जो भी सभी बैठे हैं वा जो भी अपने-अपने स्थान पर सुन रहे हैं, देख रहे हैं वह सभी प्यार की सबजेक्ट में अपने को 100 परसेन्ट समझते हैं? वह हाथ उठाओ। 100 परसेन्ट? (सभी ने उठाया) अच्छा। पीछे वाले लम्बे हाथ उठाओ, हिलाओ। इसमें तो सभी ने हाथ उठाया। तो प्यार की निशानी है समान बनना। जिससे प्यार होता है उस जैसा बोलना, उस जैसा चलना, उस जैसा सम्बन्ध-सम्पर्क निभाना, यह है प्यार की निशानी।

तो अगली सीजन में सभी की सूरत में बाप की सूरत दिखाई दे। हर एक के सम्बन्ध-सम्पर्क में बाप जैसे संस्कार दिखाई दें। यह है स्नेह का रिटर्न, स्वयं को टर्न करना। देखो, आप सबके एक संकल्प की वृत्ति ने, योग की शक्ति ने दादी के परिवर्तन में (तबियत के परिवर्तन में) चार चांद लगा दिये। साइलेन्स की शक्ति से एकमत होके एक वृत्ति से विधि ने प्रत्यक्ष फल दिखाया, इसकी मुबारक हो सभी को। हाँ भले ताली बजाओ। जब एक बात का प्रत्यक्ष प्रमाण देख लिया, दृढ़ संकल्प संगठन की साइलेन्स, याद की शक्ति का। जब एक प्रमाण देख लिया तो आगे के लिए स्व परिवर्तन के लिए, अपने को देखना है, अपने को बदलना है, अगर झुकना पड़े तो झुकना है लेकिन परिवर्तन करने से स्व को हटाना नहीं है। ऐसे दृढ़ संकल्प कर हर एक को सबूत देना है क्योंकि सभी सपूत बच्चे हो। सपूत बच्चे का काम ही है प्रत्यक्ष सबूत देना। अच्छा।

जो बापदादा ने होम वर्क दिया था - 15 दिन के लिए। एक बात का होमवर्क दिया, याद रहा? जिसने संकल्प तक भी न दु:ख दिया, न दु:ख लिया, स्वप्न में भी नहीं, संकल्प में भी नहीं, वह हाथ उठाओ। उठ के खड़े हो। जिन्होंने पास मार्क्स ली, थोड़ी मार्क्स वाले नहीं, पास मार्क्स ली, क्यों! पहली लाइन ने नहीं ली। पहली लाइन वाले क्यों नहीं उठते! अगर किया है तो उठो। अगर दु:ख नहीं दिया है तो उठो। स्वप्न में भी, संकल्प में भी नहीं, फिर तो ताली बजाओ इन्हों के लिए। डबल फारेनर्स ने भी उठाया है। अच्छा। अच्छा। अमर रहेंगे ना! अमरभव का वरदान याद रखना।

अच्छा।

सेवा का टर्न ईस्टर्न ज़ोन का है,(बंगाल-बिहार, उड़ीसा, आसाम, नेपाल, तामिलनाडु ज़ोन):- यह तो बहुत अच्छा, सभी ज़ोन वालों ने चांस लेने की विधि अच्छी बनाई है। बंगाल, बिहार, उड़ीसा, आसाम, नेपाल और तामिलनाडु कितनी राजधानियां हैं। बहुत हैं। तो सेवा में चमत्कारी सेवा का चांस है। अच्छा आप सबने कोई नई इन्वेन्शन निकाली है, सेवा की नवीनता सोची है? ज़ोन के सभी तरफ की विशेष टीचर्स हाथ उठाओ। भिन्न-भिन्न स्थान की हेड, एक ज़ोन हेड नहीं, लेकिन भिन्न-भिन्न स्थान की एक एक हेड। अच्छा। तो आप सभी ने सेवा में नवीनता का प्लैन क्या बनाया? कोई बनाया है? आगे वाली टीचर्स बनाया है? कि बना रहे हैं? बना रहे हैं। क्योंकि आपका ज़ोन जो है उसमें विस्तार बहुत है, कितनी आत्मायें हैं, कितने देश हैं, कितने गांव हैं, तो ऐसा प्लैन बनाओ, जैसे बापदादा ने देखा तो फारेन में अफ्रीका वालों ने सिर्फ प्लैन नहीं बनाया, लेकिन प्रैक्टिकल में सब एरिया कवर की है, तो आपकी तरफ तो बहुत एरिया है तो कितने लोग समय समाप्त होने पर वंचित रह जायेंगे ना! तो मिल करके ऐसा कोई प्लैन बनाओ, ऐसे ही बापदादा के पास रशिया वालों का भी प्लैन आया और आज समाचार सुनाया कि आज से उन्होंने प्रोग्राम चालू कर दिया है। आज गांव वालों ने भी सुनाया (ग्राम विकास प्रभाग की ओर से इस वर्ष अखिल भारतीय मोटर साइकिल अभियान निकालने के बारे में सन्देशी द्वारा बापदादा को सन्देश भेजा गया था) तो बापदादा के पास समाचार पहुंचा कि इन्डिया में, हर ज़ोन के गांव-गांव में सन्देश पहुंचाने के लिए मोटरसाइकिल यात्रा का प्रोग्राम बनाया है। सभी ज़ोन मिलकर करेंगे। तो आप भी ऐसा आपस में प्लैन बनाओ, कोई एरिया रह नहीं जाये, कम से कम सन्देश तो मिल जाये, नहीं तो आपको बहुत उल्हनें मिलेंगे। हमारा बाबा आया, और हमें सूचना नहीं दी। और दूसरा तामिलनाडु भी है, वह भी देखे ऐसा प्लैन बनाया है? हर ज़ोन को ऐसा प्लैन आपस में मिलकर बनाना ही चाहिए। खुशी होती है, अपने मन में सैटिस्फैक्शन होता है हमने अपनी सेवा का कार्य सन्देश देने का तो पूरा किया। तो अभी बनाना। बना सकते हैं ना! बंगाल वाले हाथ उठाओ। बिहार वाले हाथ उठाओ, नेपाल वाले, उड़ीसा वाले तो बहादुर हैं। और भी हैं ना, आसाम। देखो कितनी एरिया ली है, बहुत बड़ी एरिया ली है, बड़ा राजा बनना है ना। तो दूसरी सीजन में यह सन्देश देने का कार्य का प्लैन बनाके प्रैक्टिकल में शुरू कर लेना। कर सकते हैं ना! कर सकते हैं? क्योंकि बापदादा को भी कोई बच्चे का उल्हना अच्छा नहीं लगता। प्लैन बापदादा ने सुने हैं, प्लैन सभी ने बहुत अच्छा बनाया है लेकिन बापदादा हमेशा कहते हैं कि प्लैन के साथ प्लेन बुद्धि। प्लेन बुद्धि और प्लैन दोनों साथ-साथ हों। तो सफलता बहुत सहज और श्रेष्ठ निकलती है। तो तामिलनाडु भी करेगा ना! करेंगे? देखो, बापदादा ने सभी बच्चों को उमंग-उत्साह और हिम्मत का वरदान एक जैसा दिया है। किसको ज्यादा, किसको कम नहीं दिया है। तो जहाँ उमंग-उत्साह है, वहाँ हिम्मत हैं तो क्या नहीं हो सकता है। असम्भव भी सम्भव हो सकता है।

सभी पूछते हैं आगे क्या करना है? बापदादा का संकल्प है कि अभी ज्यादा में ज्यादा बनी बनाई स्टेज पर चांस लो। उन्हों को सहयोगी बनाओ और आप सकाश दो। 70 साल अपने हिम्मत से किया। अभी दूसरों का भाग्य बनाओ। भाग्य बनाने का चांस दो उन्हों को। भाग्य बनाने के लिए सिर्फ स्वयं सकाश कौन सी दो? एक तो रहमदिल बहुत बनो। क्षमा में बाप के साथी बनो। शक्तिशाली वृत्ति से वायुमण्डल ऐसा बनाओ जो स्वयं आफर करें, ऐसे आफर चारों ओर से आये। हर ज़ोन में आफर आये, यहाँ आओ, यहाँ आओ, यहाँ आओ, तब यही है, यही है, यह स्वत: ही प्रसिद्ध हो जायेगा। अभी उन्हों को भी सहयोगी स्नेही बनने का चांस दो। उन्हों को भी चांस दो क्योंकि बापदादा ने देखा है कि स्नेही, सहयोगी हर ज़ोन में यथा शक्ति है लेकिन उन्हों को सेवा के साथी बनाओ। उन्हों को भी उमंग उत्साह के पंख दो। हैं चारों ओर क्योंकि बापदादा चक्कर तो लगाते हैं ना! तो अपने बच्चों को भी देखते हैं और स्नेही-सहयोगी आत्माओं को भी देखते हैं। बापदादा की नज़र में हैं लेकिन चांस नहीं दिया है, प्रैक्टिकल चांस नहीं लिया है। तो यह वर्ष उन्हों को निमित्त बनाओ, स्नेही-सहयोगियों को उमंग-उत्साह में लाओ। लाना पड़ता है। नहीं तो वह भी आपको उल्हना देंगे कि हमको तो आपने बताया ही नहीं कि ऐसा भी कर सकते हैं। इसलिए अभी चांस देने वाले बनो। कैसे फारेन वाले हो सकता है ना? हो सकता है फारेन वाले? फारेन के भाई उठो। जो सेवा में निमित्त हैं वह उठो। देखो कितने अच्छे अच्छे सकाश देने वाली आत्मायें हो। तो अभी देखेंगे सबसे कौन से ज़ोन ने बनी बनाई स्टेज ली है। जैसे एक वर्ष में मेगा प्रोग्राम करने की धुन लगा दी थी। ऐसे अभी बनी बनाई स्टेज का चांस लेने की धूम मचाओ। हो सकता है? फारेन वाले हो सकता है? हो सकता है! आपको सामने कह रहे हैं (आस्ट्रेलिया के ब्रायन को कह रहे हैं) कमाल

करके दिखाना। दादी जानकी की राय से करते चलो। बापदादा साथी दे रहे हैं। सभी कर सकते हैं क्योंकि सभी पुराने और सर्विसएबुल हो। (जयन्ती बहन ने सुनाया - विदेश में इस वर्ष ऐसे इन्टरनेशनल 4 निमन्त्रण मिले हैं, जिसमें दादियां आकर आशीर्वाद दें, लण्डन में जो बाबा का दुकान है उसको सेवा के लिए गोल्ड मैडल मिला है) अच्छा है मुबारक हो। सभी के तालियों की मुबारक उसको दे देना।

500 डबल विदेशी आये हैं: बापदादा सदा कहता है कि डबल विदेशी मधुबन का विशेष श्रृंगार हैं। जैसे देश अपने-अपने उमंग-उत्साह से बढ़ रहे हैं ऐसे विदेश भी कम नहीं हैं। विदेश ने भी थोड़े समय में विस्तार अच्छा किया है। अभी विदेश को सिर्फ एक ही इनाम लेना है, बतायें कौन सा इनाम लेना है, खास डबल विदेशियों को? चारों ओर स्व और सेवा के बैलेन्स का इनाम लेना है। पसन्द है? विदेशी पसन्द है? लेना है? हाथ उठाओ। वेलकम। मुबारक इन एडवांस मुबारक। (जर्मनी में एक बड़े गुरू ने अपने प्रोग्राम में ब्रह्माकुमारियों को प्रवचन के लिए निमन्त्रण दिया है) बहुत अच्छा। ऐसे तो कभी कभी इन्डिया में भी मिलते हैं। लेकिन अभी लहर फैलाओ। कभी कभी तो मिलते हैं लेकिन अभी चारों ओर हर ज़ोन में देश में विदेश में यह लहर फैलाओ। अच्छा।

मधुबन निवासी क्या करेंगे? क्या करेंगे मधुबन वाले! बताओ मधुबन वाले क्या करेंगे! आबू में स्टेज बनायेंगे? कोई नवीनता करो मधुबन वाले। मधुबन की एक विशेषता तो बहुत अच्छी है, जो भी आते हैं, जो भी ज़ोन वाले सेवा करते हैं, सेवा वहाँ करते हैं लेकिन जो छाप लगती है वह मधुबन में लगती है। तो मधुबन वाले वायुमण्डल और वायब्रेशन, स्वच्छता और स्नेह का छाप अच्छी लगाते हैं। जैसे आप मधुबन घर में रहते हो ना, ऐसे जो आने वाले हैं उसको भी घर का बना देते हो, यह मधुबन की विशेषता है। करते हो ना ऐसे? सेवा अच्छी करते हो ना! करते हो ना? यह सब मधुबन वाले बैठे हैं। मधुबन वाले उठो, अच्छा। बाहर भी मधुबन वाले बैठे होंगे। बापदादा को पता है बाहर बहुत बैठते हैं। अच्छा है वह लाते हैं, आप उन्हों को उड़ाते रहो। डबल लाइट बनाके उन्हों की ऐसी पालना करो खिलाओ, पिलाओ, अपना अनुभव सुनाओ, उनको छाप लगा दो। करते हो ना सेवा? करते हैं सभी। वायुमण्डल की सेवा तो करते हैं ना! अच्छा है, दादियां भी उठी हैं, मुबारक हो। दादियों की ताली तो बजाओ। अच्छा है। मधुबन, मधुबन ही है और आखिर में सभी को कहाँ पहुंचना है, मधुबन में ही पहुंचेंगे ना। सेवा अच्छी करते हो। ड्युटी अपनी अच्छी बजाते हो, सिर्फ जो आज बापदादा ने कहा है ना, स्व तीव्र पुरुषार्थ और सेवा दोनों का बैलेन्स इसका आपस में संगठन कर बैलेन्स करके दिखाओ। अगली सीजन में क्या करेंगे? मधुबन वाले करेंगे? आपस में मीटिंग कर दादियों का भी सहयोग लेकर बैलेन्स का जलवा दिखाओ। जिसको देखे वह जैसे कोई हालचाल पूछते हैं ना, आपका हाल क्या है? आपका चाल क्या है? तो जो भी आवे वह सबका कुशल हाल और फरिश्ते की चाल देखे। जहाँ देखे वहाँ फरिश्ते की चाल, चलने की चाल नहीं, उड़ने की चाल। चलने वाले तो रह जायेंगे, उड़ने वाले बाप के साथ जायेंगे। तो मधुबन में रहने वालों को पहला चांस लेना है, दादियों के साथ रहते हो, बाप के साथ उड़ने का चांस लें, पीछे पीछे नहीं। लेंगे ना चांस? मीटिंग करेंगे? हाँ बताओ ऐसी मीटिंग करेंगे? अच्छा। एक मास में रिजल्ट देंगे। एक मास ठीक है? दृढ़ निश्चय से हाथ उठा रहे हो ना! फिर तो बापदादा कोई न कोई गिफ्ट देगा मधुबन वालों को। अच्छे हैं। मधुबन निवासी टाइटिल ही बहुत बढ़िया है। तो पक्का है ना! अभी पक्का। कुछ भी जाये, दूसरे को नहीं देखना, अपने को देखना, मुझे करना है, मुझे बदलना है। दूसरा बदले तो मैं बदलूं, नहीं। ऐसे करेंगे? करेंगे? पीछे वाले करेंगे? पक्का? पक्का का ऐसा हाथ करो। देखो सभी को कितनी खुशी हो रही है, मधुबन वालों का नाम सुनकर खुश हो जाते हैं। अच्छा।

7 अप्रैल 2007 से वार्षिक मीटिंग रखी गयी है उसके लिए बापदादा की प्रेरणा:- उस मीटिंग में जो बापदादा ने सेवा का साधन बताया है, बनी बनाई स्टेज लेने का और साथ में पुरुषार्थ और उसकी प्रालब्ध दोनों का प्रैक्टिकल स्वरूप प्रत्यक्ष करने का। जो मीटिंग में आये उसको रिजल्ट देनी है। वह आपस में राय करके दो मास, तीन मास, एक मास फिक्स करना और उसकी रिजल्ट प्रैक्टकिल में लाना। वह बापदादा देखेंगे क्योंकि यह मीटिंग है विशेष निमित्त आत्माओं की। अगर निमित्त आत्माओं ने बैलेन्स की विशेषता दिखाई तो उसका वायुमण्डल बहुत जल्दी और पावरफुल फैलेगा। अपने को प्रत्यक्ष करेंगे तो बाप की प्रत्यक्षता भी बहुत सहज और जल्दी होगी। मीटिंग में जिसका भी नाम रखा है वह जिम्मेवार है, सिर्फ सुनने वा सुनाने के लिए नहीं लेकिन जिम्मेवार है बैलेन्स रखने और रखाने के। यह मीटिंग का विशेष कार्य है। और बापदादा सन्देशी द्वारा भी रिजल्ट सुनते रहेंगे फिर आगे के लिए प्रोग्राम देंगे।

बापदादा का लक्ष्य तो सभी ने समझ लिया कि अभी बापदादा हर एक बच्चे को अधिकारी रूप में देखने चाहते

हैं। किसी भी सेवा में या पुरुषार्थ में परवश नहीं। अधिकारी। एक एक राज्य अधिकारी हो। सभी राजे हो ना! कि राजे नहीं हो? राजयोगी हो? प्रजायोगी तो नहीं हैं ना! तो राज्य अधिकारी देखने चाहते हैं। ऐसे नहीं क्या करूं, हो गया। चाहता नहीं था हो गया, यह नहीं। स्व अधिकारी। पुराने स्वभाव संस्कार के अधीन नहीं, अधिकारी। ठीक है। अच्छा।

अभी बापदादा ने जो ड्रिल बताई थी याद है? 5-5 मिनट सारे दिन में अनेक बार ड्रिल करनी है। वह किया है? जिसने वह ड्रिल की है, वह हाथ उठाओ। थोड़ों ने हाथ उठाया है। क्यों? थोड़ा टाइम किया है? बहुत टाइम नहीं किया है तो अभी क्या करेंगे? कम से कम बतायें, कम से कम 8 बारी सारे दिन में कर सकते हो? कर सकते हो? इसमें हाथ उठाओ। करेंगे? करेंगे? अच्छा है। फिर जब सीजन शुरू होगी ना, जब दूसरी सीजन शुरू होगी उसमें बापदादा सभी से रिजल्ट मंगायेंगे। पीछे एक बात बतायेंगे, अभी नहीं बतायेंगे। पीछे बात बतायेंगे। मधुबन वाले तो करेंगे ना? पहला नम्बर। तो इस वर्ष का होमवर्क, इस सीजन का होमवर्क दूसरी सीजन तक कम से कम 8 बारी यह ड्रिल जरूर करनी है। जरूर, देखेंगे नहीं, करनी ही है। चाहे मिस हो जाए तो एक घण्टे में अनेक बार करके पूरा करना। नींद पीछे करना। सोना पीछे। पहले ड्रिल, आठ बारी पूरा करके पीछे सोना। ठीक है ना। टीचर्स! पंखे हाथ में लिये हैं, गर्मी हो रही है। बहुत अच्छा, टीचर्स का वायुमण्डल स्वत: ही फैलेगा।

आज बापदादा सभी को यह देखना चाहते हैं, अभी अभी देखना चाहते हैं कि एक सेकण्ड में स्वराज्य के सीट पर कन्ट्रोलिंग पावर, रूलिंग पावर के संस्कार में इमर्ज रूप से सेकण्ड में बैठ सकते हैं! तो एक सेकण्ड में दो तीन मिनट के लिए राज्य अधिकारी की सीट पर सेट हो जाओ। अच्छा।

चारों ओर के बच्चों की यादप्यार के पत्र और साथ-साथ जो भी साइंस के साधन हैं उन्हों द्वारा यादप्यार बापदादा के पास पहुंच गई है। अपने दिल का समाचार भी बहुत बच्चे लिखते भी हैं और रूहरिहान में भी सुनाते हैं। बापदादा उन सभी बच्चों को रेसपान्ड दे रहे हैं कि सदा सच्ची दिल पर साहेब राज़ी है। दिल की दुआयें और दिल का दुलार बापदादा का विशेष उन आत्माओं प्रति है। चारों ओर के जो भी समाचार देते हैं, सभी अच्छे अच्छे उमंग-उत्साह के प्लैन जो भी बनाये हैं, उसकी बापदादा मुबारक भी दे रहे हैं और वरदान भी दे रहे हैं, बढ़ते चलो, बढ़ाते चलो।

चारों ओर के बापदादा के कोटों में कोई, कोई में भी कोई श्रेष्ठ भाग्यवान बच्चों को बापदादा का विशेष यादप्यार, बापदादा सभी बच्चों को हिम्मत और उमंग-उत्साह की मुबारक भी दे रहे हैं। आगे तीव्र पुरुषार्थी बनने की, बैलेन्स की पदमा-पदमगुणा ब्लैसिंग भी दे रहे हैं। सभी के भाग्य का सितारा सदा चमकता रहे और औरों का भाग्य बनवाते रहें इसकी भी दुआयें दे रहे हैं। चारों ओर के बच्चे अपने अपने स्थान पर सुन भी रहे हैं, देख भी रहे हैं और बापदादा भी सभी चारों ओर के दूर बैठे बच्चों को देख-देख खुश हो रहे हैं। देखते रहो और मधुबन की शोभा सदा बढ़ाते रहो। तो सभी बच्चों को दिल की दुआओं साथ नमस्ते।

दादियों से:- आप सबके साइलेन्स बल ने डाक्टरों को टच किया। नई नई इन्वेन्शन निकाल रहे हैं। कोई न कोई ऐसी बात निकाली है जो सहज हो रहा है। (मोहिनी बहन ने सभी की याद दी) सभी बहुत अच्छी सेवा कर रहे हैं, दिल से सेवा कर रहे हैं। (अंकल-आंटी ने याद दी है) उन्हों को विशेष यादप्यार और टोली भेजना। अच्छा है स्थापना के कार्य में निमित्त बनें हैं। फारेन में वी.आई.पी के रूप में यह पहला मिसाल। सेवा के निमित्त बनें। अच्छा। दादियां तो सभी तन्दरूस्त हो गई हैं।

(परदादी से) कमाल करके दिखाई। (4 महीना अहमदाबाद में रही) वह भी सेवा की, ऐसे नहीं रही, सेवा की है। (बाबा की गोदी में आ गई) सदा बाबा की गोदी में रहती है। अच्छा।

योगिनी बहन:- अच्छी हिम्मत रखी है, प्यार है मेहनत नहीं। यह तो बाम्बे वालों को लिफ्ट मिली है। आपने हिम्मत अच्छी रखी है।

शान्तामणि दादी: इसने कमाल की। डाक्टर भी मानते हैं यह विल पावर है। तो यह विल पावर की प्रत्यक्षता दिखाई, इसकी मुबारक हो बहुत। एक एक्जैम्पुल तो बनी। विल पावर क्या चीज़ होती है उसका एक्जैम्पुल बनी। बापदादा को बहुत अच्छा लगा। उसकी मुबारक है।

हर निमित्त दादी की विशेषता है। और देखो कोई भी दादी नहीं होती है तो सब कहते हैं खाली खाली हैं, 1000 रहे पड़े हैं फिर भी कहते हैं खाली है। तो जहाँ दादियां हैं वहाँ रौनक है। ऐसे ही सभी को सिखाओ। ऐसा कोई ग्रुप

तैयार करो, बापदादा बहुत इनाम देगा, ऐसा ग्रुप तैयार करो। पाण्डवों को भी ऐसा ग्रुप तैयार करना है जिसमें बस एक दो को हाँ जी, हाँ जी करें और हजूर हाजिर। देखेंगे। दादियां ग्रुप पहले तैयार करती या पाण्डव तैयार करते। निमित्त दादियां भले हो लेकिन आपस में भी हिम्मत रखनी पड़े। हिम्मत आपकी मदद दादियों की। बापदादा तो है ही। कोई ग्रुप जरूर चाहिए। पाण्डवों का भी ग्रुप चाहिए शक्तियों का भी चाहिए, इससे वायुमण्डल बहुत जल्दी फैलेगा। अच्छा है।

डा.अशोक मेहता से:- एवररेडी का प्रैक्टिकल रूप दिखा दिया। ऐसे ही पुरुषार्थ में भी एवररेडी। अच्छा है हॉस्पिटल एक एक्जैम्पुल है। इस हॉस्पिटल में ऐसा वायुमण्डल बनाओ जो सभी को एड्रेस मिले कि अगर आपको देखना हो कि कैसे सहज योगी और सहज धारणा स्वरूप सेवाधारी हैं, लेकिन सेवा करते हुए भी योगी, ऐसा एक्जैम्पुल सभी वर्कर्स सहित बनाओ। ऐसा ग्रुप बनाओ जो सभी को एड्रेस देवे कि देखो कर्म करते भी ऐसे हैं। ऐसी कोई नवीनता करके दिखाओ। हॉस्पिटल का काम तो चलता रहेगा लेकिन आप कोई नवीनता करके दिखाओ। ऐसा कोई ग्रुप बनाओ फिर बापदादा के पास ले आना जो कर्मयोगी की जीवन बतायें। कहाँ भी करो लेकिन जैसे कहते हैं ना यह दवाई इस हॉस्पिटल में अच्छी मिलती है यह आपरेशन यहाँ अच्छा होता है, ऐसे यह प्रसिद्ध हो जाए कर्मयोगी ग्रुप अगर देखना है तो यहाँ देखो। यह करके दिखाओ। (आपकी आशीर्वाद चाहिए) बापदादा की आशीर्वाद से ही पैदा हुए हो। पैदा ही आशीर्वाद से हुए हो। पैदा भी हो गये पले भी हो। अच्छा है ज्यादा नहीं फंसाओ अपने को, कोई नवीनता करके दिखाओ। अच्छा।

बृजमोहन भाई से:- सेवा हो रही है लेकिन अभी कोई सेवा की नवीनता दिखाओ। नवीनता यह करके दिखाओ जो स्नेही सहयोगी हैं ना, हर वर्ग का वह ग्रुप ले आओ। दिल्ली में अगली सीजन में ग्रुप बनाओ ऐसा, हर वर्ग का हो। और छोटा ग्रुप बनाओ तो आपको सब कापी करेंगे।

रमेश भाई से:- अच्छा है बाम्बे में भी कोई ऐसा प्लैन बनाओ जो शार्ट भी हो नवीन भी हो।

डा.प्रताप भाई से:- हॉस्पिटल वालों को विशेष यादप्यार देना और आप भी बहुत अच्छा कर रहे हो। सुनो नहीं किसका। बापदादा जानते हैं आप क्या कर रहे हो कितना कर रहे हो। कोई फिकर नहीं करो उड़ते रहो। बापदादा का सर्टीफिकेट ठीक है।

भोपाल भाई– शान्तिवन की शोभा है ना। सभी को सुख तो मिला ना। तो उसकी दुआयें मिलती हैं।

गोलक भाई– यह भी ठीक है, थकते तो नहीं हैं। हिम्मत आपकी मदद बाप की। अभी लक्ष्य अच्छा रखा है, और होता जायेगा। (मीटिंग की थी) रिजल्ट बताना दादियों को।

कुछ वी.आई.पीज बापदादा से मिल रहे हैं

* देखो आप लोग सबसे ज्यादा सेवा कर सकते हो, क्योंकि आप न्युटरल होके अपने अनुभव से औरों को अनुभवी बना सकते हैं। कई ज्ञान नहीं सुनने चाहते लेकिन अनुभव सुनने चाहते हैं। तो आप सभी अपने अनुभव के आधार से सेवा कर सकते हैं। ऐसा माइक बनो, माइट वाला माइक। जैसे यह लाइट वाला माइक है ना, आप माइट वाला माइक बनो, बन सकते हैं। कितना अच्छा बन सकते हैं। कितनी माताओं का कल्याण कर सकती हो। माताओं को जगाओ। शिव शक्ति बनाओ। यह यूथ को जगाये। सभी सेवा कर सकते हो। और बापदादा की मुबारक है।

* आप लोगों का लक कितना बड़ा है जो कहा जाता है कोटों में कोई, तो आप कोई हो। अभी क्या बनना है! कोई में भी कोई, बनना है ना! कोटों में कोई तो बन गये, लेकिन अभी कोई में भी कोई बनना है। तो क्या बनना है? सेवा करनी है ना। अपने भाग्य का, प्राप्ति का अनुभव सुनाओ सभी को। क्योंकि प्रैक्टकिल अनुभव का प्रभाव जल्दी पड़ता है और कुछ भी नहीं सुनाओ। मुझे क्या मिला! क्या अन्तर आया लाइफ में, वह सुनने से आपका पुण्य बन जायेगा। पुण्य का खाता जमा करना है ना। भविष्य बनाना है ना। तो वर्तमान खुशी मिलेगी और भविष्य के लिए पुण्य जमा होगा, डबल फायदा। भाषण कोई सुने नहीं सुने, कहानी आपकी सुनेंगे, क्योंकि आपके जीवन की कहानी हो गई तो कहानी सब रूचि से सुनते हैं और कहानी याद भी आती है। तो ऐसी सेवा करो। कर सकते हैं ना? कर सकते हैं।

* इनकी विशेषता यह है, जो संकल्प करते हैं ना, वह पूरा करते हैं। यह बच्ची भी अच्छी है। सारा परिवार लकी है। माता जी भी लकी है ना। अच्छा है। देखो कहाँ के भी आये हो लेकिन सर्विसएबुल हो। बहुत अच्छी सेवा कर सकते

हो।

* ब्लैसिंग यही है कि सदा सन्तुष्ट रहो और सन्तुष्ट करो। ऐसी लाइफ बनाओ जो आपके चेहरे से सदा सन्तुष्टता दिखाई दे, तो सन्तुष्टता सबको चाहिए। आपकी सूरत बोले, शक्ल बोले। बोल नहीं, शक्ल बोले।

* जो ईश्वरीय कार्य में सहयोगी बनते हैं तो सहयोग का रिटर्न बाप की मदद मिलती है। तो हिम्मत आपकी मदद बाप की। सदा यह याद रखना हिम्मत मेरी मदद बाप की। सब कार्य सहज होता जायेगा। जो भी आये हैं सभी को सेवा में लग जाना चाहिए। सभी को सन्देश दो, अपने अनुभव के आधार से।

* जहाँ भी कार्य करते हो, वहाँ अपने अनुभव के आधार पर औरों को अनुभवी बनाते जाओ। जो भी मिले खुशी बांटों तो पुण्य का खाता जमा होता जायेगा।

विदेश की बड़ी बहनों से:- बैलेन्स द्वारा सदा ब्लैसिंग लेने वाले। जहाँ बैलेन्स है वहाँ ब्लैसिंग स्वत: मिलती हैं। कितनी ब्लैसिंग मिलती हैं? अमृतवेले स्व स्थिति को इमर्ज करो। अपने स्वमान को इमर्ज करो। बाकी वैसे सेवा बढ़ती जा रही है, इसकी मुबारक है। अभी सेवा और स्व दोनों का बैलेन्स रखो। ऐसा सेवास्थान बनाओ जो सबके आगे एक एक्जैम्पुल हो। जैसे म्युजियम होता है ना तो सब एड्रेस देते हैं ना, शहर में कहाँ भी जाओ, तो एड्रेस देते हैं यहाँ जाओ, यहाँ जाओ। ऐसे जिसको शान्ति चाहिए, हिम्मत चाहिए, उमंग उत्साह चाहिए वह आपकी एड्रेस में पहुंचे। फैल जावे, अगर शान्ति का वायब्रेशन लेना हो तो यहाँ जाओ, अगर हिम्मत भरनी हो तो यहाँ जाओ। ऐसे स्पेशल बनाओ। ठीक है ना! बाकी म्युजियम तो जहाँ तहाँ आध्यात्मिक म्यूजियम भी हैं, भाषण भी करते सब कुछ है। लेकिन कोई विशेषता ऐसी स्थान की बनाओ जो ब्राह्मणों में भी और बाहर में भी यह प्रसिद्ध हो जाए कि यह चाहिए तो यहाँ जाओ क्योंकि आजकल लोगों को सुनने की आदत तो है लेकिन अनुभव करने की आदत नहीं है तो अगर अनुभव करने चाहें तो आपके पास आयें, यह प्रसिद्ध हो जाए कि अगर आपको अनुभव करना है तो यह एड्रेस है। बाकी अच्छे हैं। निमित्त बने हुए हैं। बापदादा को सेवा तो बड़ी पसन्द है। सेवा अच्छी कर रहे हो। और आपस में यहाँ जब संगठन में आते हो तो संगठन भी अच्छा करते हो, स्वयं और सेवा दोनों का अच्छा करते हो। इसमें आगे बढ़ते रहो।

डबल विदेशी मुख्य भाईयों से: अच्छा है आपका संगठन बढ़िया है। अगर सभी जो बाप ने आज बैलेन्स सुनाया, स्व का और सेवा का, दोनों का बैलेन्स बाप की ब्लैसिंग दिलाता रहेगा। बाकी सभी अपनी अपनी सर्विस में अच्छे चल रहे हो उसकी मुबारक हो। निर्विघ्न है ना! क्योंकि आप निमित्त हो तो निमित्त वाले जो करेंगे वह सब देख करके करेंगे। और उसका एकस्ट्रा पुण्य मिलता है क्योंकि दूसरे को हिम्मत मिली। तो वह भी आगे बढ़ा। तो आपके अनुभव से दूसरा अनुभवी बनता है, आगे बढ़ता है तो उनका फल आपको मिलता है, वह क्या मिलता है? अन्दर की खुशी। हल्कापन। कोई प्राबलम, प्राबलम नहीं लगेगी। जो गायन है ना पहाड़ भी रूई बन जायेगा। देखने में बड़ी प्राबलम आयेगी लेकिन अनुभव के आधार से ऐसी हल्की हो जायेगी जैसे रूई। तो प्राबलम प्रूफ हो जायेंगे। ऐसी लाइफ हो जायेगी, नो प्राबलम। है प्राबलम? बस दिल से याद करो, कोई भी छोटी मोटी बात आवे, मेरा बाबा, बस। बाबा आप ले लो। तो प्राबलम बाबा के पास पहुंच जायेगी, आप हल्के हो जायेंगे। बाप के साथ चलना है ना, पीछे पीछे तो नहीं आना है, साथ साथ चलना है तो उड़ना पड़ेगा। बाप उड़ेंगे और बच्चे हल्के नहीं होंगे तो उड़ेंगे कैसे। साथ तो चल नहीं सकेंगे। इसलिए डबल लाइट। कोई भी प्रकार का बोझ नहीं। जो बोझ हो बाप को दे दो। खुद हल्के रहो। देना तो आना है ना। और बहुत अच्छा पार्ट बजाने वाले हो। प्राबलम नहीं देखो। डबल लाइट बनके आगे बढ़ते रहो। इसके (दादी जानकी के) डायरेक्शन से चलो। बाप आपको मदद देगा। बहुत सेवा कर सकते हैं। विशेषता है। सभी विशेष है। ग्रुप ही विशेष है। हर एक में कोई न कोई विशेषता है तभी यह ग्रुप बना है। उस विशेषता को कार्य में लाओ। रूको नहीं कार्य में लाओ। ठीक है। सब बहुत अच्छी निमित्त आत्मायें अच्छी हो। बापदादा का विशेष प्यार है। सभी एक दो से अच्छे हो। अच्छा।

सतगुरूवार 6 सितम्बर 2007, विशेष भोग के समय बापदादा की पधरामणी -दोपहर 11.30 बजे

6-9-07 ''अव्यक्त बापदादा'' ओम् शान्ति मधुबन

''दादी के हाथ में प्रत्यक्षता का पर्दा खोलने का बटन है, इसमें आप सब सहयोगी बनो''

आज बालक सो मालिक बच्चों के बुलावे पर बापदादा हज़ूर हाज़िर हो गये हैं। बापदादा हर बच्चे को अपने सिर का ताज देखते हैं। बापदादा ने देखा आप सबकी प्यारी दादी अपने इच्छा कारण, बहुत प्यार से निरसंकल्प समाधि में वा साधना में रहते हुए स्व-इच्छा से बाप समान तीव्र बेहद की सेवा का अनुभव करने के लिए, साथी, साक्षी और समान स्थिति का अनुभव करने के लिए बाप के साथ वतन में पहुंच गई। साथ-साथ यह भी सभी ने अनुभव किया कि आदि से अन्त तक नि:स्वार्थ प्यार, निर्विकल्प साधना, परिस्थिति और स्तुति दोनों से न्यारी और सर्व की प्यारी जीवन का प्रभाव चारों ओर बिना मेहनत के, बिना कहने के देश विदेश में पवित्र प्यार का वायब्रेशन स्वत: सहज फैल गया। न बुलाते भी सबके दिल में प्यार का रेसपान्ड देने का उमंग-उत्साह स्वत: ही प्रगट हो रहा है। यह है प्रत्यक्ष स्नेही सहयोगी, समान स्थिति का प्रभाव। दादी की जीवन का एक ही संकल्प रहा कि अब जल्दी से जल्दी बाप की प्रत्यक्षता का आवाज फैलायें। तो प्रत्यक्षता, दादी की प्रत्यक्षता द्वारा ईश्वरीय विश्व विद्यालय और बापदादा की प्रत्यक्षता का फर्स्ट चैप्टर, छोटा सा चैप्टर आरम्भ हुआ है। यह कौन है, यह आध्यात्मिक विद्यालय क्या है, सबकी दृष्टि में, मन में, दिल में क्वेश्चन मार्क के रूप में उत्पन्न हुआ है। पहले क्या है, क्या है... यह क्वेश्चन होता, फिर यह है, यह है का उत्तर सामने आयेगा। दादी का एक ही उमंग था कोई नवीनता करें, सेवा का विशाल रूप हो, तो स्वत: ही सहज ही विशाल परिचय का झण्डा लहर रहा है। अब आप सबको प्यार का स्वरूप प्रत्यक्ष रूप में दिखाकर इस प्रत्यक्षता के झण्डे को ऊंचा लहराना है। दादी ने प्रत्यक्षता के झण्डे का, प्रत्यक्षता के पर्दे का स्वीच ऑन करने के लिए बटन हाथ में पकड़ा है, तो आप सब साथी हो ना। बहुत प्यार है ना दादी से, तो जैसे दादी स्व-इच्छा से एवररेडी, नष्टोमोहा बन गई। सभी सामने खड़े थे, फिर भी निर्मोही मूर्त उड़ गई। ऐसे, जैसे दादी ने फॉलो ब्रह्मा बाप किया। अचानक के पार्ट में पास हो गई। यह अन्तिम पाठ का आप स्नेही प्रेमी आत्माओं को भी इशारा देकर गई। अब आप अपने लिए सोचो, जो दादी ने प्रत्यक्षता का पर्दा खोलने का बटन हाथ में उठाया है, उस पार्ट में हमें कैसे सहयोगी बनना है! बटन खोलने में देरी नहीं लगेगी लेकिन प्रत्यक्षता के झण्डे को ऊंचा लहराने वाले प्रत्यक्षता का पर्दा खोलने के पहले विशेष पार्टधारी साथी एवररेडी हैं? अब यह नहीं समझो कि हम सेन्टर निवासी, मधुबन निवासी हद के सेवाधारी हैं, नहीं, लेकिन विश्व की स्टेज के विशेष पार्टधारी हैं। सारे विश्व की नज़र अब दादी की प्रत्यक्षता के साथ आप सबके तरफ है। विश्व की नज़र जो भी ब्रह्माकुमार कुमारी कहलाते हैं, छोटा है, बड़ा है, किसी भी कार्य के अर्थ निमित्त है, चाहे छोटे कार्य के भी निमित्त है लेकिन एक एक के ऊपर, विश्व के आत्माओं की नज़र आपके ऊपर है। समझते हो इतनी जिम्मेवारी हमारे ऊपर है, या बड़ों को देखते हैं? बड़े जानें, इसमें संगठन की शक्ति चाहिए। यह रूहानी किला है। किले की एक एक ईट जिम्मेवार है। ब्रह्माकुमार ब्रह्माकुमारी मानना अर्थात् इस रूहानी किले की प्रत्यक्षता के निमित्त आत्मायें हो, एक एक किले की ईट जिम्मेवार है। चाहे नीचे की ईट हो, चाहे बीच की हो, चाहे ऊपर की हो, लेकिन एक ईट भी हिलती है तो उसका प्रभाव पड़ता है। तो अभी दादी से तो प्यार है लेकिन दादी का प्यार किससे है! बापदादा ने देखा दादी को अपने प्यार के मूर्त का रिटर्न बेहद प्यार मिला लेकिन अभी दादी का प्यार किस बात में है? दादी कहती है कल की बातें छोड़ो, आज भी नहीं, अब.. प्रत्यक्षता का झण्डा ऊंचा करने वाले ऊंची स्थिति का अपना सम्पन्न स्वरूप दिखाओ। तो जो भी अभी बैठे हैं, तो दादी कह रही थी, आप सभी से पूछना कि मेरे संकल्प को या बाबा के संकल्प को सब पूर्ण करने

के लिए कुछ भी परिवर्तन करना पड़े, सहन करना पड़े, रहम की भावना रखनी पड़े, निर्मल वाणी बनानी पड़े, शुभ भावना, शुभ कामना की नेचुरल नेचर बनानी पड़े, तो दादी ने कहा आप पूछना मेरी इस बात को, मेरे समान बनने के लिए तैयार हैं? तो आप बताओ तैयार हैं? ऐसे हाथ नहीं उठाना, दिल का हाथ उठाना। यह बांहों का हाथ कोई बड़ी बात नहीं है लेकिन निशानी फिर भी यही हाथ उठाना पड़ता है। कुछ भी हो जाए मुझे बदलना है। बदलके बातें बदली कराना है, यह ऐसा, यह ऐसा, यह करते, यह बोलते नहीं, वह तो होगा लेकिन मुझे क्या करना है? दादी के समान तो बनना है ना, दादी ने इतनों को चलाके दिखाया, कितने वर्ष, एक दो वर्ष नहीं, चाहे बड़े चाहे छोटे, चाहे कर्मणा वाले, चाहे भाषण वाले, चाहे ज़ोन वाले, चाहे दादियां, दादाओं को भी। निर्मोही बन गई ना, लास्ट में किसी को याद किया? किया? आप सामने खड़े थे, अगर किसको भी कोई स्मृति हो तो श्वांस प्रगट हो जाता है, अनुभव किया - जैसे शान्ति की देवी रही, सम भावना, श्रेष्ठ भावना, प्रत्यक्ष रूप दिखाया। ऐसे सांस किसका भी नहीं गया है जो सारे आसपास खड़े हैं और देख रहे हैं जा रहे हैं, जा रहे हैं, यह हिस्ट्री में पहला एक्जैम्पुल है। बापदादा तो दिल में रहा लेकिन साकार में सामने सब थे, ऐसी छुट्टी किसने भी नहीं ली है। तो सुना, अभी क्या करना है? सुना। ध्यान से सुना। पीछे वालों ने सुना, अच्छा जो समझते हैं कुछ भी हो जायेगा, कितना भी सहन करना पड़ेगा, परिवर्तन होना ही है, वह हाथ उठाओ। अच्छा पक्का हाथ है या थोड़ा ऐसे ऐसे है, अन्दर का? देखेंगे, ट्रायल करेंगे, नहीं। कोशिश करेंगे, गे गे तो नहीं है ना? गे गे है, नहीं? बहुत अच्छा।

दादी को आपका सन्देश दिया, दादी कहती है मैं खास आऊंगी, रूहरिहान करूंगी, बाकी आप सबका प्यार भावना, सब दादी के आगे ऐसा स्पष्ट है, जैसे सामने दिखाई दे रहा है। किसके मन की स्थिति भी रीयल क्या है, वह भी सभी का चक्कर लगाके नोट किया है। कहती थी कि मैं आकर सुनाऊंगी। कितना भी कोई छिपावे ना, वतन में छिप नहीं सकता है। वहाँ का यन्त्र रूहानी यन्त्र है। अच्छा।

चारों ओर के दादी के प्यार का प्रत्यक्ष स्वरूप दिखाने वाले, जैसे दादी ने फालो ब्रह्मा बाप साकार जीवन में फालो करके दिखाया, ऐसे बाप और मुरब्बी बच्चे दादी को फालो कर प्रत्यक्षता का पर्दा प्रत्यक्षता का झण्डा लहराने के साथी आत्माओं को, बापदादा देख रहे हैं, देश विदेश के बच्चे समान बनने के उमंग-उत्साह के प्लैन बना रहे हैं, वह दिन अब समीप लाना है, समय आने पर नहीं, समय को आपको समीप लाना है। तो ऐसे स्व-परिवर्तक, दृढ़ संकल्पधारी चारों ओर के बच्चों को, चाहे देख रहे हैं या सामने हैं या नहीं हैं, लेकिन बापदादा और दादी चारों ओर के गीता पाठशालाओं के बच्चों को भी देख रहे हैं। तो सभी बाप के साथी, दादी के साथी, ब्राह्मण आत्माओं को बापदादा और दादी की तरफ से एक एक को नाम और विशेषता सम्पन्न यादप्यार और नमस्ते।

दादी आपके क्लास में आती रहती है, ऐसे नहीं, नहीं आती है। आपने जो समाधि बनाई है, उसमें भी चक्कर लगाती रहती है। लेकिन आपसे बहुत-बहुत रूहरिहान करने चाहती है इसलिए थोड़ा समय चाहिए। बाकी दादी के 12 दिन समाप्त हो रहे हैं, दादी को साकार वतन में विशेष न्यारा और प्यारा इसेन्शियल कार्य के लिए निमित्तमात्र पार्ट बजाना पड़ रहा है। लेकिन दादी का जन्म, कार्य अति न्यारा है, वह फिर आकर विस्तार सुनायेंगे। बापदादा को भी ड्रामा का नूंधा हुआ पार्ट बजाना पड़ता है, बजवाना पड़ता है। अलौकिकता क्या है, वह सुनायेंगे फिर। ठीक है। सभी पहली लाइन ठीक है, दादियां ठीक है? पाण्डव भी ठीक हैं? सब पाण्डव ठीक हैं ना। डबल फालो। तीन शब्द दादी के सदा याद करना - निमित्त, निर्मान और निर्मल वाणी। यह तीन शब्द हर घड़ी, हर कार्य आरम्भ करने के पहले, कार्य भले बदले लेकिन यह तीन शब्दों की स्मृति नहीं बदले, कैसा भी कठिन कार्य हो लेकिन यह तीन शब्द ऐसे समझना जैसे अभी बापदादा, दीदी, दादी तीन हैं ना, तो यह तीन शब्द भूलना नहीं, हर कार्य शुरू करने के पहले यह याद करना फिर कार्य शुरू करना। तो बहुत जल्दी दादी के समान, सहज समान बन जायेंगे। अच्छा - अभी क्या करना है?

(सभी दादियां बापदादा से मिल रही हैं, पहले निर्मलशान्ता दादी मिली फिर दूसरी दादियां)

दादी शान्तामणि: गैलप अच्छा किया, जो लक्ष्य रखा, वह प्रैक्टकिल में आ रहा है, इसकी मुबारक हो।

मनोहर दादी: यज्ञ की आदि सहयोगी आत्मा हो। सहयोगी हूँ, सहयोगी रहूंगी, अण्डरलाइन क्योंकि दादियां तो श्रृंगार हैं तो आप एक दादी भी मिस नहीं होनी चाहिए। हाँ जी करो, ताकत आ जायेगी, हाँ जी करके देखना, करना ही है, कोई कितना भी रोके मुझे करना ही है। दादी की सखी है ना। तो दादी ने ना कभी नहीं किया, हर कार्य में हाँ जी, हाँ जी, हाँ जी किया। ऐसे ही करना।

रतनमोहिनी दादी: आप तो आलराउन्डर हैं, अभी दादियों को, सभी को अपना पार्ट विशेष संगठन के आगे दिखाना है। सबकी नज़र पाण्डव और दादियों के तरफ नेचुरल जाती है। हैं, कर रही हैं, करती रहेंगी। अच्छा है।

पाण्डव क्या करेंगे? तीनों ही आओ। (निर्वैर भाई, रमेश भाई, बृजमोहन भाई) आप तीनों को अभी क्या करना है? तीन शब्द विशेष दादी की विशेषता रही, छोटा बड़ा अपना मानता था, अपनेपन की भासना सबसे ज्यादा दादी ने दी है, यह दादियां हैं लेकिन दादी में यह विशेषता ज्यादा रही, तो आप लोगों का भी ऐसा कर्तव्य हो, ऐसा मिलन हो जो हर एक अनुभव करे यह अपने हैं, अपनापन महसूस करें, ड्युटी वाले नहीं। अपनापन जितना लाते हैं उतना, दादी को इतना प्यार का रेसपान्ड क्यों मिला? चाहे वी.आई. पी. चाहे कोई भी हो लेकिन अपनापन महसूस करता था, हमारी दादी है अभी भी देखो दादी माँ, दादी माँ.. कोई कहता नहीं है लेकिन जिगर से कहते हैं, तो यह है अपनेपन की अनुभूति कराने की रिजल्ट। तो जैसे दादियों की तरफ सबकी नज़र है, ऐसे विशेष निमित्त पाण्डवों की तरफ भी है। तो करना पड़ेगा। पड़ेगा ना। करना पड़ेगा ना? करना ही है। अभी हर एक की चाहे मीडिया वाले चाहे वी.आई. पी. चाहे साधारण जनता, सबने श्रधांजलि घर बैठे भी दी है, चाहे आये नहीं हैं लेकिन टी.वी. द्वारा सबने मैजॉरिटी ने देखा भी है और सहयोगी भी बने हैं श्रंधाजलि देने में, तो अब यह ईश्वरीय विश्व विद्यालय छिपा हुआ नहीं रहेगा, एक एक एक्टिविटी तरफ खुली नज़र हो गई है, उल्टे वाले उल्टा देखेंगे, सुल्टे वाले सुल्टा देखेंगे, लेकिन विशेष नज़र पड़ गई। तो उसी अनुसार आप सबको मिलकर सभी स्थानों के वायुमण्डल को पावरफुल बनाना होगा, क्योंकि दादी ने विश्व की नज़र में लाया है। एक - पहले जो प्रेजीडेंट बननी थी उसके कारण सबकी नज़र में आया और फिर दादी के कारण ज्यादा नजर में आया तो सबकी नज़र अभी विशेष इस विद्यालय की तरफ है। इसलिए अण्डरलाइन। सुना।

मुन्नी बहन: (बाबा दादी का क्वॉटेज सूना-सूना लगता है) अभी भी वहाँ सेवा का साधन बनाकर रखना। (हम किस बात का ध्यान रखें) जैसे दादी करती थी वैसे मुस्कराते शक्तिशाली नज़र, रहमदिल भावना, सन्तुष्टता की भावना, सन्तुष्टता का सेव खिलाते रहना। खाली हाथ नहीं भेजना। (दादी की बहुत याद आती है) वह तो आयेगी ना, ऐसे कैसे होगा कि भूल जाए, कुछ दिन तो जरूर याद आयेगी साकार के हिसाब से, क्योंकि 24 घण्टा साथ रही हो। तो याद तो आयेगी। दादी मिलने आयेगी तारीख नहीं फिक्स किया है, आयेगी जरूर!

दादी जानकी - (कल विदेश जा रही है) छुट्टी दी है लेकिन शार्ट कट, बना हुआ है ना।

मोहिनी बहन: (अभी हमें क्या करना है) दादी की भासना देना। दादी का ऐसा ही पार्ट है जब चाहेगी आ जायेगी, आपको भासना आयेगी। आप भी तो वतन की अनुभवी हो ना, भासना आयेगी आपको। बापदादा अच्छे ते अच्छा पार्ट बजवायेगा, सिर्फ यह तीन शब्द हर कर्म के पहले याद करना। सेवा करो, आलराउण्ड सेवा में बिजी रहो, यहाँ भी बिजी रहो, चारों ओर की सेवा में टाइम नहीं मिलता था, अभी टाइम दो, अच्छी सेवा होगी, फिकर नहीं करो, बाप साथ है।

(जिन्होंने दादी जी की सेवा की है वह सारा ग्रुप बापदादा के सामने है) बहुत अच्छा - कितना अच्छा ग्रुप है। देखो सभी ने ड्रामानुसार हर एक ने अपना अपना पार्ट बजाया। और सबने अच्छा पार्ट बजाया है लेकिन अभी स्व परिवर्तन से वायुमण्डल परिवर्तन। आपमें बाप के लक्षण दिखाई दें। जैसे लौकिक में भी कई बच्चों में बाप के लक्षण, बाप जैसी शक्ल दिखाई देती है, तो आप हर एक में बाप के लक्षण दिखाई दें। लक्षण आने से क्या होगा, लक्ष्य स्पष्ट

हो जायेगा। आजकल लक्ष्य ऊंचा रखते हैं लेकिन लक्षण नहीं होते, आप लक्षण द्वारा लक्ष्य को स्पष्ट करो क्योंकि सबकी नज़र लक्षण पर पड़ती है। तो जितना लक्षणधारी चलन होगी तो लक्ष्य आटोमेटिकली सिद्ध होगा - यह कौन हैं, क्या करने चाहते हैं। चलो कोई की भी बात हो जाए, बातें तो होंगी, माला है ना, नम्बरवार हैं ना, तो यह नहीं बोलो यह क्या करते हैं, यह क्यों होता है! नहीं। मुझे क्या करना है, मैं क्या मदद ऐसी हालत में कर सकता हूँ, नहीं कर सकते हो तो किनारा करो लेकिन उसमें बह नहीं जाओ, वायुमण्डल में। आप निमित्त आत्मायें ऐसी स्थिति में रहेंगी तो आटोमेटिकली वायुमण्डल बन जायेगा। मेहनत नहीं लगेगी सिर्फ अपने को करना बस, पक्का। ठीक है ना।

शक्ति सेना कम थोड़ेही है। शक्तियां भी कम नहीं है। मुझे वायुमण्डल श्रेष्ठ बनाना है। कोई भी हल्की सी बात हो, रिपीट नहीं करो। एक को वर्णन करना, माना अनेकों के कानों में जाना। अन्तर्मुखी सदा सुखी। जैसे दादी ने रूहानी अपनापन दिया, शारीरिक नहीं, अपनापन का यह रिजल्ट है, एक उपराम, एक अपनापन। इशारा भी दिया लेकिन दिल में नहीं, जबान पर आया खत्म, दिल में नहीं रखा। ऐसे आप निमित्त हो, तो निमित्त को दादी को फालो करना बहुत जरूरी है। शक्ति तो सभी में नहीं है ना, नम्बरवार है ना, सहयोग दो, शक्ति दो, रहम करो, आत्मिक प्यार दो क्योंकि सबकी नज़र अभी देश विदेश की निमित्त आत्माओं पर है क्योंकि यह मीडिया ने चारों ओर स्पष्ट कर लिया है, अभी सबकी नज़र है। क्या हो रहा है, क्या हो रहा है, और ही ज्यादा सोचेंगे। क्या है, कैसा है, इसीलिए किले को मजबूत करना, आप निमित्त हो। चाहे थोड़ी आई हो लेकिन सुनेंगे तो सभी। फिर भी पहुंच गये हो मुबारक है। एवररेडी तो हो गई ना। दादी के साथ आप लोगों ने भी एवररेडी का पाठ तो पढ़ लिया ना। तो ठीक है। सभी को समझना चाहिए मैं निमित्त हूँ, वायुमण्डल को पावरफुल बनाने के लिए मैं निमित्त हूँ, दूसरे नहीं, दूसरे तो नम्बरवार हैं आप तो निमित्त हो। बहुत अच्छा, ठीक है।

(दादी की सेवा करने वाली बहनों से) बहुत अच्छी सेवा की, (दादी बहुत याद आती है) याद तो आयेगी, बापदादा के वतन से जायेगी तो बापदादा को याद नहीं आयेगी, आयेगी। लेकिन सेवा है ना, जग की दादी है ना सिर्फ मधुबन की तो नहीं है ना। बाकी सभी ने सेवा प्यार से की और अभी भी समान बनने की सेवा करना। प्यार का रिटर्न यही होता है, अच्छा। पाण्डव भी सेवा में अच्छे रहे। पाण्डवों ने भी सेवा अच्छी की। प्यार का स्वरूप दिखाया। सभी ने अपने अपने सेवा अनुसार अच्छा सहयोग दिया। अभी वायुमण्डल को पावरफुल बनाने की सेवा में ऐसे ही साथी बनना, जैसे दादी की सेवा में साथी रहे क्योंकि सबकी नज़र तो है ना, यह क्या करेंगे अभी। देखेंगे क्या करते हैं, सबकी नज़र तो है ना। तो आप ऐसा करके दिखाना जो वाह वाह के गीत बजने लगे। दादी का प्रत्यक्ष स्नेह आपकी चलन से दिखाई देगा। देगा, क्योंकि प्यार था ना। प्यार में तो सभी पास हो गये हैं। प्यार का सर्टीफिकेट तो बहुत अच्छा है। अच्छा।

बापदादा सभी से विदाई लेकर वतन में गये और दादी गुल्जार वतन से जब वापस आई तो वतन का दृश्य सुनाया:

वैसे दादी की विदाई शाम को होनी है, इसलिए बाबा ने कहा मैं मिलकर आया हूँ, मैं भी दादी भी मिली, दादी ने कहा मुझे बाबा भेज रहा है लेकिन मैंने जो 12 दिन में अनुभव किया वह बहुत बहुत बढ़िया, अनुभव किया है और बहुत बातें जो वैसे न देखने वाली, जो नहीं देख सकती थी वह देखी है। यह सुनाया और कहा बाबा अभी भेज रहा है और मुझे यही है, मेरा संकल्प था कि मैं जन्म नहीं लूं लेकिन बाबा ने मुझे रहस्य समझाया है, इसलिए मैं खुशी से जा रही हूँ। हम लोगों को भी था कि दादी को बाबा ऐसे कैसे भेज रहा है। तो दादी ने कहा मैं बाबा के राज़ को समझ गई हूँ इसलिए मैं खुशी से जा रही हूँ। दूसरी बात - दादी ने कहा फिर शाम को विदाई होगी वह देखकर फिर सबको सुनाना। बाकी मेरे तरफ से सभी को एक एक को कहना आपको नाम सहित दादी ने याद दी है। याद के साथ प्यार तो होता ही है। विदाई का सन्देश फिर सुनायेंगे। अच्छा - ओम् शान्ति।

''संगमयुग की जीवनमुक्त स्थिति का अनुभव करने के लिए सब बोझ वा बंधन बाप को देकर डबल लाइट बनो''

आज विश्व रचता बापदादा अपनी पहली रचना अति लवली और लक्की बच्चों से मिलन मेला मना रहा है। कई बच्चे सम्मुख हैं, नयनों से देख रहे हैं और चारों ओर के कई बच्चे दिल में समाये हुए हैं। बापदादा हर बच्चे के मस्तक में तीन भाग्य के तीन सितारे चमकते हुए देख रहे हैं। एक भाग्य है - बापदादा की श्रेष्ठ पालना का, दूसरा है शिक्षक द्वारा पढ़ाई का, तीसरा है सतगुरू द्वारा सर्व वरदानों का चमकता हुआ सितारा। तो आप सब भी अपने मस्तक पर चमकते हुए सितारे अनुभव कर रहे हो ना! सर्व सम्बन्ध बापदादा से है फिर भी जीवन में यह तीन सम्बन्ध आवश्यक हैं और आप सभी सिकीलधे लाडले बच्चों को सहज ही प्राप्त हैं। प्राप्त हैं ना! नशा है ना! दिल में गीत गाते रहते हैं ना - वाह! बाबा वाह! वाह! शिक्षक वाह! वाह! सतगुरू वाह! दुनिया वाले तो लौकिक गुरू जिसको महान आत्मा कहते हैं, उस द्वारा भी एक वरदान पाने के लिए कितना प्रयत्न करते हैं और आपको बाप ने जन्मते ही सहज वरदानों से सम्पन्न कर दिया। इतना श्रेष्ठ भाग्य क्या स्वप्न में भी सोचा था कि भगवान बाप इतना हमारे ऊपर बलिहार जायेगा! भक्त लोग भगवान के गीत गाते हैं और भगवान बाप किसके गीत गाते? आप लक्की बच्चों का।

अभी भी आप सभी भिन्न-भिन्न देशों से किस विमान में आये हो? स्थूल विमानों में कि परमात्म प्यार के विमान में सब तरफ से पहुंच गये हैं! परमात्म विमान कितना सहज ले आता है, कोई तकलीफ नहीं। तो सभी परमात्म प्यार के विमान में पहुंच गये हो इसकी मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो। बापदादा एक एक बच्चे को देख चाहे पहले बार आये हैं, चाहे बहुतकाल से आ रहे हैं। लेकिन बापदादा एक-एक बच्चे की विशेषता को जानते हैं। बापदादा का कोई भी बच्चा चाहे छोटा है, चाहे बड़ा है, चाहे महावीर है, चाहे पुरुषार्थी है, लेकिन हर एक बच्चा सिकीलधा है, क्यों? आपने तो बाप को ढूंढा मिला नहीं, लेकिन बापदादा ने आप हर बच्चे को बहुत प्यार, सिक, स्नेह से कोने-कोने से ढूंढा है। तो प्यारे हैं तब तो ढूंढा। क्योंकि बाप जानते हैं मेरा कोई एक भी बच्चा ऐसा नहीं है जिसमें कोई भी विशेषता नहीं हो। कोई विशेषता ने ही लाया है। कम से कम गुप्त रूप में आये हुए बाप को पहचान तो लिया। मेरा बाबा कहा, सब कहते हो ना मेरा बाबा! कोई है जो कहता है नहीं तेरा बाबा, कोई है? सब कहते हैं मेरा बाबा। तो विशेष है ना। इतने बड़े बड़े साइन्सदान, बड़े बड़े वी.आई.पी. पहचान नहीं सके, लेकिन आप सबने तो पहचान लिया ना। अपना बना लिया ना। तो बाप ने भी अपना बना लिया। इसी खुशी में पलते हुए उड़ रहे हो ना! उड़ रहे हो, चल नहीं रहे हो, उड़ रहे हो क्योंकि चलने वाले बाप के साथ अपने घर में जा नहीं सकेंगे। क्योंकि बाप तो उड़ने वाले हैं, तो चलने वाले कैसे साथ पहुंचेंगे! इसलिए बाप सभी बच्चों को क्या वरदान देते हैं? फरिश्ता स्वरूप भव। फरिश्ता उड़ता है, चलता नहीं है, उड़ता है। तो आप सभी भी उड़ती कला वाले हो ना! हो? हाथ उठाओ जो उड़ती कला वाले हैं, कि कभी चलती कला, कभी उड़ती कला? नहीं? सदा उड़ने वाले, डबल लाइट हो ना! क्यों? सोचो, बाप ने आप सभी से गैरन्टी ली है कि जो भी किसी भी प्रकार का बोझ अगर मन में, बुद्धि में है तो बाप को दे दो, बाप लेने ही आये हैं। तो बाप को बोझ दिया है या थोड़ा-थोड़ा सम्भाल के रखा है? जब लेने वाला ले रहा है, तो बोझ देने में भी सोचने की बात है क्या? कि 63 जन्म की आदत है बोझ सम्भालने की, तो कई बच्चे कभी कभी कहते हैं चाहते नहीं हैं, लेकिन आदत से मजबूर हैं। अभी तो मजबूर नहीं हो ना! मजबूर हो कि मजबूत हो? मजबूर कभी नहीं बनना। मजबूत हैं। शक्तियां मजबूत हो या मजबूर? मजबूत हैं ना? आगे बैठी हुई क्या हैं? मजबूत हैं ना! बोझ रखना अच्छा लगता है क्या? दिल लग गई है, बोझ से दिल लग गई है? छोड़ो, छोड़ो तो छूटो।

छोड़ते नहीं हैं तो छूटते नहीं हैं। छोड़ने का साधन है - दृढ़ संकल्प। कई बच्चे कहते हैं दृढ़ संकल्प तो करते हैं, लेकिन, लेकिन.... कारण क्या है? दृढ़ संकल्प करते हो लेकिन किये हुए दृढ़ संकल्प को रिवाइज़ नहीं करते हो। बार-बार मन से रिवाइज़ करो और रियलाइज़ करो, बोझ क्या और डबल लाइट का अनुभव क्या! रियलाइ-जेशन का कोर्स अभी थोड़ा और अण्डरलाइन करो। कहना और सोचना यह करते हो, लेकिन दिल से रियलाइज करो - बोझ क्या है और डबल लाइट क्या होता है? अन्तर सामने रखो क्योंकि बापदादा अभी समय की समीपता प्रमाण हर एक बच्चे में क्या देखने चाहते हैं? जो कहते हैं वह करके दिखाना है। जो सोचते हो वह स्वरूप में लाना है क्योंकि बाप का वर्सा है, जन्म सिद्ध अधिकार है मुक्ति और जीवनमुक्ति। सभी को निमन्त्रण भी यही देते हो ना तो आकर मुक्ति जीवनमुक्ति का वर्सा प्राप्त करो। तो अपने से पूछो क्या मुक्तिधाम में मुक्ति का अनुभव करना है वा सतयुग में जीवनमुक्ति का अनुभव करना है वा अब संगमयुग में मुक्ति, जीवनमुक्ति का संस्कार बनाना है? क्योंकि आप कहते हो कि हम अभी अपने ईश्वरीय संस्कार से दैवी संसार बनाने वाले हैं। अपने संस्कार से नया संसार बना रहे हैं। तो अब संगम पर ही मुक्ति जीवनमुक्ति के संस्कार इमर्ज चाहिए ना! तो चेक करो सर्व बंधनों से मन और बुद्धि मुक्त हुए हैं? क्योंकि ब्राह्मण जीवन में कई बातों से जो पास्ट लाइफ के बन्धन हैं, उससे मुक्त हुए हो। लेकिन सर्व बन्धनों से मुक्त हैं या कोई कोई बंधन अभी भी अपने बन्धन में बांधता है? इस ब्राह्मण जीवन में मुक्ति जीवनमुक्ति का अनुभव करना ही ब्राह्मण जीवन की श्रेष्ठता है क्योंकि सतयुग में जीवनमुक्त, जीवनबंध दोनों का ज्ञान ही नहीं होगा। अभी अनुभव कर सकते हो, जीवनबंध क्या है, जीवनमुक्त क्या है, क्योंकि आप सबका वायदा है, सबका वायदा है, अनेक बार वायदा किया है, क्या करते हो वायदा, याद है? किसी से भी पूछते हैं आपके इस ब्राह्मण जीवन का लक्ष्य क्या है? क्या जवाब देते हो? बाप समान बनना है। पक्का है ना? बाप समान बनना है ना? कि थोड़ा थोड़ा बनना है? समान बनना है ना! बनना है समान? कि थोड़ा भी बन गये तो चलेगा! चलेगा? उसको समान तो नहीं कहेंगे ना। तो बाप मुक्त है, या बंधन है? अगर किसी भी प्रकार का चाहे देह का, चाहे कोई देह के सम्बन्ध, माता पिता बंधु सखा नहीं, देह के साथ जो कर्मेन्द्रियों का सम्बन्ध है, उस कोई भी कर्मेन्द्रियों के सम्बन्ध का बंधन है, आदत का बंधन है, स्वभाव का बंधन है, पुराने संस्कार का बंधन है, तो बाप समान कैसे हुए? और रोज़ वायदा करते हो बाप समान बनना ही है। हाथ उठवाते हैं तो सभी क्या कहते हैं? लक्ष्मी नारायण बनना है। बापदादा को खुशी होती है, वायदा बहुत अच्छे अच्छे करते हैं लेकिन वायदे का फायदा नहीं उठाते हैं। वायदा और फायदा का बैलेन्स नहीं जानते। वायदों का फाइल बापदादा के पास बहुत बहुत बहुत बड़ा है, सभी का फाइल है। ऐसे ही फायदे का भी फाइल हो, बैलेन्स हो, तो कितना अच्छा लगेगा।

यह सेन्टर्स की टीचर्स बैठी है ना। यह भी सेन्टर निवासी बैठे हैं ना? तो समान बनने वाले हुए ना। सेन्टर निवासी निमित्त बने हुए बच्चे तो समान चाहिए ना! हैं? हैं भी लेकिन कभी-कभी थोड़ा नटखट हो जाते हैं? बापदादा तो सभी बच्चों का सारे दिन का हाल और चाल दोनों देखते रहते हैं। आपकी दादी भी वतन में थी ना, तो दादी भी देखती थी तो क्या कहती थी? पता है, कहती थी बाबा ऐसा भी है क्या? ऐसा होता है, ऐसे करते हैं, आप देखते रहते हैं? सुना, आपकी दादी ने क्या देखा। अभी बापदादा यही देखने चाहते हैं कि एक-एक बच्चा मुक्ति जीवनमुक्ति के वर्से का अधिकारी बने, क्योंकि वर्सा अभी मिलता है। सतयुग में तो नेचरल लाइफ होगी, अभी के अभ्यास की नेचुरल लाइफ, लेकिन वर्से का अधिकार अभी संगम पर है। इसीलिए बापदादा यही चाहते हैं कि हर एक स्वयं चेक करे अगर कोई भी बंधन खींचता है, तो कारण सोचो। कारण सोचो और कारण के साथ निवारण भी सोचो। निवारण बापदादा ने अनेक बार भिन्न-भिन्न रूप से दे दिये हैं। सर्वशक्तियों का वरदान दिया है, सर्वगुणों का खजाना दिया है, खजाने को यूज़ करने से खजाना बढ़ता है। खजाना है, सबके पास है, बापदादा ने देखा है। हर

एक के स्टॉक को भी देखता है। बुद्धि है स्टॉक रूम। तो बापदादा ने सबका देखा है। है, स्टॉक में है लेकिन खजाने को समय पर यूज़ नहीं करते हैं। सिर्फ प्वाइंट के रूप से सोचते हैं, हाँ यह नहीं करना है, यह करना है, प्वाइंट के रूप से यूज़ करते हैं, सोचते हैं लेकिन प्वाइंट बनके प्वाइंट को यूज़ नहीं करते हैं। इसीलिए प्वाइंट रह जाती है, प्वाइंट बनके यूज़ करो तो निवारण हो जाए। बोलते भी हैं, यह नहीं करना है, फिर भूलते भी हो। बोलने के साथ भूलते भी हो। इतना सहज विधि सुनाई है, सिर्फ है ही संगमयुग में बिन्दी की कमाल, बस बिन्दी यूज़ करो और कोई मात्रा की आवश्यकता नहीं। तीन बिन्दी को यूज़ करो। आत्मा बिन्दी, बाप बिन्दी और ड्रामा बिन्दी है। तीन बिन्दी यूज़ करते रहो तो बाप समान बनना कोई मुश्किल नहीं। लगाने चाहते हो बिन्दी लेकिन लगाने के समय हाथ हिल जाता, तो क्वेश्चन मार्क हो जाता या आश्चर्य की रेखा बन जाती है। वहाँ हाथ हिलता, यहाँ बुद्धि हिलती है। नहीं तो तीन बिन्दी को स्मृति में रखना क्या मुश्किल है? है मुश्किल है? बापदादा ने तो दूसरी भी सहज युक्ति बताई है, वह क्या? दुआ दो और दुआ लो। अच्छा, योग शक्तिशाली नहीं लगता, धारणायें थोड़ी कम होती हैं, भाषण करने की हिम्मत नहीं होती है, लेकिन दुआ दो और दुआ लो, एक ही बात करो और सब छोड़ो, एक बात करो, दुआ लेनी है दुआ देनी है। कुछ भी हो जाए, कोई कुछ भी दे लेकिन मुझे दुआ देनी है, लेनी है। एक बात तो पक्की करो, इसमें सब आ जायेगा। अगर दुआ देंगे और दुआ लेंगे तो क्या इसमें शक्तियां और गुण नहीं आयेंगे? आटोमेटिकली आ जायेंगे ना! एक ही लक्ष्य रखो, करके देखो, एक दिन अभ्यास करके देखो, फिर सात दिन करके देखो, चलो और बातें बुद्धि में नहीं आती, एक तो आयेगी। कुछ भी हो जाए लेकिन दुआ देनी और लेनी है। यह तो कर सकते हैं या नहीं? कर सकते हैं? अच्छा, तो जब भी जाओ ना तो यह ट्रायल करना। इसमें सब योगयुक्त आपेही हो जायेंगे। क्योंकि वेस्ट कर्म करेंगे नहीं तो योगयुक्त हो ही गये ना। लेकिन लक्ष्य रखो दुआ देना है, दुआ लेनी है। कोई कुछ भी देवे, बददुआ भी मिलेगी, क्रोध की बातें भी आयेंगी क्योंकि वायदा करेंगे ना, तो माया भी सुन रही हैं, कि यह वायदा करेंगे, वह भी अपना काम तो करेगी ना। मायाजीत बन जायेंगे फिर नहीं करेंगी, अभी तो मायाजीत बन रहे हैं ना, तो वह अपना काम करेगी लेकिन मुझे दुआ देनी है और दुआ लेनी है। हो सकता है? हो सकता है? हाथ उठाओ जो कहते हैं हो सकता है। अच्छा, शक्तियां हाथ उठाओ। हाँ, हो सकता है! तो सब तरफ की टीचर्स आई हैं ना। सब तरफ की टीचर्स आई है ना। तो जब आप अपने देश में जाओ तो पहले पहले सभी को एक सप्ताह यह होमवर्क करना है और रिजल्ट भेजनी है, कितने जने क्लास के मेम्बर कितने हैं, कितने ओ.के. हैं और कितने थोड़े कच्चे और कितने पक्के हैं, तो ओ.के. के बीच में लाइन लगाना बस ऐसे समाचार देना। इतने जने ओ.के., इतने जनों में ओ.के. में लकीर लगी है। इसमें देखो डबल फारेनर्स आये हैं तो डबल काम करेंगे ना। एक सप्ताह की रिजल्ट भेजना फिर बापदादा देखेंगे, सहज है ना, मुश्किल तो नहीं है। माया आयेगी, आप कहेंगे बाबा मेरे को पहले तो कभी नहीं आता था, अभी आ गया, यह होगा, लेकिन दृढ़ निश्चय वाले की निश्चित विजय है। दृढ़ता का फल है सफलता। सफलता न होने का कारण है दृढ़ता की कमी। तो दृढ़ता की सफलता प्राप्त करनी ही है।

डबल फारेनर्स नम्बर वन हो जाना। डबल है ना, डबल फारेनर्स हैं ना, तो कमाल दिखाना। विदेश के कितने आये हैं? (90 देशों से 300 सेन्टर्स के आये हैं) तो 90 कमाल करेंगे ना? 90 देश के डबल फारेनर्स हैं, और 10 इन्डिया के एड हो जायेंगे तो 100 हो जायेंगे। तो करेंगे? जो भी आये हैं, कुछ भी हो, करके ही दिखाना है। है इतने दृढ़ कि सोचते हैं देखेंगे, कोशिश करेंगे.... कोई है ऐसा, जो समझते हैं कोशिश करेंगे, कोशिश वाले हाथ उठाओ। कोई नहीं। तो मुबारक हो, ताली बजाओ। दादियां कहाँ हैं? पक्का है। अच्छा है। क्योंकि डबल फारेनर्स का वैसे नेचर, संस्कार भी गाये हुए हैं कि जो सोचते हैं करना है, वह करके ही छोड़ते हैं, यह डबल फारेनर्स की

नेचर गाई हुई है, अभी इस नेचर को इस कार्य में लगाना। ठीक है ना! करके ही दिखाना है, कुछ भी हो जाए। सहनशक्ति का वरदान विशेष लेके जाना। लेकिन बापदादा ने समय प्रति समय बच्चों की एक सीन देखी है, बच्चों की सीन बाप देखता रहता है ना तो क्या देखा! कि बच्चों ने सहन बहुत अच्छा किया, बापदादा वाह! वाह! कर रहे थे बहुत अच्छा बहुत अच्छा देख रहे थे ना, लेकिन बाद में क्या किया, सहन कर लिया, पास हो गये लेकिन पीछे समाने की शक्ति कम होने के कारण, समा नहीं सके ना, तो जहाँ तहाँ वर्णन करते रहे, समाने की शक्ति नहीं थी, सहन करने की शक्ति थी, पार्ट अच्छा बजाया लेकिन समाने की शक्ति कम होने के कारण फिर वर्णन करने लगे ऐसा हुआ, ऐसा हुआ तो गंवा दिया ना। तो ऐसे नहीं करना। बापदादा बहुत दृश्य देखते हैं बच्चों के, पहले ताली बजाते हैं फिर चुप हो जाते हैं, तो ऐसे नहीं करना। सहनशक्ति, समाने की शक्ति, सर्वशक्तियों का एक दो से कनेक्शन है, इसीलिए बाप को सर्वशक्तिवान कहा है, शक्तिवान नहीं कहा है, आपका भी टाइटल मास्टर सर्वशक्तिवान है, शक्तिवान है क्या? सर्वशक्तिवान है ना? तो सर्वशक्तियों का एक दो से कनेक्शन है इसीलिए यह अटेन्शन रखना। अच्छा।

बापदादा खुश है, डबल फारेनर्स ने अपने अपने स्थानों में वृद्धि की है। प्रैक्टिकल में रहमदिल मर्सीफुल का पार्ट अच्छा बजा रहे हैं। बापदादा के पास समाचार तो आते रहते हैं। बापदादा ने अभी भी सुना अफ्रीका और रशिया दोनों ही तरफ जो भी रहे हुए स्थान हैं, उसमें सन्देश अच्छा दे रहे हैं और भारत में हर एक वर्ग वाले अच्छे हिम्मत और उमंग से अपने अपने वर्ग के तरफ से मर्सीफुल बन आत्माओं को सन्देश देने का, परिचय देने का और सम्बन्ध जोड़ने का कार्य अच्छे उमंग उत्साह से कर रहे हैं। इसकी भी बापदादा मुबारक दे रहे हैं। हाँ ताली बजाओ भले। जैसे इसकी ताली बजाई ना अभी 6 मास बापदादा देते हैं क्योंकि अभी सीजन तो शुरू होनी ही है, तो 6 मास, ज्यादा टाइम दे रहे हैं। जैसे सेवा उमंग-उत्साह से कर रहे हैं ऐसे स्वयं को भी स्व के प्रति सेवा, स्व सेवा और विश्व सेवा, स्व सेवा अर्थात् चेक करना और अपने को बाप समान बनाना। कोई भी कमी, कमजोरी बाप को दे दो ना, क्यों रखी है, बाप को अच्छा नहीं लगता है। क्यों कमजोरी रखते हो? दे दो। देने के टाइम छोटे बच्चे बन जाओ। जैसे छोटा बच्चा कोई भी चीज़ सम्भाल नहीं सकता, कोई भी चीज पसन्द नहीं आती है तो क्या करता है? मम्मी पापा यह आप ले लो। ऐसे ही कोई भी प्रकार का बोझ, बंधन जो अच्छा नहीं लगता, क्योंकि बापदादा देखता है, एक तरफ यह सोच रहे हैं है तो अच्छा नहीं, ठीक तो नहीं है लेकिन क्या करूं, कैसे करूं, तो यह तो अच्छा नहीं है। एक तरफ अच्छा नहीं है कह रहे हैं, दूसरे तरफ सम्भाल के रख रहे हैं, तो इसको क्या कहें! अच्छा कहें? अच्छा तो नहीं है ना। तो आपको क्या बनना है? अच्छे ते अच्छा ना। अच्छा भी नहीं, अच्छे ते अच्छा। तो जो भी कोई ऐसी बात हो, बाबा हाजिरा हजूर है, उसको दे दो, और अगर वापस आवे तो अमानत समझके फिर दे दो। अमानत में ख्यानत नहीं की जाती है। क्योंकि आपने तो दे दी, तो बाप की चीज़ हो गई, बाप की चीज या दूसरे की चीज आपके पास गलती से आ जाए, आप अलमारी में रख देंगे? रख देंगे? निकालेंगे ना। कैसे भी करके, निकालेंगे, रखेंगे नहीं। सम्भालेंगे तो नहीं ना। तो दे दो। बाप लेने के लिए आया है। और तो कुछ आपके पास है नहीं जो दो। लेकिन यह तो दे सकते हो ना। अक के फूल हैं, वह दे दो। सम्भालना अच्छा लगता है क्या? तो 6 मास जैसे अभी उमंग से कर रहे हैं सेवा, रशिया का भी समाचार सुना, और अफ्रीका का भी समाचार सुना, औरों का भी समाचार सुनते रहते हैं, कर रहे हैं। अभी स्व सेवा के प्रति खास समय दे रहे हैं। अभी देख तो लिया, बापदादा ने कितने समय से दो शब्द बार-बार रिवाइज कराये हैं, वह दो शब्द कौन से हैं? अचानक और एवररेडी। याद है ना! याद है? आपकी बहुत अच्छी दादी चन्द्रमणि, अचानक गई थी, याद है? तभी से, कितना टाइम हो गया, (10 साल) और उसके बाद कितने अचानक के हुए हैं? आपकी दादी कैसे गई? अचानक गई ना। अच्छा दादी से प्यार है, तो यह

अचानक का पाठ दादी को याद करके याद करो। जैसे दादी अपने लक्ष्य को पूरा करके गई, ऐसे नहीं गई। उसको सर्टीफिकेट मिला, कर्मातीत, कर्मेन्द्रियों ने भी अपनी आकर्षण में नहीं बांधा, साक्षी होके कर्मेन्द्रियां शीतल होती रही, होती रही। आकर्षण ने नहीं खींचा, न कर्मेन्द्रियों ने खींचा, न किसी आत्मा के मोह ने खींचा, निर्मोही, नष्टोमोहा, नहीं तो कई लोग जाते जाते याद में बोल पड़ते हैं, फलाना, फलाना, फलाना... लेकिन दादी नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप में गई, कर्मेन्द्रियां जीत बनके गई। कोई कर्मेन्द्रिय ने अपने तरफ दु:ख की लहर में नहीं खींचा। तो दादी कहते हो, याद आती है ना, आनी ही चाहिए क्योंकि नम्बरवन थी ना। तो वन नम्बर ने विन तो किया ना। लेकिन जब भी दादी की याद आवे तो सिर्फ चित्र नहीं देखना लेकिन यह याद करो कि मैं भी एवररेडी हूँ। मुझे भी अचानक का पाठ याद है? अभी-अभी मैं भी अचानक चली जाऊं, तो नष्टोमोहा, प्रकृतिजीत हूँ? यही दादी की सौगात सब अपने पास रखो। समझा। अच्छा -

चारों ओर के आये हुए पत्र सन्देश ईमेल सब बापदादा के पास पहुंच गये हैं। सबने अपने प्यार की निशानी, खुद नहीं आ सके तो पत्र द्वारा ईमेल द्वारा भेज दी है। बापदादा ने एक-एक दिल के प्यार के पत्र सन्देश सौगात स्वीकार की और हर एक को बापदादा अपने नयनों में इमर्ज कर, प्यार का रेसपान्ड यादप्यार के रूप में दे रहे है। अच्छा है यह परमात्म प्यार बहुत पुरुषार्थ में सहयोग देता है। तो हर एक बच्चा प्यारा है, प्यारे रहेंगे और प्यार के झूले में झूलते हुए बापदादा के साथ अपने घर चलेंगे। वह भी टाइम आ जायेगा। जो सब साथ चलेंगे, साथ चलने वाले हो ना। पीछे पीछे नहीं आना, मजा नहीं आयेगा। मजा है हाथ में हाथ, साथ में साथ, हाथ है श्रीमत, श्रीमत बुद्धि में होगी, आत्मा परमात्मा का साथ होगा और घर चलेंगे। चलने वाले हो ना सभी, रह नहीं जाना। अभी भी साथ है, चाहे किसी भी कोने में हो, लेकिन बाप साथ है, साथ रहेंगे, साथ चलेंगे और फिर ब्रह्मा बाप के साथ राज्य करेंगे। पक्का वायदा है ना। बीच में नहीं रह जाना। कोई कस्टम की चीज़ होगी तो रुक जायेगी। रावण की चीज हुई ना कस्टम। कोई भी रावण का संस्कार, स्वभाव वह धर्मराज पुरी कस्टम में फंसा देगी। और बाप के साथ चले जायेंगे, और कोई अगर होगा तो कस्टम में रुकना पड़ेगा, अच्छा लगेगा। नहीं लगेगा ना? बाप को भी अच्छा नहीं लगेगा। जब वायदा है साथ का, तो सदा साथ रहना। पीछे वाले वायदा है ना पक्का, पीछे वाले हाथ उठाओ, पक्का वायदा है! अच्छा, ठीक है। जो भी आये हैं, जहाँ से भी आये हैं, एक तो साथ नहीं छोड़ना, हर समय बाप और आप, कितना मजा आयेगा। बाप और आप, मजा है ना। टीचर्स मजा है ना इसमें। कि कभी कभी अलग-अलग भी हो जाएं, अच्छा है, बाबा का साथ छोड़ देंगे! नहीं छोड़ना, पक्का? एक सेकेण्ड भी नहीं। इसी को ही सच्चा प्यार कहा जाता है। ठीक है ना? पक्का, पक्का, पक्का है! यह फोटो निकल रहा है आपका, वतन में निकल रहा है। इस कैमरा में तो आयेगा नहीं, वतन में निकल रहा है, बहुत अच्छा।

अच्छा, चारों ओर के सभी बापदादा के दिल पसन्द बच्चे, दिलाराम है ना, तो दिलाराम के दिल पसन्द बच्चे, प्यार के अनुभवों में सदा लहराने वाले बच्चे, एक बाप दूसरा न कोई, स्वप्न में भी दूसरा न कोई, ऐसे बापदादा के अति प्यारे और अति देहभान से न्यारे, सिकीलधे, पदमगुणा भाग्यशाली बच्चों को दिल का यादप्यार और पदम-पदमगुणा दुआयें हों, साथ में बालक सो मालिक बच्चों को बापदादा का नमस्ते।

अफ्रीका के 28 देशों से जो पहली बार आये हैं वह खड़े हुए:- बहुत अच्छा, भले पधारे। अफ्रीका के निमित्त बने हुए कहाँ है! देखो, आप कितने भाग्यवान हैं, स्वयं बाप ने आप बच्चों को याद किया और कोई न कोई द्वारा सन्देश भिजवाया। तो अपने भाग्य को देख करके खुश हो रहे हो ना! सभी आपको देखके खुश हो रहे हो, क्योंकि ब्राह्मण परिवार में वृद्धि हो गई ना। परिवार में कोई भी बढ़ता है तो खुशी होती है ना। तो सब देखो खुश हो

रहे हैं आप सबको देख करके।

दूसरे देशों से जो पहली बार आये हैं वह उठो:- मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो।

दादियों से:- सिकीलधी दादियां हैं ना। दादियां हैं या साथी हैं, लेकिन सिकीलधी हैं। (दादी जानकी से) बैठो। अभी तो सीट पर सेट हो ना। बापदादा ने निमित्त बनाया है। इस बच्ची को (गुल्जार दादी को) भी निमित्त बनाया है, दोनों तीनों मिलकर बहुत अच्छी रीति से स्व पुरुषार्थ और विश्व सेवा में और विधि से सिद्धि प्राप्त कराने के निमित्त बनेंगी। वह तो रिद्धि सिधि वाले हैं अल्पकाल के, आपकी है विधि से सिद्धि। विधि से सिद्धि के बजाए उन्होंने रिधि सिद्धि कर दी है। (बापदादा ने दादी जानकी के सिर पर हाथ रखा) ठीक है ना। सभी मिलकर करेंगे, सभी मिल करके संगठन को उमंग-उत्साह में लायेंगे। यह तो निमित्त पहला नम्बर, दूसरा नम्बर, तीसरा नम्बर दे देते हैं लेकिन हैं सभी सेवा के साथी। एक दो को उमंग दिलाते आगे बढ़ेंगे और जो दादी का संकल्प रहा है, बाप को प्रत्यक्ष करने का, दादी ने भी बटन तो हाथ में लिया है लेकिन दबायेंगे तो आप ना। आप ही दबायेंगे ना। तो सभी मिलके, जो भी निमित्त बने हुए हैं, सभी मिलके एक दो में राय करके, क्योंकि संगठन की शक्ति बहुत जल्दी सहज कार्य कर लेती है। हाँ जी, हाँ जी करते विश्व को अपने चरणों में हाँ जी कराना है। तो संगठन तो अच्छा है। हर एक की विशेषता है, और विशेषता को आप लोग आपस में वर्णन भी करते हो। क्लास करते हो ना विशेषताओं का। बस विशेष हैं, विशेषतायें देखनी हैं, विशेषतायें देनी हैं। विशेष कार्य करने के लिए विशेषता देखो, विशेषता का एक दो में सहयोग दो। अच्छा है (दादी जानकी से) भारी तो नहीं हो ना। भारी तो नहीं होती ना! (भारी रहने का अक्ल ही नहीं है) अक्ल नहीं है, यही अच्छा है। यह बच्ची (गुल्जार दादी) भी आपको साथ देती है, यह सब साथी हैं। (परदादी भी खुशी में नाचती रहती है) अच्छा खुश रहती है, नाचती रहती है। (अच्छे गीत गाती है) दादी भी गीत गाती थी ना। बचपन के साथी हैं ना। (मनोहर दादी से) ठीक है ना। इसकी विशेषता यह है जो साकार बाप के समय सब तरफ चक्र लगाने में नम्बरवन थी। बापदादा कहता था चक्कर लगाओ, चक्कर लगाओ तो पहला नम्बर आप तैयार होती थी। अभी भी पहला नम्बर क्लास कराने में पहला नम्बर, संगठन में पहुंचने में, हर कार्य में पहला नम्बर। (अभी शांत ज्यादा रहती है) अभी बचपन को याद करो, बीमारी को नहीं, बचपन याद करो। (किडनी में स्टोन हो गया है) आजकल यह बीमारियां तो कामन है, बैठे बैठे भी हो जाता है। सोते, बैठते हो जाता है। न सोना है न बैठना है चक्कर लगाना है।

विदेश की मुख्य बड़ी बहिनों से:- अच्छा फॉरेन ग्रुप आया है। बापदादा को खुशी होती है कि निमित्त फॉरेन में भी इन्डिया की बहनें ही बनी हैं। इन्डिया ने फारेन में रौनक लाई है। लेकिन इन्डिया की समझके नहीं रहती हो, विश्व की समझके रहती हो तभी सेवा हो सकी है अगर इन्डिया का भान हो ना तो सेवा नहीं हो सके, लेकिन यह अच्छा किया है कि फॉरेन में जाते विश्व सेवा का लक्ष्य रखा है। बेहद में गई, हद में नहीं। इसीलिए बापदादा खुश है। और उन्हों को भी साथ लेकर चलते हो ना तो वह भी अपने को आगे से आगे समझते हैं। तो संगठन भी अच्छा एक दो में लेन देन भी अच्छी करते हो, ठीक है बापदादा को पसन्द है। सर्टीफिकेट अच्छा है। सारी विश्व कितना याद करती है। और यह भी अच्छा है लक्ष्य जो रखा है एक दो के तरफ चक्कर लगाने का, यह बहुत अच्छा किया है। जैसे एक देश की दूसरे देश में, बीच बीच में चक्कर लगाते हो यह रिफ्रेशमेंट बहुत जरूरी है। चाहे छोटी बहन हो लेकिन वह दूर से आके क्लास करायेगी चेंज होता है ना तो सबको अच्छा लगता है। बड़ी होते भी छोटी क्लास कभी कभी कराती है तो रौनक आती है। इसलिए यह सिस्टम अच्छी रखी है चक्कर लगाने की। तो अच्छा चल रहा है ना। अच्छा है। (इस बारी और कोई नवीनता आवे) (जर्मनी में बुक फेयर बहुत अच्छा रहा) दिनप्रतिदिन अनुभवी भी होते जाते हो ना, अनुभव भी काम करता है। तो अच्छा है। अच्छा चला रहे हैं।

''अपने श्रेष्ठ स्वमान के फखुर में रह असम्भव को सम्भव करते बेफिक्र बादशाह बनो''

आज बापदादा अपने चारों ओर के श्रेष्ठ स्वमानधारी विशेष बच्चों को देख रहे हैं। हर एक बच्चे का स्वमान इतना विशेष है जो विश्व में कोई भी आत्मा का नहीं है। आप सभी विश्व की आत्माओं के पूर्वज भी हो और पूज्य भी हो। सारे सृष्टि के वृक्ष की जड़ में आप आधारमूर्त हो। सारे विश्व के पूर्वज पहली रचना हो। बापदादा हर एक बच्चे की विशेषता को देख खुश होते हैं। चाहे छोटा बच्चा है, चाहे बुजुर्ग मातायें हैं, चाहे प्रवृत्ति वाले हैं। हर एक की अलग-अलग विशेषतायें हैं। आजकल कितने भी बड़े ते बड़े साइंसदान हैं, दुनिया के हिसाब से विशेष हैं लेकिन प्रकृतिजीत तो बनें, चन्द्रमां तक भी पहुंच गये लेकिन इतनी छोटी सी ज्योति स्वरूप आत्मा को नहीं पहचान सकते। और यहाँ छोटा सा बच्चा भी मैं आत्मा हूँ, ज्योति बिन्दु को जानता है। फलक से कहता है मैं आत्मा हूँ। कितने भी बड़े महात्मायें हैं और ब्राह्मण मातायें हैं, मातायें फलक से कहती हमने परमात्मा को पा लिया। पा लिया है ना! और महात्मायें क्या कहते? परमात्मा को पाना बहुत मुश्किल है। प्रवृत्ति वाले चैलेन्ज करते हैं कि हम सब प्रवृत्ति में रहते, साथ रहते पवित्र रहते हैं क्योंकि हमारे बीच में बाप है। इसलिए दोनों साथ रहते भी सहज पवित्र रह सकते हैं क्योंकि पवित्रता हमारा स्वधर्म है। पर धर्म मुश्किल होता है, स्व धर्म सहज होता है। और लोग क्या कहते? आग और कपूस साथ में रह नहीं सकते। बड़ा मुश्किल है और आप सब क्या कहते? बहुत सहज है। आप सबका शुरू शुरू का एक गीत था - कितने भी सेठ, स्वामी हैं लेकिन एक अल्फ को नहीं जाना है। छोटी सी बिन्दी आत्मा को नहीं जाना लेकिन आप सभी बच्चों ने जान लिया, पा लिया। इतने निश्चय और फखुर से बोलते हो, असम्भव सम्भव है। बापदादा भी हर एक बच्चे को विजयी रत्न देख हर्षित होते हैं क्योंकि हिम्मते बच्चे मददे बाप है। इसलिए दुनिया के लिए जो असम्भव बातें हैं वह आपके लिए सहज और सम्भव हो गई हैं। फखुर रहता है कि हम परमात्मा के डायरेक्ट बच्चे हैं। इस नशे के कारण, निश्चय के कारण परमात्म बच्चे होने के कारण माया से भी बचे हुए हो। बच्चा बनना अर्थात् सहज बच जाना। तो बच्चे हो और सब विघ्नों से, समस्याओं से बचे हुए हो।

तो अपने इतने श्रेष्ठ स्वमान को जानते हो ना! क्यों सहज है? क्योंकि आप साइलेन्स की शक्ति द्वारा, परिवर्तन शक्ति को कार्य में लगाते हो। निगेटिव को पॉजिटिव में परिवर्तन कर लेते हो। माया कितने भी समस्या के रूप में आती है लेकिन आप परिवर्तन की शक्ति से, साइलेन्स की शक्ति से समस्या को समाधान स्वरूप बना देते हो। कारण को निवारण रूप में बदल देते हो। है ना इतनी ताकत, कोर्स भी कराते हो ना! निगेटिव को पॉजिटिव करने की विधि सिखाते हो। यह परिवर्तन शक्ति बाप द्वारा वर्से में मिली है। एक ही शक्ति नहीं, सर्वशक्तियां परमात्म वर्सा मिला है, इसीलिए बापदादा हर रोज़ कहते हैं, हर रोज़ मुरली सुनते हो ना! तो हर रोज़ बापदादा यही कहते - बाप को याद करो और वर्से को याद करो। बाप की याद भी सहज क्यों आती है? जब वर्से की प्राप्ति को याद करते तो बाप की याद प्राप्ति के कारण सहज आ जाती है। हर एक बच्चे को यह रूहानी फखुर रहता है, दिल में गीत गाते हैं - पाना था वो पा लिया। सभी के दिल में यह स्वत: ही गीत बजता है ना! फखुर है ना! जितना इस फखुर में रहेंगे तो फखुर की निशानी है, बेफिक्र होंगे। अगर किसी भी प्रकार का संकल्प में, बोल में या सम्बन्ध-सम्पर्क में फिकर रहता है तो फखुर नहीं है। बापदादा ने बेफिक्र बादशाह बनाया है। बोलो, बेफिक्र बादशाह हो? है, हाथ उठाओ जो बेफिकर बादशाह हैं? बेफिकर कि कभी कभी फिकर आ जाता है? अच्छा है। जब बाप बेफिक्र है, तो बच्चों को क्या फिकर है।

बापदादा ने तो कह दिया है सब फिक्र वा किसी भी प्रकार का बोझ है तो बापदादा को दे दो। बाप सागर है ना। तो बोझ सारा समा जायेगा। कभी बापदादा बच्चों का एक गीत सुनके मुस्कराता है। पता है कौन सा गीत? क्या करें, कैसे करें.... कभी कभी तो गाते हो। बापदादा तो सुनता रहता है। लेकिन बापदादा सभी बच्चों को यही कहते हैं हे मीठे बच्चे, लाडले बच्चे साक्षी-दृष्टा के स्थिति की सीट पर सेट हो जाओ और सीट पर सेट होके खेल देखो, बहुत

मजा आयेगा, वाह! त्रिकालदर्शी स्थिति में स्थित हो जाओ। सीट से नीचे आते इसलिए अपसेट होते हो। सेट रहो तो अपसेट नहीं होंगे। यह तीन चीज़ें बच्चों को परेशान करती हैं। कौन सी तीन चीज़ें? – चंचल मन, भटकती बुद्धि और क्या कहते हैं? पुराने संस्कार। बापदादा को बच्चों की एक बात सुनके हंसी आती है, पता है कौन सी बात है? कहते हैं बाबा क्या करें, मेरे पुराने संस्कार हैं ना! बापदादा मुस्कराता है। जब कह ही रहे हो, मेरे संस्कार, तो मेरा बनाया है? तो मेरे पर तो अधिकार होता ही है। जब पुराने संस्कार को मेरा बना दिया, तो मेरा तो जगह लेगा ना। क्या यह ब्राह्मण आत्मा कह सकती है मेरे संस्कार? मेरा-मेरा कहा है तो मेरे ने अपनी जगह बना दी है। आप ब्राह्मण मेरा नहीं कह सकते। यह पास्ट जीवन के संस्कार हैं। शूद्र जीवन के संस्कार हैं। ब्राह्मण जीवन के नहीं है। तो मेरा-मेरा कहा है तो वह भी मेरे अधिकार से बैठ गये हैं। ब्राह्मण जीवन के श्रेष्ठ संस्कार जानते हो ना! और यह संस्कार जिनको आप पुराने कहते हो, वह भी पुराने नहीं हैं, आप श्रेष्ठ आत्माओं का पुराने ते पुराना संस्कार अनादि और आदि संस्कार है। यह तो द्वापर मध्य के संस्कार हैं। तो मध्य के संस्कार को समाप्त कर देना, बाप की मदद से कोई मुश्किल नहीं है। होता क्या है? कि समय पर बाप कम्बाइन्ड है, उसे कम्बाइन्ड जान, कम्बाइन्ड का अर्थ ही है समय पर सहयोगी। लेकिन समय पर सहयोग न लेने के कारण मध्य के संस्कार महान बन जाते हैं।

बापदादा जानते हैं कि सभी बच्चे बाप के प्यार के पात्र हैं, अधिकारी हैं। बाबा जानते हैं कि प्यार के कारण ही सभी पहुंच गये हैं। चाहे विदेश से आये हैं, चाहे देश से आये हैं, लेकिन सभी परमात्म प्यार की आकर्षण से अपने घर में पहुंचे हैं। बापदादा भी जानते हैं प्यार में मैजॉरिटी पास हैं। विदेश से प्यार के प्लेन में पहुंच गये हो। बोलो, सभी प्यार की डोर में बंधे हुए यहाँ पहुंच गये हो ना! यह परमात्म प्यार दिल को आराम देने वाला है। अच्छा - जो पहली बार यहाँ पहुचे हैं वह हाथ उठाओ। हाथ हिलाओ। भले पधारे।

अभी बापदादा ने होम वर्क दिया था, याद है होमवर्क? याद है? बापदादा के पास कई तरफ से रिजल्ट आई है। लेकिन अभी क्या करना है? सभी की रिजल्ट नहीं आई है। कोई की कितने परसेन्ट में भी आई है। बापदादा क्या चाहते हैं? बापदादा यही चाहते हैं कि सब पूज्यनीय आत्माये हैं। तो पूज्यनीय आत्माओं का विशेष लक्षण दुआ देना ही है। तो आप सभी जानते हो कि आप सभी पूज्यनीय आत्मायें है, तो यह दुआ देना, दुआ देना अर्थात् दुआ लेना अण्डरस्टुड हो जाता है। जो दुआ देता है, जिसको देते हैं उसकी दिल से बार-बार देने वाले के लिए दुआ निकलती है। तो पूज्य आत्मायें आपका तो निजी संस्कार है - दुआ देना। अनादि संस्कार है दुआ देना। जब आपके जड़ चित्र भी दुआ दे रहे हैं तो आप चैतन्य पूज्य आत्मायें दुआ देना यह तो नेचुरल संस्कार है। इसको कहो मेरा संस्कार। मध्य द्वापर के संस्कार नेचुरल हो गया है। नेचर हो गया है। वास्तव में यह संस्कार दुआ देने का नेचुरल नेचर है। जब किसी को दुआ देते हैं, तो वह आत्मा कितनी खुश होती है, वह खुशी का वायुमण्डल कितना सुखदाई होता है! तो जिन्होंने भी किया है उन सबको, चाहे आये हैं, चाहे नहीं आये हैं, लेकिन बापदादा के सामने हैं। तो उन्हों को बापदादा मुबारक दे रहे हैं। किया है और अपनी नेचुरल नेचर बनाते हुए आगे भी करते, कराते रहना। और जिन्होंने थोड़ा बहुत किया भी है, नहीं भी किया है तो वह सभी अपने को सदा मैं पूज्य आत्मा हूँ, मैं बाप की श्रीमत पर चलने वाली विशेष आत्मा हूँ, इस स्मृति को बार-बार अपनी स्मृति और स्वरूप में लाना क्योंकि हर एक से जब पूछते हैं कि आप क्या बनने वाले हो? तो सब कहते हैं हम लक्ष्मी-नारायण बनने वाले हैं। राम-सीता में कोई नहीं हाथ उठाता। जब लक्ष्य है, 16 कला बनने का। तो 16 कला अर्थात् परमपूज्य, पूज्य आतमा का कर्तव्य ही है दुआ देना। यह संस्कार चलते फिरते सहज और सदा के लिए बनाओ। हो ही पूज्य। हो ही 16 कला। लक्ष्य तो यही है ना!

बापदादा खुश है कि जिन्होंने भी किया है, उन्होंने अपने मस्तक में विजय का तिलक बाप द्वारा लगा दिया। साथ में सेवा के समाचार भी बापदादा के पास सबकी तरफ से, वर्गो की तरफ से, सेन्टर्स की तरफ से बहुत अच्छी रिजल्ट सहित पहुंच गये हैं। तो एक होमवर्क करने की मुबारक और साथ में सेवा की भी मुबारक। पदम-पदमगुणा है। बाप ने देखा कि गांव-गांव में सन्देश देने की सेवा बहुत अच्छे तरीके से मैजॉरिटी एरिया में की है, तो यह सेवा भी रहमदिल बनकर सेवा के उमंग-उत्साह में रिजल्ट भी अच्छी दिखाई दी है। जिन्होंने भी मेहनत नहीं, लेकिन बाप से प्यार अर्थात् सन्देश देने से प्यार, तो प्यार के मुहब्बत में सेवा की है तो बाप की भी पदम पदमगुणा प्यार का रिटर्न

सब सेवाधारियों को स्वत: ही प्राप्त है, होगा। साथ में सभी ने अपनी प्यारी दादी को बहुत स्नेह से याद करते हुए, दादी को प्यार का रिटर्न दे रहे हैं, यह प्यार की खुशबू बापदादा के पास बहुत अच्छी तरह से पहुंच गई है। और अभी भी जो भी मधुबन में कार्य चल रहे हैं, चाहे विदेशियों के, चाहे भारत के वह सब कार्य भी एक दो के सहयोग, सम्मान के आधार से बहुत अच्छे सफल हुए हैं और आगे भी होने वाले कार्य सफल हुए पड़े हैं क्योंकि सफलता तो आपके गले का हार है। बाप के गले के भी हार हो, बाप ने याद दिलाया था कि कभी भी हार खाना नहीं क्योंकि आप बाप के गले के हार हो। तो गले का हार कभी हार नहीं खा सकता। तो हार बनना है या हार खानी है? नहीं ना! हार बनना अच्छा है ना! तो हार कभी नहीं खाना। हार खाने वाले तो अनेक करोड़ों आत्मायें हैं, आप हार बनके गले में पिरोये गये हो। ऐसे है ना! तो संकल्प करो बाप के प्यार में कितना भी माया तूफान सामने लाये लेकिन मास्टर सर्वशक्तिवान आत्माओं के आगे तूफान भी तोहफा बन जायेगा। ऐसा वरदान सदा याद करो। कितना भी ऊंचा पहाड़ हो, पहाड़ बदल के रूई बन जायेगा। अभी समय की समीपता प्रमाण वरदानों को हर समय अनुभव में लाओ। अनुभव की अथॉरिटी बनो।

जब चाहो तब अपने अशरीरी बनने की, फरिश्ता स्वरूप बनने की एक्सरसाइज़ करते रहो। अभी-अभी ब्राह्मण, अभी-अभी फरिश्ता, अभी-अभी अशरीरी, चलते फिरते, कामकाज करते हुए भी एक मिनट, दो मिनट निकाल अभ्यास करो। चेक करो जो संकल्प किया, वही स्वरूप अनुभव किया? अच्छा।

चारों ओर के सदा श्रेष्ठ स्वमानधारी, सदा स्वयं को परमपूज्य और पूर्वज अनुभव करने वाले, सदा अपने को हर सबजेक्ट में अनुभवी स्वरूप बनाने वाले, सदा बाप के दिलतख्त नशीन, भृकुटी के तख्त नशीन, सदा श्रेष्ठ स्थिति के अनुभवों में स्थित रहने वाले, चारों ओर के सभी बच्चों को यादप्यार और नमस्ते।

सभी तरफ से सभी के पत्र, ईमेल, समाचार सभी बापदादा के पास पहुंच गये हैं, तो सेवा का फल और बल, सभी सेवाधारियों को प्राप्त है और होता रहेगा। प्यार के पत्र भी बहुत आते हैं, परिवर्तन के पत्र भी बहुत आते हैं। परिवर्तन की शक्ति वालों को बापदादा अमर भव का वरदान दे रहे हैं। सेवाधारियों को जिन्होंने बहुत श्रीमत को फालो किया है, ऐसे फालो करने वाले बच्चों को बापदादा सदा फरमानबरदार बच्चे वाह! यह वरदान दे रहे हैं और प्यार वालों को बहुत-बहुत प्यार से दिल में समाने वाले अति प्यारे और अति माया के विघ्नों से न्यारे ऐसा वरदान दे रहे हैं। अच्छा।

सेवा का टर्न - कर्नाटक ज़ोन का है:- सभी के हाथ में झण्डे झण्डियां हैं, सभी झण्डियों तो बहुत अच्छी हिला रहे हैं, अच्छा है। कर्नाटक वालो ने प्रोग्राम भी बहुत अच्छा स्वर्णिम कर्नाटक ऐसा किया है ना। तो यह प्रोग्राम भी बापदादा ने भिन्न-भिन्न स्थानों का देखा भी है, सुना भी है और मैजारिटी ने अच्छे उमंग-उत्साह से गांव-गांव में बापदादा का सन्देश पहुंचाया है। इसीलिए बापदादा कर्नाटक के सेवाधारियों को बहुत-बहुत सेवा की और श्रीमत के पालन करने की मुबारक दे रहे हैं। मुबारक हो, मुबारक हो। अच्छा है, सेवा का जो चांस लिया है वह भी सभी सन्तुष्ट है और सन्तुष्ट किया है, इससे अपने जमा का खाता बहुत अच्छा जमा किया है। कर्नाटक की संख्या भी कम नहीं है, संख्या अच्छी है और जैसे अभी संगठित रूप में मिलकर निर्विघ्न सेवा का रिकार्ड दिखाया है, ऐसे ही आगे भी कर्नाटक संगठित रूप में बहुत कुछ कमाल कर सकते हैं। बापदादा के पास नक्शा है, कमाल कर सकते हैं। इसलिए संगठित रूप का जलवा दिखाना। अभी अच्छा किया है। सारा परिवार कर्नाटक पर खुश है। अच्छा - बापदादा ने कर्नाटक वालों को काम दिया था, याद है। क्या दिया था! वारिस क्वालिटी निकाले के लिए, याद है? सेवा में तो नम्बर लिया अच्छा, अभी इतने वारिस निकालो जो नम्बरवन आ जाओ। जो निमित्त हैं वह तो हैं, नये नये निकालो। तो बापदादा सभी बच्चों को देख खुश है। आप भी खुश है, बाप भी खुश है। जितना आप बाप को देखकर खुश होते हैं, उससे ज्यादा बच्चों को देख बाप खुश होते हैं। (कर्नाटक ने शुरू से अच्छे अच्छे वारिस निकाले हैं) अभी और भी निकालेंगे। हृदयपुष्पा को रिटर्न तो देंगे ना। एडवांस पार्टी में वह भी वतन में इमर्ज होती है ना तो सब समाचार सुनते हैं। उसने अच्छे अच्छे वारिस निकाले हैं। लेकिन नम्बरवन वारिस निकालने में अभी नम्बरवन।

पहले के तो हैं ही, है ना हिम्मत। टीचर्स हिम्मत है? हाथ उठाओ, हिम्मत है? सभी में हिम्मत है, बहुत हिम्मत है। तो बाप की भी बहुत-बहुत मदद है। अच्छा है। सेवा भी अच्छी की है, फर्स्ट टर्न मिला है। फर्स्ट टर्न में सब बात में फास्ट, तीव्र पुरुषार्थ। अच्छा - सबने बहुत दिल से सेवा की ना। थकावट तो नहीं हुई? थके नहीं ना! अथक बनके सेवा की। अच्छा।

डबल विदेशी, 60 देशों से 600 आये हैं:- अभी बापदादा ने देखा है कि विदेश में भी सेवा का उमंग अच्छा बढ़ रहा है। पहले कहते थे विदेश में स्टूडेन्ट बनना बड़ा मुश्किल है और अभी क्या है? अभी मुश्किल है या सहज है? सहज है? और बापदादा को बहुत अच्छा लगा कि आपस में मिलकर निर्विघ्न बनाने का प्लैन बनाया है और निर्विघ्न बनाने का प्लैन बहुत विधि पूर्वक निर्विघ्न बनाया है। इसकी बहुत-बहुत मुबारक हो, पदमगुणा मुबारक हो। जो भी प्रोग्राम किये हैं वह बहुत सफल रहे हैं। तो सदा सफलता की मुबारक है और सदा मुबारक पात्र रहेंगे। बापदादा को सेवा का प्रत्यक्ष फल देख करके भी खुशी है। यह काल आफ टाइम के आये हैं ना! हाथ उठाओ जो काल आफ टाइम में आये हैं। अच्छा। बहुत अच्छा किया। बहुत चतुर हैं। पहले ही आ गये हैं। अच्छा किया, बाप को भी बहुत प्यारे हो। और आपका भी बाप से प्यार है इसीलिए पहुंच गये हो। तो सभी ब्राह्मण परिवार की तरफ से, बाप की तरफ से भी आप एक एक को पदमगुणा मुबारक है, मुबारक है, मुबारक है। अच्छा है यह सभी बहुत अच्छे फॉरेन सेवा के लिए माइक और बच्चे दोनों पार्ट बजायेंगे। बच्चों का भी पार्ट बजायेंगे और माइक और लाइट बनके सेवा में और वृद्धि को प्राप्त करायेंगे। तो सभी ब्राह्मणों की तरफ से, बाप की तरफ से आप सबको मुबारक हो। अच्छा है। इस ईश्वरीय नॉलेज की प्रोपोगण्डा अब विदेश में भी निमित्त बनके कर रहे हो। अभी वहाँ भी आवाज फैल रहा है, अच्छी तरह से फैल रहा है और ड्रामानुसार आप सबकी और बाप की प्यारी दादी के निमित्त भी चारों ओर ब्राह्मण परिवार का बाप का नाम अच्छा प्रत्यक्ष हो गया है। दादी ने नाम प्रत्यक्ष किया, नाम और काम दो चीज़ होती हैं तो दादी ने नाम बहुत अच्छा फैलाया, अभी उन आत्माओं को अपना बनाना यह काम आपका है। बापदादा ने देखा कि जैसे अभी हर साल वृद्धि करके बाप के सामने ला रहे हो, ऐसे आगे भी ज्यादा से ज्यादा वृद्धि करते रहेंगे। बाप और अपनी प्रत्यक्षता करते रहेंगे। अच्छा ग्रुप है। सभी निश्चयबुद्धि और ईश्वरीय नशे में रहने वाले, उड़ने वाले हैं। चलने वाले नहीं बनना, उड़ने वाले। चलने वाले समय पर नहीं पहुंच सकेंगे, उड़ने वाले बनना। डबल लाइट। बाकी बापदादा खुश है। जो किया वह सफल हो गया। तो आप सब कौन हुए? सफलता के सितारे। अच्छा है। बहुत अच्छा।

पोलीटिशियन, महिला और सिक्युरिटी तीन विंग आई हैं:- देखों कितने उमंग-उत्साह से सभी विंग सेवा कर रहे हैं। तीनों की रिजल्ट अच्छी है। गवर्मेन्ट में भी आवाज अच्छा फैल रहा है। तो सेवा की है तभी आवाज फैल रहा है। तो आपके वर्ग ने अच्छे प्लैन बनाके बाप की प्रत्यक्षता का झण्डा अच्छा फैला रहे हैं। पहले तो कोई मुश्किल से आता था और अभी खुद कहते हैं हम भी आने चाहते हैं। फर्क हो गया ना। अभी खुद ही कहते हैं कि आपके यहाँ कार्य बहुत अच्छा सफल होता है। तो अभी आंख खुलने शुरू हो गई है। धीरे-धीरे आंख खुल जायेगी। वैसे सभी वर्ग अपने अपने वर्ग में सेवा अच्छी कर रहे हैं। महिला वर्ग भी कर रहा है, सिक्युरिटी वर्ग भी कर रहा है, पोलीटिशन भी कर रहा है। लेकिन बापदादा ने देखा है कि दिनप्रतिदिन वर्गो के प्रमाण सेवा करने का उमंग अच्छा बढ़ रहा है। लोगों को रोकना पड़ता है, नहीं आओ। पहले आने के लिए मेहनत करनी पड़ती थी अभी संख्या से ज्यादा आ जाते हैं। क्वान्टिटी और क्वालिटी दोनों ही आ रहे हैं। लेकिन क्वालिटी भी आने शुरू हो गई है इसीलिए तीनों ही वर्गो के सेवाधारियों को बापदादा की तरफ से और ब्राह्मण परिवार की तरफ से मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो। और आपकी दादी ने तो सभी वर्गो में सेवा की वृद्धि का कलम लगा दिया है। दादी भी आप सभी को बहुत याद देती है। उसका भी मन संगम पर है और तन एडवांस पार्टी की तरफ है। अच्छा है।

ट्रेनिंग की टीचर्स और इन्दौर, नडियाद होस्टल की कुमारियां:- (बाबा ही हमारा संसार है यह बैनर दिखा रहे हैं) अच्छा है स्लोगन तो बहुत अच्छा लिखा है, ऐसा ही रोज़ अमृतवेले यह स्लोगन याद करना, सभी कुमारियां चाहे इन्दौर की हैं, चाहे मधुबन की ट्रेनिंग की है चाहे नड़ियाद की हैं लेकिन सभी कुमारियां अमृतवेले से यह स्लोगन याद करना है क्योंकि बाबा ही हमारा संसार है। तो सारी आकर्षण, सारा दिल का प्यार कहाँ

जायेगा? बाबा में। नयनों में सदा कौन दिखाई देगा? बाबा। मुख में सदा क्या निकलेगा? बाबा। और चेहरे में सदा बाप का नशा दिखाई देगा। सम्बन्ध-सम्पर्क में सदा ही बाप से सर्व सम्बन्ध जुटे रहेंगे। तो क्या हो जायेंगे? नो प्राब्लम। दादी के दो अक्षर याद है। दादी बार बार कहती है निर्विघ्न और निर्विकल्प। तो दादी से प्यार है ना, सभी कुमारियों का प्यार है दादी से। बहुत प्यार है। तो जो प्यारा होता है ना, उनके बोल, उनके शब्द सदा कानों में गूंजते रहते हैं। तो सदा यह बुद्धि में कानों में आवाज आता रहे निर्विघ्न और निर्विकल्प बनना ही है। बनेंगी ना। बनेंगी, बनेंगी, जरूर बनेंगी। क्योंकि बापदादा का कुमारियों के तरफ बहुत अटेन्शन है और कुमारियां लकी भी हैं। भाई, पाण्डव सेना जो हैं ना, वह हंसती है, कहते हैं कुमारियां तो जल्दी दादी बन जाती हैं। और पाण्डव को दादा नहीं कहते हैं। भाई कहते हैं। तो देखो आपका लक कितना बढ़िया है। आते ही लक प्राप्त हो जाता है। बापदादा का, गुरू का तख्त मिल जाता है। यह मुरली का तख्त गुरू का तख्त है। इसीलिए बापदादा टीचर्स को गुरुभाई कहता है। तो याद रखना गुरूभाई हैं। गुरू का तख्त मिला है। अच्छा है। यह ट्रेनिंग की जो विधि रखी है उससे अच्छी रिजल्ट निकलेगी। लेकिन आप सभी आपेही अपना चार्ट मधुबन में भेजते रहना। सिर्फ ओ.के. लिखना ज्यादा नहीं लिखना। अगर और कोई कारण हो या कुछ न कुछ कमजोरी हो तो ओ.के. के बीच में लाइन लगा देना। बाकी ज्यादा नहीं पत्र लिखना, बस। अच्छा है। टीचर्स भी अच्छी मेहनत कर रही हैं। बापदादा तो देखते हैं कि किसी भी डिपार्टमेंट के लिए मेहनत नहीं कर रहे हैं, अभी यह नहीं है, मेहनत सब कर रहे हैं। चाहे स्थूल सेवा वाले भी मेहनत बहुत कर रहे हैं। अभी एक बात चाहिए सुनाये क्या? एक बात जैसे सेवा में, कार्य में हर डिपार्टमेंट, हर वर्ग, हर सेन्टर, हर ज़ोन, सेवा बढ़ा रहा है। लेकिन अभी आवश्यकता है - एकता और एकानामी की। यह दो चीज़ें, सम्मान देना और सम्मान लेना। तो एकता, हर एक के सहयोग की अंगुली है ही है। चाहे महारथी हैं, चाहे थोड़ा कम पुरुषार्थी हैं, लेकिन हर एक का सहयोग तो है। अगर कर्मणा करने वाले का सहयोग नहीं मिलता तो आप सेवा कैसे करते, टाइम पर कैसे निकलते, टाइम पर कैसे सेवा करते। ठीक है ना। हर एक विशेष है। सम्मान के अधिकारी हैं इसीलिए हरेक छोटे बड़े को सम्मान दो और सम्मान लो। दो अक्षर याद रखना - एकता और एकॉनामी। बाकी सब अच्छा है। (ट्रेनिंग कराने वाली टीचर्स) बहुत अच्छा, उमंग उल्हास में लाया, इसकी मुबारक हो। अच्छा। बापदादा तो एक-एक को देखकर, एक-एक की विशेषता को देखकर बहुत खुश होते हैं।

कर्नाटक की माताओं से:- मातायें ठीक हैं? मातायें हाथ उठाओ। बहुत हैं। कर्नाटक की मातायें उठो। अच्छा है, माताओं की संख्या तो अच्छी है। अभी कर्नाटक की मातायें क्या कमाल दिखायेंगी? कोई नई कमाल दिखाना। सेवा तो करती हो लेकिन अभी कोई नई मातायें अपनी चलन दिखाना और बापदादा का वरदान है माताओं को, कि जहाँ सेन्टर पर मातायें ज्यादा होती हैं, सेन्टर पर सेवा करती हैं, वहाँ भण्डारा और भण्डारी दोनों बहुत भरपूर रहती हैं। चाहे कमाती नहीं हैं लेकिन दिल बड़ी है। तो माताओं की महिमा बापदादा भी करते हैं, आदि से शुरूआत से, जब सेवाकेन्द्र खुले तो जहाँ मातायें रही हैं वहाँ कभी भी न भण्डारा खाली रहा है, न भण्डारी खाली रही है। इसीलिए मातायें पालन करने वाली है ना! तो नई नई आत्माओं की पालना बहुत अच्छी होती है। अच्छा।

कर्नाटक के पाण्डव:- अच्छा, हर सेन्टर पर पाण्डवों की भी आवश्यकता है क्योंकि पाण्डव आलराउण्ड सेवा में मददगार बनते हैं। चाहे हार्ड वर्कर में चाहे बाहर अन्दर सन्देश फैलाने में पाण्डव अच्छे मददगार बनते हैं और पाण्डव सेन्टर को चलाने और आगे बढ़ाने के लिए भी निमित्त बनते हैं। पाण्डव भी कम नहीं हैं। इसीलिए आपको याद है, पाण्डव और शक्तियां दोनों की आवश्यकता है इसका चतुर्भुज रूप दिखाया गया है। चतुर्भुज रूप में एक नहीं है, दोनों साथ हैं। मातायें पाण्डवों से आगे हैं, और पाण्डव माताओं से आगे हैं। तो अच्छा है कर्नाटक में पाण्डवों की भी कमी नहीं हैं, माताओं की भी कमी नहीं हैं और अच्छे-अच्छे जैसे जनक बच्ची ने कहा ना, तो कर्नाटक में बहुत वारिस पहले-पहले निकले हैं, यह राइट है। अभी उन्हों को ऐसे वारिस तैयार करने हैं, ठीक है ना। उमंग है ना। तो दूसरे वर्ष रिजल्ट तो बतायेंगे ना, कितने वारिस निकले। रिजल्ट बताना फिर बापदादा बुलायेगा। पहले रिजल्ट देखेगा। वर्ग वाले भी पहले लिस्ट निकालो, फॉरेन वाले भी ऐसे, नये नये वारिस निकालो, उसकी लिस्ट अगले वर्ष में ले आना फिर बापदादा बुलायेगा। ठीक है, टीचर्स।

टीचर्स सभी उठो:- टीचर्स भी कम नहीं हैं। बापदादा तो सभी टीचर्स को गुरूभाई देखते हैं। गुरूभाई का अर्थ है बाप समान। तो टीचर्स को विशेष हर कर्म बाप समान करना ही है। करेंगे नहीं, करना ही है क्योंकि टीचर्स बाप की तरफ से स्टूडेन्ट के आगे एक निमित्त साकार रूप में बाप समान हैं। टीचर का हर कर्म स्टूडेन्ट के आगे बाप समान दिखाई दे। सबके मुख से निकले यह तो बाप को फॉलो कर बाप समान बने हुए हैं। तो ऐसा लक्ष्य है ना। यही लक्ष्य है ना। कांध हिलाओ। टीचर निमित्त हैं। तो निमित्त के ऊपर जिम्मेवारी भी है ना। तो कर रही हो। लेकिन और भी आगे करना है। लक्ष्य बहुत अच्छा है। और बाप तो यही हर टीचर में शुभ भावना रखते हैं कि बाप समान बनना ही है। और क्या करेंगी? और कोई रास्ता है क्या, समान बाप के बनने के और कोई रास्ता नहीं है इसीलिए देखो इन्होंने यह स्लोगन बनाया है, बाप ही संसार है। अच्छा बनाया है। लेकिन कपड़े पर नहीं रह जाये, दिल में रह जाए। अच्छी हैं टीचर्स। संगठन तो बहुत बढ़िया है। अभी कमाल करेंगी। जैसे अभी कमाल करके दिखाई ना। स्वर्णिम कनार्टक का अच्छा जलवा दिखाया अच्छा, ऐसे आगे भी कमाल दिखायेंगी। बाप की शुभ भावना है। ठीक है। अच्छा।

अभी सबके दिल में क्या उमंग आ रहा है? एक ही उमंग बाप समान बनना ही है। है यह उमंग? पाण्डव, हाथ उठाओ। बनना ही है। बनेंगे, गे गे नहीं करना। देखेंगे, बनेंगे, गे गे नहीं करना... लेकिन बनना ही है। पक्का। पक्का? अच्छा। हर एक अपना ओ.के. का कार्ड अपने टीचर के पास चार्ट के रूप में देते रहना। ज्यादा नहीं लिखो, बस एक कार्ड ले लो उसमें ओ.के. लिखो या लाइन डालो बस। यह तो कर सकते हो ना। लम्बा पत्र नहीं। अच्छा।

दादियों से:- (जानकी दादी ने बापदादा को गले लगाया) सभी आपस में हाथ मिलाओ। बहुत अच्छा। (परदादी कलकत्ता जा रही है) कलकत्ते में चक्कर लगाने जा रही है। चक्कर लगाने जाना चाहिए।

आप सभी भी सभी को हिम्मत, उमंग उत्साह दिलाने के निमित्त बन यही सेवा करते रहते हो ना! क्योंकि आज हिम्मत और उमंग उत्साह सदा कायम रहे, इसी की आवश्यकता है। तो सभी को जो भी सामने आये, उसको हिम्मत उमंग उत्साह सेकेण्ड की दृष्टि से भी प्राप्त हो। क्योंकि आप सभी मास्टर दाता हो। जो भी आवे, कुछ ले जावे। चाहे स्नेह ले जाये, चाहे सहयोग ले जाये। चाहे हिम्मत ले जाये। चाहे उमंग ले जाये, कुछ न कुछ ले जावे क्योंकि दाता के बच्चे हैं। वैसे तो सभी का काम यह है, कभी भी किससे मिलते हो, कोई मिलने आता है, खाली हाथ नहीं जाये। चलो दृष्टि का स्नेह ले जाये, टाइम नहीं है, बात करने की आवश्यकता भी नहीं रहती है, लेकिन जो आया वह गया कैसे? कुछ ले गया। सेकण्ड की दृष्टि से भी बहुत कुछ ले सकते हैं। दृष्टि की रूहानियत वा दृष्टि से दिल का स्नेह तो सेकण्ड में भी ले सकते हैं। अभी ब्राह्मणों का आपस में मिलना यह होना चाहिए। तभी आपका वायुमण्डल विश्व में स्नेह, सहयोग, हिम्मत फैलायेगा। सभी ब्राह्मण जो अपने को ब्रह्माकुमार कुमारी समझते हैं, उनको ऐसे ही सेवा में बिजी रहना है। ऐसे नहीं टाइम नहीं मिला, सेकण्ड तो मिला ना। मिनट भी मिला ना। गाया हुआ है नज़र से निहाल। तो ऐसे संगठन में लहर फैलाओ फिर टाइम देने की आवश्यकता ही नहीं रहेगी। अच्छा।

डबल विदेशी टीचर्स बहनों से:- आप सबने आपस में मिलकर अच्छा पार्ट बजाया। सब प्रोग्राम अच्छे ते अच्छे रहे। ऐसे ही सदा एक दो को सम्मान देते हुए, सहयोग देते हुए कार्य को सफल कर सकते हो। सफलता का तो वरदान है ही। निमित्त बनने वालों को तो विशेष बापदादा की तरफ से एकस्ट्रा सहयोग मिलता है। तो हर एक ने अपना-अपना अच्छा पार्ट बजाया। बापदादा खुश है। अपना कार्य पूरा किया तो अभी रहो या जाओ आपके ऊपर है। जिसकी ड्युटी होगी वह तो रूकेगी। बाकी अच्छी हिम्मत की और ड्रामानुसार आप लोग ही निमित्त बने हुए हो क्योंकि कन्ट्रोलिंग पावर है आपमें, चला सकती हो। अच्छा है, बापदादा खुश है।

''सत्यता और पवित्रता की शक्ति को स्वरूप में लाते बालक और मालिकपन का बैलेन्स रखो''

आज सत बाप, सत शिक्षक, सतगुरू अपने चारों ओर के सत्यता स्वरूप, शक्ति स्वरूप बच्चों को देख रहे हैं क्योंकि सत्यता की शक्ति सर्वश्रेष्ठ है। इस सत्यता की शक्ति का आधार है सम्पूर्ण पवित्रता। मन-वचन-कर्म, सम्बन्ध-सम्पर्क, स्वप्न में भी अपवित्रता का नाम निशान न हो। ऐसी पवित्रता का प्रत्यक्ष स्वरूप क्या दिखाई देता? ऐसी पवित्र आत्मा के चलन और चेहरे में स्पष्ट दिव्यता दिखाई देती है। उनके नयनों में रूहानी चमक, चेहरे में सदा हर्षितमुखता और चलन में हर कदम में बाप समान कर्मयोगी। ऐसे सत्यवादी सत बाप द्वारा इस समय आप सभी बन रहे हो। दुनिया में भी कई अपने को सत्यवादी कहते हैं, सच भी बोलते हैं लेकिन सम्पूर्ण पवित्रता ही सच्ची सत्यता की शक्ति है। जो इस समय इस संगमयुग में आप सभी बन रहे हो। इस संगमयुग की श्रेष्ठ प्राप्ति है – सत्यता की शक्ति, पवित्रता की शक्ति। जिसकी प्राप्ति सतयुग में आप सभी ब्राह्मण सो देवता बन आत्मा और शरीर दोनों से पवित्र बनते हो। सारे सृष्टि चक्र में और कोई भी आत्मा और शरीर दोनों से पवित्र नहीं बनते। आत्मा से पवित्र बनते भी हैं लेकिन शरीर पवित्र नहीं मिलता। तो ऐसी सम्पूर्ण पवित्रता इस समय आप सब धारण कर रहे हो। फलक से कहते हो, याद है क्या फलक से कहते हो? याद करो। सभी दिल से कहते हैं, अनुभव से कहते हैं कि पवित्रता तो हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है, जन्म सिद्ध अधिकार सहज प्राप्त होता है क्योंकि पवित्रता वा सत्यता प्राप्त करने के लिए आप सभी ने पहले अपने सत स्वरूप आत्मा को जान लिया। अपने सत बाप, शिक्षक, सतगुरू को पहचान लिया। पहचान लिया और पा लिया। जब तक कोई अपने सत स्वरूप वा सत बाप को नहीं जानते तो सम्पूर्ण पवित्रता, सत्यता की शक्ति आ नहीं सकती।

तो आप सभी सत्यता और पवित्रता की शक्ति के अनुभवी है ना! हैं अनुभवी? अनुभवी हैं? वह लोग प्रयत्न करते हैं लेकिन यथार्थ रूप में ना अपने स्वरूप, न सत बाप के यथार्थ स्वरूप को जान सकते। और आप सबने इस समय के अनुभव द्वारा पवित्रता को ऐसे सहज अपनाया जो इस समय की प्राप्ति का प्रालब्ध देवताओं की पवित्रता नेचरल है और नेचर है। ऐसी नेचरल नेचर का अनुभव आप ही प्राप्त करते हो। तो चेक करो कि पवित्रता वा सत्यता की शक्ति नेचरल नेचर के रूप में बनी है? आप क्या समझते हो? जो समझते हैं कि पवित्रता तो हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है वह हाथ उठाओ। जन्म सिद्ध अधिकार है कि मेहनत करनी पड़ती है? मेहनत करनी तो नहीं पड़ती ना! सहज है ना! क्योंकि जन्म सिद्ध अधिकार तो सहज प्राप्त होता है। मेहनत नहीं करनी पड़ती। दुनिया वाले असम्भव समझते हैं और आपने असम्भव को सम्भव और सहज बना दिया है।

जो नये नये बच्चे आये हैं, जो पहले बारी आये हैं वह हाथ उठाओ। अच्छा जो नये नये बच्चे हैं, मुबारक हो नये पहली बार आने वालों को क्योंकि बापदादा कहते हैं कि भले लेट तो आये हो लेकिन टू लेट में नहीं आये हो। और नये बच्चों को बापदादा का वरदान है कि लास्ट वाला भी फास्ट पुरुषार्थ कर फर्स्ट डिवीजन में आ सकते हैं। फर्स्ट नम्बर नहीं लेकिन फर्स्ट डिवीजन में आ सकते हैं। तो नये बच्चों को इतनी हिम्मत है, हाथ उठाओ जो फर्स्ट आयेंगे। देखना टी.वी. में आपका हाथ दिखाई दे रहा है। अच्छा। हिम्मत वाले हैं। मुबारक हो हिम्मत की। और हिम्मत है तो बाप की तो मदद है ही लेकिन सर्व ब्राह्मण परिवार की भी शुभ भावना, शुभ कामना आप सबके साथ है। इसलिए

जो भी नये पहले बारी आये हैं उन सबके प्रति बापदादा और परिवार की तरफ से दुबारा पदमगुणा बधाई हो, बधाई हो, बधाई हो। आप सभी जो पहले आने वाले हैं उन्हों को भी खुशी हो रही है ना! बिछुड़ी हुई आत्मायें फिर से अपने परिवार में पहुंच गये हैं। तो बापदादा भी खुश हो रहे हैं और आप सब भी खुश हो रहे हैं।

बापदादा ने वतन में दादी के साथ एक रिजल्ट देखी। क्या रिजल्ट देखी? आप सभी जानते हो, मानते हो कि हम मालिक सो बालक हैं। हैं ना! मालिक भी हो, बालक भी हो। सभी हैं? हाथ उठाओ। सोच के उठाना, ऐसे नहीं। हिसाब लेंगे ना! अच्छा, हाथ नीचे करो। बापदादा ने देखा कि बालकपन का निश्चय और नशा यह तो सहज रहता है क्योंकि ब्रह्माकुमार और ब्रह्माकुमारी कहलाते हो तो बालक हो तभी तो ब्रह्माकुमार कुमारी कहलाते हो। और सारा दिन मेरा बाबा, मेरा बाबा यही स्मृति में लाते हो फिर भूल भी जाते हो लेकिन बीच-बीच में याद आता है। और सेवा में भी बाबा बाबा शब्द नेचरल मुख से निकलता है। अगर बाबा शब्द नहीं निकलता तो ज्ञान का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। प्रभाव जो भी सेवा करते हो, भाषण करते हो, कोर्स कराते हो, भिन्न-भिन्न टॉपिक पर करते हो। सच्ची सेवा का प्रत्यक्ष स्वरूप वा प्रत्यक्ष प्रमाण यही है कि सुनने वाले भी अनुभव करें कि मैं भी बाबा का हूँ। उनके मुख से भी बाबा बाबा शब्द निकले। कोई ताकत है, यह नहीं। अच्छा है, यह नहीं। लेकिन मेरा बाबा अनुभव करें इसको कहेंगे सेवा का प्रत्यक्ष फल। तो बालकपन का नशा वा निश्चय फिर भी अच्छा रहता है। लेकिन मालिकपन का निश्चय और नशा नम्बरवार रहता है। बालकपन से मालिकपन का प्रैक्टिकल चलन और चेहरे से नशा कभी दिखाई देता है, कभी कम दिखाई देता है। वास्तव में आप डबल मालिक हो एक बाप के खजानों के मालिक हो। सभी मालिक हो ना खजानों के? और बाप ने सभी को एक जितना ही खजाना दिया है। कोई को लाख दिया हो, कोई को हजार दिया हो, ऐसा नहीं है। सभी को सब खजाने बेहद के दिये हैं क्योंकि बाप के पास बेहद के खजाने हैं। कम नहीं हैं। तो बापदादा ने सभी को सर्व खजाने दिये हैं और एक जैसे, एक जितने दिये हैं। और दूसरा मालिक है - स्व राज्य के मालिक हो। इसीलिए बापदादा फलक से कहते हैं कि मेरा एक एक बच्चा राजा बच्चा है। तो राजा बच्चे हो ना! प्रजा तो नहीं? राजयोगी हो कि प्रजायोगी हो? राजयोगी हो ना! तो स्वराज्य के मालिक हो। लेकिन बापदादा ने दादी के साथ रिजल्ट देखा – तो जितना बालकपन का नशा रहता है, उतना मालिकपन का कम रहता है। क्यों? अगर स्वराज्य के मालिकपन का नशा सदा रहता तो यह जो बीच-बीच में समस्यायें वा विघ्न आते हैं वह आ नहीं सकते। वैसे देखा जाता है तो समस्या वा विघ्न आने का आधार विशेष मन है। मन ही हलचल में आता है। इसीलिए बापदादा का महामन्त्र भी है मनमनाभव। तनमनाभव, धनमनाभव नहीं है, मनमनाभव है। तो अगर स्वराज्य का मालिक है तो मन मालिक नहीं है। मन आपका कर्मचारी है, राजा नहीं है। राजा अर्थात् अधिकारी। अधीन वाले को राजा नहीं कहा जाता है। तो रिजल्ट में क्या देखा? कि मन का मालिक मैं राज्य अधिकारी मालिक हूँ। यह स्मृति, यह आत्म स्थिति की सदा स्थिति कम रहती है। है पहला पाठ, आप सबने पहला पाठ क्या किया था? मैं आत्मा हूँ, परमात्मा का पाठ दूसरा नम्बर है। लेकिन पहला पाठ मैं मालिक राजा इन कर्मेन्द्रियों का अधिकारी आत्मा हूँ। शक्तिशाली आत्मा हूँ। सर्वशक्तियां आत्मा के निजीगुण हैं। तो बापदादा ने देखा कि जो मैं हूँ, जैसा हूँ, उसको नेचरल स्वरूप स्मृति में चलना, रहना, चेहरे से अनुभव होना, समस्या से किनारा होना, इसमें अभी और अटेन्शन चाहिए। सिर्फ मैं आत्मा नहीं, लेकिन कौन सी आत्मा हूँ, अगर यह स्मृति में रखो तो मास्टर सर्वशक्तिवान आत्मा के आगे समस्या वा विघ्न की कोई शक्ति नहीं जो आ सके। अभी भी रिजल्ट में कोई न कोई समस्या वा विघ्न दिखाई देता है। जानते हैं लेकिन चलन और चेहरे में निश्चय का प्रत्यक्ष स्वरूप रूहानी नशा वह और ही प्रत्यक्ष होना है। इसके लिए यह मालिकपन का नशा इसको बार-बार चेक करो। सेकण्ड की बात है चेक करना। कर्म

करते, कोई भी कर्म आरम्भ करते हो, आरम्भ करने टाइम चेक करो – मालिकपन की अथॉरिटी से कर्मेन्द्रियों द्वारा कर्म कराने वाला कन्ट्रोलिंग पावर, रूलिंग पावर वाली आत्मा हूँ? कि साधारण कर्म शुरू हुआ? स्मृति स्वरूप से कर्म आरम्भ करना और साधारण स्थिति से कर्म आरम्भ करना उसमें बहुत फर्क है। जैसे हद के मर्तबे वाले अपना कार्य करते हैं तो कार्य की सीट पर सेट होके फिर कार्य आरम्भ करते हैं ऐसे अपने मालिकपन के स्वराज्य अधिकारी की सीट पर सेट होके फिर हर कार्य करो। इस मालिकपन के अथॉरिटी की चेकिंग को और बढ़ाना है। और इसकी निशानी है, मालिकपन के अथॉरिटी की निशानी है सदा हर कार्य में डबल लाइट और खुशी की अनुभूति होगी और रिजल्ट सफलता सहज अनुभव होगी। अभी कहाँ-कहाँ, अभी तक भी अधिकारी के बजाए अधीन बन जाते हो। अधीनता की निशानी क्या दिखाई देती? जो बार-बार कहते हैं मेरे संस्कार हैं, चाहते नहीं हैं लेकिन मेरे संस्कार हैं, मेरी नेचर है।

बापदादा ने पहले भी सुनाया कि जिस समय यह कहते हैं कि मेरे संस्कार हैं, मेरी नेचर है, क्या यह कमजोरी के संस्कार आपके संस्कार हैं? मेरे हैं? यह तो रावण के मध्य के संस्कार हैं, रावण की देन है। उसको मेरा कहना ही रांग है। आपके संस्कार तो जो बाप के संस्कार हैं वही संस्कार हैं। उस समय सोचो कि मेरा-मेरा कहके मेरे हैं, तो वह अधिकारी बन गये हैं और आप अधीन बन जाते हैं। समान बाप जैसे बनना है तो मेरे संस्कार नहीं, जो बाप के संस्कार वह मेरे संस्कार। बाप के संस्कार क्या हैं? विश्व कल्याणकारी, शुभ भावना, शुभ कामनाधारी। तो उस समय बाप के संस्कार सामने लाओ, लक्ष्य है बाप समान बनने का और लक्षण रहे हुए हैं रावण के। तो मिक्स हो जाते हैं, कुछ अच्छे बाप के, कुछ वह मेरे पास्ट के संस्कार। इसीलिए दोनों मिक्स रहते हैं ना तो खिटखिट होती रहती है। और संस्कार बनते कैसे हैं? वह तो सभी जानते हैं ना! संस्कार मन और बुद्धि के संकल्प और कार्य से संस्कार बनते हैं। पहले मन संकल्प करता, बुद्धि सहयोग देती और अच्छे या बुरे संस्कार बन जाते।

तो बापदादा ने दादी के साथ-साथ रिजल्ट में देखा कि मालिकपन का नेचरल और नेचर का नशा रहे वह बालकपन की भेंट में अभी भी कम है। इसीलिए बापदादा देखते हैं कि समाधान करने के लिए फिर युद्ध करने लग पड़ते हैं। हैं ब्राह्मण लेकिन बीच-बीच में क्षत्रिय बन जाते हैं। तो क्षत्रिय नहीं बनना है। ब्राह्मण सो देवता बनना है। क्षत्रिय बनने वाले तो बहुत आने वाले हैं, वह पीछे आने वाले हैं आप तो अधिकारी आत्मायें हैं। तो सुना रिजल्ट। इसलिए बार-बार मैं कौन, यह स्मृति में लाओ। है ही, नहीं लेकिन स्मृति स्वरूप में लाओ। ठीक है ना। अच्छा। रिजल्ट भी सुनाई। अभी समस्या का नाम, विघ्न का नाम, हलचल का नाम, व्यर्थ संकल्प का नाम, व्यर्थ कर्म का नाम, व्यर्थ सम्बन्ध का नाम, व्यर्थ स्मृति का नाम समाप्त करो और कराओ। ठीक है ना, करेंगे? करेंगे? जो दृढ़ संकल्प का हाथ उठायें, यह हाथ उठाना तो कामन हो गया है इसलिए हाथ नहीं उठवाते हैं, मन में दृढ़ संकल्प का हाथ उठाओ। मन में, शरीर का हाथ नहीं, वह बहुत देख लिया है। जब सभी का मिलकर मन से दृढ़ संकल्प का हाथ उठेगा तब ही विश्व के कोने-कोने में सभी का खुशी से हाथ उठेगा - हमारा सुखदाता, शान्तिदाता बाप आ गया।

बाप को प्रत्यक्ष करने का बीड़ा उठाया है ना! उठाया है? पक्का? टीचर्स ने उठाया है? अच्छा। पाण्डवों ने उठाया है, पक्का। अच्छा डेट फिक्स की है। डेट नहीं फिक्स है? कितना टाइम चाहिए? एक वर्ष चाहिए, दो वर्ष चाहिए? कितना वर्ष चाहिए? बापदादा ने कहा था हर एक अपने पुरुषार्थ की यथा शक्ति प्रमाण अपनी नेचुरल चलने की या उड़ने की विधि समान अपनी डेट सम्पन्न बनने की खुद ही फिक्स करो। बापदादा तो कहेगा अब करो, लेकिन यथाशक्ति अपने पुरुषार्थ अनुसार अपनी डेट फिक्स करो और समय प्रति समय उसको चेक करो कि समय प्रमाण मन्सा की स्टेज, वाचा की स्टेज, सम्बन्ध-सम्पर्क की स्टेज में प्रोग्रेस हो रहा है? क्योंकि डेट फिक्स करने से स्वत:

ही अटेन्शन जाता है।

बाकी सभी की तरफ से, चारों ओर की तरफ से सन्देश भी आये हैं। ईमेल भी आये हैं। तो बापदादा के पास तो ईमेल जब तक पहुंचे उसके पहले ही पहुंच जाता है, दिल के संकल्प का ईमेल बहुत रफ्तार का होता है। वह पहले पहुंच जाता है। तो जिन्होंने भी यादप्यार, समाचार अपने स्थिति का, अपनी सेवा का भेजा है, उन सबको बापदादा ने स्वीकार किया, यादप्यार सभी ने बहुत अच्छे उमंग-उत्साह से भी भेजी है। तो बापदादा उन सभी को चाहे विदेश चाहे देश सभी को रिटर्न में यादप्यार और दिल की दुआओं सहित प्यार और शक्ति की सकाश भी दे रहे हैं। अच्छा।

सेवा का टर्न - राजस्थान और इन्दौर का है:- अच्छा है, दोनों ने यज्ञ सेवा की सेवा का चांस लिया है, यह भी गोल्डन चांस लेने वाले गोल्डन चांसलर हैं। बापदादा ने देखा है कि सभी को इन्तजार रहता है कि कब हमारा टर्न सेवा का बल और सेवा का फल मिलने का आयेगा। तो आप दोनों का तो प्रत्यक्ष फल पाने का चांस आ गया। और बापदादा ने देखा है कि हर ज़ोन जो भी निमित्त बनते हैं वह रूचि से सेवा करते हैं क्योंकि संगमयुग में सेवा का वा हर कर्म का प्रत्यक्षफल मिलता है। अभी अभी दिल से सेवा की और अभी अभी ही दिल की खुशी में नाचते रहते हैं। तो जब भी जितने दिन भी मधुबन में चांस मिला है तो सभी ने हर समय मन की खुशी का डांस का अनुभव किया? और डांस तो कामन है, लेकिन आपके मन की डांस, माइंड डांस, पांव की डांस नहीं, अनुभव किया है ना! मन की खुशी की डांस का अनुभव किया? हाथ उठाओ जिन्होंने किया, थकावट तो नहीं हुई ना। अथकपन का अनुभव किया ना। और पुण्य कितना जमा किया? लोग तो एक ब्राह्मण को खिलाते हैं, सेवा करते हैं तो समझते हैं बड़ा पुण्य जमा हो गया। और आपने कितने ब्राह्मणों को खिलाया, सम्भाला, क्लास कराया, रिफ्रेश किया, तो आपके पुण्य का खाता कितना जमा हो गया! और सबसे खुशी की बात तो यह है कि अपना ब्राह्मण परिवार एक समय में एक साथ कितने बड़े परिवार को देखा। और विश्व के चारों ओर के भाई बहिनें अपना ईश्वरीय परिवार देखने का चांस मधुबन में ही मिलता है। विदेश से भी आते, देश से भी आते हैं। इतना बड़ा परिवार का मिलन यह भी एक विशेष खुशी की बात है। दिल में उमंग आता है ना वाह बाबा और वाह मेरा ब्राह्मण परिवार! तो बहुत अच्छा किया, हिम्मत आपकी, मदद मधुबन निवासियों की और बाप की। क्योंकि मधुबन निवासी भी साथी बनते हैं तब तो कार्य कर सकते हो। तो लाटरी ले ली। लाटरी की मुबारक हो। अच्छा है। टीचर्स को भी चांस मिलता, परिवार वालों को भी चांस मिलता, छोटे बड़े साथी टीचर्स को भी चांस मिलता। देखो कितनी टीचर्स आई हैं? दोनों ज़ोन की कितनी टीचर्स आई हैं? (350 दोनों ज़ोन की टीचर्स आई हैं) अच्छा है, तो मुबारक तो है ही और आगे भी चांस लेते रहना। बाकी दोनों में एक साल में हर एक ज़ोन बताये तो वारिस कितने निकाले? ज़ोन हेड कौन है? हाथ उठाओ। तो सारे ज़ोन में कितने वारिस निकले, कितने माइक निकले? लिस्ट निकाली है? चुप हो गये क्यों? अभी वारिस क्वालिटी एक साल में तो निकलनी चाहिए ना! क्योंकि हर साल के बाद ज़ोन को चांस मिलता है। ठीक है ना! एक साल में कुछ तो वारिस या माइक निकलने चाहिए ना! बोलो ना हाँ जी। ऐसे ही हाँ जी नहीं। लिस्ट चाहिए। अच्छा अगले साल निकालकर आना। अभी तैयार कर रहे होंगे, फिर लिस्ट ले आना। अभी जिसका भी ज़ोन का टर्न होगा इनएडवांस बापदादा कह रहे हैं कि हर ज़ोन से यह दोनों रिजल्ट लेंगे। पहले ही तैयारी करके आना। कितने माइक निकले और कितने वारिस निकले? पहले वाले हैं वह तो लक्की और लवली हैं, अभी कितने निकले? ठीक है ना? रिजल्ट निकलनी चाहिए ना? बापदादा ने अभी तक हर विंग द्वारा भी वारिस या माइक की लिस्ट नहीं देखी है। हर साल विंग मिलते हैं, बापदादा खुश भी होते हैं लेकिन रिजल्ट अभी तक नहीं आई है। यह विंग्स का

प्रोग्राम कितने साल से चल रहा है? कितने साल हुए हैं? (22 साल) तो 22 साल में हर साल में एक तो निकलना चाहिए। लिस्ट नहीं आई है। एक विंग की भी लिस्ट नहीं आई है। तो अच्छा है, आप लोगों ने दिल से सेवा की है इसीलिए दिलाराम बाप की तरफ से बहुत-बहुत-बहुत दिल की दुआयें हैं। अच्छा। दूसरे वर्ष के लिए तैयारी करके आना।

डबल विदेशी:- डबल विदेशी चतुर बहुत हैं। हर टर्न में अपना अच्छा अधिकार रखा है। बापदादा को और सभी ब्राह्मण परिवार को खुशी होती है कि बापदादा का संगठन इन्टरनेशनल संगठन है। अच्छी हिम्मत करके आते हैं। सबसे ज्यादा ग्रुप कहाँ का है? (मलेशिया से 61 आये है) अच्छा है, जितना बड़ा ग्रुप है ना, उतनी बड़ी बड़ी बड़ी मुबारक हो। अच्छा है फारेन का विशेष गायन है कि वहाँ की लाइफ फास्ट लाइफ होती है तो जो डबल विदेशी ब्राह्मण परिवार के बन गये उनका भी फास्ट पुरुषार्थ है? जब देश की फास्ट लाइफ है तो ब्राह्मण परिवार की फास्ट पुरुषार्थ की लाइफ है? फास्ट है या स्लो है? फास्ट है? हाँ या ना कहो। जिसकी फास्ट है वह हाथ उठाओ। आधा है, आधा नहीं है। अभी अगले वर्ष जब आओ ना, आना ही पड़ेगा ना। तो इस साल में लक्ष्य रखो कि पुरुषार्थी तो हैं लेकिन पुरुषार्थ के आगे तीव्र शब्द एड कर दो। पुरुषार्थी बनना कामन है, तीव्र पुरुषार्थी बनना विशेष है। तो आप सभी विशेष आत्मायें हो, साधारण थोड़ेही हो, विशेष हो। तो विशेष आत्माओं की पहली निशानी है तीव्र पुरुषार्थी। सोचा और किया। ऐसे नहीं करेंगे, हो जायेगा... होना तो है ही.. नहीं। करना ही है। उड़ना ही है। बाप समान बनना ही है, इसको कहते हैं तीव्र पुरूषार्थी। तो क्या करेंगे? तीव्र पुरुषार्थ है ना! अभी समय तीव्र समीप आ रहा है। समय में तीव्रता आ गई है लेकिन दु:ख के अशान्ति के समय को समाप्त करने वाले, उन्हों को तो समय से भी तीव्र बनना ही है। फिर भी अच्छे हैं, लगन है, पहुंच गये हो, उसकी मुबारक है। अच्छा। तीव्र पुरुषार्थी? ठीक है, जो कहते हैं हाँ, वह हाथ उठाओ। साधारण पुरुषार्थ नहीं, तीव्र पुरुषार्थ? कि बीच बीच में साधारण पुरुषार्थ करेंगे? साधारण नहीं सदा तीव्र पुरुषार्थ। बस मालिकपन का नशा हर समय चेहरे से ही दिखाई दे। मुख से भी ज्यादा चेहरा बोलता है। तो बहुत अच्छा, अगले साल रिजल्ट देखेंगे। अच्छा। बैठ जाओ, बहुत-बहुत मुबारक हो।

धार्मिक विंग, सोशल विंग और ट्रांसपोर्ट विंग मीटिंग के लिए आये हैं:- समाज सेवा में कोई न कोई सेवा का साधन लोगों को देते हैं, कुछ न कुछ सेवा करते हैं। तो समाज सेवा वाले यही लक्ष्य रखो जो भी आत्मायें सम्पर्क में आती हैं उनको कोई न कोई गुण, कोई न कोई ज्ञान की प्वाइंट, कोई न कोई खजाना, जो बाप से मिला है, वह देना है। यह सोशल सेवा हर एक की करनी है, खाली हाथ कोई न जाए, कुछ लेकर ही जाये क्योंकि दाता के बच्चे हैं, कैसे भी लोगों को चाहे किसी साधन द्वारा, चाहे डायरेक्ट कनेक्शन द्वारा लेकिन कुछ न कुछ देना है। यह सोशल सेवा, आध्यात्मिक सेवा चारों ओर फैलानी है, चाहे किसी भी विधि से, जो हर एक के मुख से निकले कि हमें बहुत अच्छी सेवा का साधन मिला। बहुत अच्छी प्राप्ति कराई। आजकल बहुत प्यासी भी हैं, तो कुछ न कुछ प्राप्ति कराके भरपूर बनाओ। अच्छा।

एक बात जो बापदादा ने फिर से कही, लिस्ट आनी चाहिए। एक भी विंग की लिस्ट नहीं आई है। और उन्हों की जो आप लिस्ट लिखो, उसमें उनकी प्राप्ति का अनुभव भी शार्ट में साथ में हो। जैसे यहाँ कहकर जाते हैं ना बहुत प्राप्ति हुई बहुत मिला। लेकिन जो प्राप्ति हुई वह इक्ट्ठा रहा, उसको बढ़ाया? बापदादा ने देखा है जो भी विंग्स है, चाहे ट्रांसपोर्ट का है चाहे धार्मिक है। लेकिन जब प्रोग्राम करते हैं कनेक्शन में आते हैं, उनसे लगातार कनेक्शन में रखते रहें, वह नहीं होता है। जब फिर प्रोग्राम होगा तब पत्र भेजेंगे, निमन्त्रण भेजेंगे, फिर से आओ। बापदादा ने एक फारेन का समाचार सुना है, जो कॉल ऑफ टाइम का प्रोग्राम करते हैं, उसमें जो भी आते हैं, अच्छा लगता है,

जिज्ञासा उठती है, कनेक्शन होता है तो उन्हें रिलेशन में लाने के लिए समय प्रति समय लगातार हर सप्ताह कुछ न कुछ भेजते रहते हैं। ऐसे आप पीठ नहीं करते हो, 6 मास, साल के बाद वह याद आ गया तो आ गया, कनेक्शन हो गया तो हो गया। लेकिन हर एक की एड्रेस प्रमाण उनको कुछ न कुछ सप्ताह में भेजना चाहिए, जिससे उन्हों की पालना होती रहे, बिना पालना के वृक्ष भी नहीं बड़ा होता। तो यह करना चाहिए। हर एक विंग को, सिर्फ प्रोग्राम नहीं, प्रोग्रेस भी उन्हों की करानी चाहिए। नजदीक आते जायें। और रिजल्ट अपने पास रखते रहो। इस वर्ष में कितने नजदीक रिलेशन में आये? समझा। सुना। अच्छा है। फारेन की रिजल्ट अच्छी है। यह भी करते होंगे लेकिन बापदादा के पास रिजल्ट नहीं आई है। बाकी अच्छा है जब यह वर्गो की सेवा हुई है, तो कनेक्शन में बहुत आये हैं और परिवर्तन भी हुआ है, पहले बुलाना पड़ता था अभी बिना बुलाये भी आने चाहते हैं, फर्क तो है। लेकिन इसकी रिजल्ट सारे परिवार को पता होना चाहिए। एक दो की रिजल्ट से उमंग आता है। और एक का सुनके दूसरे को आता है, हम भी कर सकते हैं, हिम्मत भी आती है। बाकी बापदादा खुश है कि वर्गो की डिपार्टमेंट बनने से भिन्न भिन्न प्रकार की भिन्न भिन्न वर्गो की सेवा बढ़ती जा रही है इसलिए सभी वर्ग वालों को सेवा की मुबारक भी है और आगे बढ़ने का और भी साधन करेंगे तो प्रत्यक्ष फल दिखाई देगा। आखिर तो सभी वर्ग वाले मिलकरके कहें हम सब एक बाप के एक हैं। इस विश्व की स्टेज पर एक है, एक मत हैं, एक के ही हैं। यह आवाज फैले। धार्मिक लोग भी कहें हम एक हैं। एक के हैं। बाकी सेवा की है उसकी मुबारक। अच्छा।

कैड ग्रुप भी आया है: इसमें ब्राह्मण भी हैं, फायदा उठाया है? तो दिल वालों ने दिलाराम को तो पहचान लिया। इसीलिए दिलाराम को पहचाना तो दिल खुश हो गई और अच्छा है जितना-जितना आप साथ वालों को अनुभव सुनायेंगे, उतना यह सेवा फैलती जायेगी। क्योंकि प्रत्यक्ष प्रमाण है ना। आप स्वयं ही प्रत्यक्ष प्रमाण है तो कोई भी प्रत्यक्ष प्रमाण देख करके जल्दी खुश हो जाते हैं। हिम्मत आती है। तो अपना अनुभव जो भी सम्पर्क में आये वा सम्पर्क करके भी फैलाते जाओ। क्योंकि आवश्यकता तो है। गरीबी बढ़ती जाती है और गरीबी के समय अगर सहज साधन मिल जाए तो सभी खुश होते हैं। तो अच्छा है। समय प्रति समय करते भी रहते हैं और आगे भी करते चलो। अच्छा। मुबारक हो। अच्छा –

ट्रेनिंग में आई हुई टीचर्स से: ट्रेनिंग तो की, बहुत अच्छा किया लेकिन ट्रेनिंग करने के बाद दिल में स्टैम्प कितनी पक्की लगाई? क्या सदा निर्विघ्न बन औरों को भी निर्विघ्न बनाती रहेंगी? यह वायदा किया? निर्विघ्न रहेंगी? कि थोड़ा थोड़ा बीच में विघ्न आयेगा? अच्छा आ भी जाए तो परिवर्तन करने की शक्ति विघ्न को, समस्या को समाधान के रूप में परिवर्तन करने की शक्ति अनुभव करते हो? जो समझते हैं कि परिवर्तन की शक्ति कार्य में लगाके बापदादा को या जिन टीचर्स ने सेवा की, उसको सबूत दिखायेंगे ऐसी हिम्मत रखने वाले हाथ उठाओ। दिल का हाथ उठाया है ना! कुछ भी हो जाए, सी फादर। औरों की विशेषता को देखना लेकिन फॉलो फादर। अच्छा। कितने हैं ग्रुप में? (70 बहिने हैं) तो आप सभी अपनी टीचर द्वारा मधुबन में रिजल्ट लिखते रहना, बार बार नहीं लिखना, 15 दिन में टीचर द्वारा ओ.के. लिखना, बस। छोटा सा कार्ड भेजना, लम्बा पत्र नहीं भेजना। सुनाया था ना - अगर कोई कमजोरी आ भी जाए तो सिर्फ ओ.के.के बीच में लाइन लगा देना। तो यहाँ से फिर आपको याद दिलाते रहेंगे। अभी 70 तो निर्विघ्न आत्मायें बन गई ना और निर्विघ्न बनायेंगी भी। जहाँ भी जायेंगी वहाँ निर्विघ्न बन निर्विघ्न बनायेंगी। है ना हिम्मत? हिम्मत है? अच्छा। रिजल्ट देखना। रिपोर्ट आती जायेगी ना तो पता पड़ता जायेगा। अच्छा।

सब कुछ सुना। जैसे सुनना सहज लगता है ना! ऐसे ही सुनने से परे स्वीट साइलेन्स की स्थिति भी जब चाहो

जितना समय चाहो उतना समय मालिक होके, पहले विशेष है मन के मालिक, इसीलिए कहा जाता है, मन जीते जगतजीत। तो अभी सुना, देखा, आत्मा राजा बन मन बुद्धि संस्कार को अपने कन्ट्रोल में कर सकते हो? मन-बुद्धि-संस्कार तीनों के मालिक बन ऑर्डर करो स्वीट साइलेन्स, तो अनुभव करो कि आर्डर करने से, अधिकारी बनने से तीनों ही आर्डर में रहते हैं? अभी-अभी अधिकारी की स्टेज पर स्थित हो जाओ। अच्छा।

चारों ओर के सदा स्वमानधारी, सत्यता के शक्ति स्वरूप, पवित्रता के सिद्धि स्वरूप, सदा अचल अडोल स्थिति के अनुभवी स्व परिवर्तक और विश्व परिवर्तक, सदा अधिकारी स्थिति द्वारा सर्व आत्माओं को बाप द्वारा अधिकार दिलाने वाले चारों तरफ के बापदादा के लकी और लवली आत्माओं को परमात्म यादप्यार और दिल की दुआयें स्वीकार हो और बापदादा का मीठे मीठे बच्चों को नमस्ते।

दादियों से:- अच्छा है बापदादा ने रिजल्ट देखी। अच्छा रहा। शुभ चिंतन और शुभचिंतक दोनों ही स्थिति में बिजी रहना, वायुमण्डल फैलाना यह अच्छा है। अच्छा कर रही हैं। अच्छा कर रहे हैं करते रहेंगे। मैजारिटी दिखा गया है कि जो आप निमित्त हैं, सब निमित्त हैं, तो जो भी आप निमित्त हैं, उन्हों को विशेष इस समय यह अटेन्शन रखना है कि सन्तुष्ट रहना तो है ही लेकिन सन्तुष्ट रहे, वायुमण्डल सन्तुष्ट रहे, उसके लिए आपस में कोई न कोई प्लैन बनाते रहना। यह तीन पाण्डव भी आवें।

जो भी निमित्त बने हुए हैं उन्हों को आजकल के वायुमण्डल प्रमाण स्वयं तो सन्तुष्ट रहना ही है लेकिन सन्तुष्ट करना भी है। असन्तुष्टता का वायुमण्डल में प्रभाव नहीं हो क्योंकि आजकल सन्तुष्टता सबको चाहिए। लेकिन हिम्मत नहीं है। इसीलिए बीच-बीच में कुछ न कुछ ऐसा परवश होके कर लेते हैं लेकिन उन्हों को भी कुछ शिक्षा, कुछ क्षमा, कुछ रहम, कुछ आत्मिक स्नेह उसकी आवश्यकता है और देखा जाता है कि वायुमण्डल में मैजारिटी को बैलेन्स रखना नहीं आता। बैलेन्स से शिक्षा भी हो और फिर साथ-साथ उनको हिम्मत भी दो। सिर्फ शिक्षा से, अभी सभी शिक्षक बन गये हैं, इसीलिए शिक्षा के साथ हिम्मत और स्नेह दिल का, बाहर का नहीं लेकिन दिल का स्नेह दोनों का बैलेन्स रख करके देना है। और ऐसे प्लैन बनाओ जो चारों ओर कोई न कोई ऐसा प्लैन चलता रहे। जैसे समय प्रति समय भट्ठियां चलाते हो वह तो चलाते ही रहो लेकिन छोटा मोटा प्रोग्राम सदा चलता रहे, तो ऐसी विधि निकालो जिससे चारों ओर का वायुमण्डल शक्तिशाली बनें। चाहना है लेकिन हिम्मत कम है। तो आपस में मिलके कोई न कोई हर मास के लिए ऐसा वर्क निकालो जो सभी उसमें बिजी हो जाएं, रिजल्ट आती रहे। और चेकिंग भी हो, अगर नहीं करते हैं तो क्यों? अलबेलापन है तो उनके ऊपर स्नेह से सहयोग देना पड़ेगा क्योंकि समय तीव्रता से समीप आ रहा है। तो ऐसा कोई प्लैन बनाओ। कोई न कोई वर्क इन्ट्रेस्ट का निकालके सबको बिजी रखो उसमें। ठीक है।

अच्छा है सभी हिम्मत वाले हो ना। हिम्मत कम तो नहीं होती? हिम्मत कम होती है, तो बाप की मदद का भी अनुभव नहीं होता है, बाप मदद देता है, लेकिन कैच नहीं कर पाते हैं। फायदा नहीं उठा सकते हैं। इसीलिए सदा अपने को देखो, हिम्मत बढ़ाओ। कोई न कोई ऐसी बात बुद्धि में रखो जिससे हिम्मत बढ़ती रहे। जितनी हिम्मत बढ़ेगी ना तो हिम्मत के आगे और बातें आनी भी कम हो जायेंगी। अच्छा है, सोचना इस पर।

सन्देशी दादी ने शरीर छोड़ा है, उनके प्रति भोग लगाने के लिए भुवनेश्वर से ग्रुप आया है:-

बापदादा की बहुत रमणीक बच्ची कहें, या सखी कहें जो सन्देशी, इस शरीर को छोड़ करके एडवांस पार्टी में गई, अपने जीवन का बापदादा से साकार में फायदा भी बहुत अच्छा उठाया, सखीपन का पार्ट भी बजाया, खेलने वाली बनी, और अपने स्मृति से अपना भविष्य बनाया। अभी जो आये हैं साथी बनके, वह उठो। जो भी आये हैं।

अच्छा है। प्यार का सबूत तो दिया ना। अभी आगे भी प्यार का सबूत है, सभी को सन्तुष्ट रहके सन्तुष्ट करना। हिम्मतहीन को हिम्मत देना। नम्बरवार तो होते ही हैं ना। तो हिम्मत देते रहना। उमंग-उल्हास बढ़ाते रहना। सिर्फ याद नहीं करना, लेकिन उसकी पालना का प्रत्यक्ष सबूत देना। बाकी अच्छा पार्ट बजाया। आप सभी भी अच्छे ते अच्छा पार्ट बजाते रहना और बजायेंगे। सभी ठीक हैं! हाथ हिलाओ। अच्छा।

दादी जानकी बापदादा को भोग स्वीकार करा रही हैं बापदादा बोले:- देखो अच्छी दादियां मिली हैं ना! यह सब साथी भी हैं, दादियों की साथी भी हैं, दादियां भी हैं। तो सदा हर दादी की, हर साथियों की विशेषता को देख, विशेषता को कार्य में लाना क्योंकि बापदादा ने हर एक बच्चे को कोई न कोई विशेषता स्पेशल दी है, आप सबको भी है, ऐसे नहीं सिर्फ दादियों को है, आपको भी है लेकिन क्या है कोई विशेषता को कार्य में ला रहा है इसलिए वह प्रसिद्ध हो जाता और कोई विशेषता को कार्य में नहीं लाता तो गुप्त रह जाता। बाकी विशेषता सबमें है। छोटे से छोटा जो प्यादे में प्यादा है ना उसमें भी विशेषता है। वह भी स्मृति दिलाता है कि आप महारथी हो, आप महान हो हम प्यादे हैं। इसलिए संगठन सभी जगह मजबूत करो, चाहे दो हैं चाहे 4 हैं, चाहे 12 हैं, लेकिन दो का भी संगठन ऐसा मजबूत हो जो दोनों एकमत हों। स्वभाव एक दो में श्रेष्ठ बनाए, मिलाने की कोशिश करो। जैसे दादी को याद करते हैं ना, क्यों याद करते हो? उसकी विशेषता सबको अपनापन दिया। है ना ऐसे? सभी को अपनापन दिया ना, तो क्यों आप सभी नहीं कर सकते हो? जैसे सभी ने अनुभव किया, हमारी दादी है। ऐसे नहीं मधुबन की दादी है, हमारी है, ऐसे सभी ब्राह्मण एक दो में अपनापन अनुभव करें। यह है दादी को याद करना। इसी को ही याद कहा जाता है। समान बनना, विशेषता धारण करना, इसको कहते हैं याद। ठीक है ना! हर एक यही सोचो सब अपने हैं। अपनापन महसूस हो, ऐसे नहीं यह तो पता नहीं कौन है, क्या है। एक परिवार है ना! दादी भी सभी सेन्टर पर तो नहीं रहती थी ना, एक ही स्थान पर रहती थी मधुबन में, लेकिन सभी को अपनापन दिया। तो आप सभी भी अपने अपने स्थान पर रहते भी अपनापन दे सकते हो। यह दिल की स्थिति है। साथ रहने की बात नहीं है, यह दिल का वायब्रेशन अपनापन लाता है। अच्छा।

''समय के महत्व को जान, कर्मों की गुह्य गति का अटेन्शन रखो, नष्टोमोहा, एवररेडी बनो''

आज सर्व खजानों के दाता, ज्ञान का खजाना, शक्तियों का खजाना, सर्व गुणों का खजाना, श्रेष्ठ संकल्पों का खजाना देने वाला बापदादा अपने चारों ओर के खजाने के बालक सो मालिक अधिकारी बच्चों को देख रहे हैं। अखण्ड खजानों के मालिक बाप सभी बच्चों को सर्व खजानों से सम्पन्न कर रहा है। हर एक को सर्व खजाने देते हैं। किसको कम, किसको ज्यादा नहीं देते क्योंकि अखण्ड खजाना है। चारों ओर के बच्चे बापदादा के नयनों में समाये हुए हैं। सभी खजानों से भरपूर हर्षित हो रहे हैं।

आजकल के समय प्रमाण सबसे अमूल्य श्रेष्ठ खजाना है - पुरुषोत्तम संगम का समय क्योंकि इस संगम पर ही सारे कल्प की प्रालब्ध बना सकते हो। इस छोटे से युग का एक सेकण्ड प्राप्तियों और प्रालब्ध के प्रमाण एक सेकण्ड की वैल्यु एक वर्ष के समान है। इतना यह अमूल्य समय है। इस समय के लिए ही गायन है - अब नहीं तो कब नहीं क्योंकि इस समय ही परमात्म पार्ट नूंधा हुआ है। इसलिए इस समय को हीरे तुल्य कहा जाता है। सतयुग को गोल्डन एज कहा जाता है। लेकिन इस समय, समय भी हीरे तुल्य है और आप सब बच्चे भी हीरे तुल्य जीवन के अनुभवी आत्मायें हो। इस समय ही बहुतकाल की बिछुड़ी हुई आत्मायें परमात्म मिलन, परमात्म प्यार, परमात्म नॉलेज, परमात्म खजानों के प्राप्ति के अधिकारी बनते हैं। सारे कल्प में देव आत्मायें, महान आत्मायें हैं लेकिन इस समय परमात्म ईश्वरीय परिवार है। इसलिए जितना इस वर्तमान समय का महत्व है, इस महत्व को जान, जितना अपने को श्रेष्ठ बनाने चाहे उतना बना सकते हैं। आप सब भी इस महान युग के परमात्म भाग्य को प्राप्त करने वाले पदमापदम भाग्यवान हो ना! ऐसे अपने श्रेष्ठ भाग्य के रूहानी नशे और भाग्य को जानते, अनुभव कर रहे हो ना! खुशी होती है ना! दिल में क्या गीत गाते हो? वाह मेरा भाग्य वाह! क्योंकि इस समय के श्रेष्ठ भाग्य के आगे और कोई भी युग में ऐसा श्रेष्ठ भाग्य प्राप्त हो नहीं सकता।

तो बोलो, सदा अपने भाग्य को स्मृति में रखते हर्षित होते हो ना! होते हो? जो समझते हैं कि सदा हर्षित होते हैं, कभी-कभी वाले नहीं, जो सदा हर्षित रहते हैं वह हाथ उठाओ। सदा, सदा....। अण्डरलाइन करना सदा। अभी टी.वी. में आपका फोटो आ रहा है। सदा वालों का फोटो आ रहा है। मुबारक हो। मातायें उठायें, शक्तियां उठायें, डबल फारेनर्स...। क्या शब्द याद रखेंगे? सदा। कभी-कभी वाले तो पीछे आने वाले हैं।

बापदादा ने पहले भी सुनाया है कि समय की रफ्तार बहुत तीव्र गति से आगे बढ़ रही है। समय की गति को जानने वाले अपने को चेक करो कि मास्टर सर्वशक्तिवान हमारी गति तीव्र है? पुरुषार्थ तो सब कर रहे हैं लेकिन बापदादा क्या देखने चाहते? हर बच्चा तीव्र पुरुषार्थी, हर सबजेक्ट में पास विद आनर है वा सिर्फ पास है? तीव्र पुरुषार्थी के लक्षण विशेष दो हैं – एक - नष्टोमोहा, दूसरा - एवररेडी। सबसे पहले नष्टोमोहा, इस देहभान, देह-अभिमान से है तो और बातों में नष्टोमोहा होना कोई मुश्किल नहीं है। देह-भान की निशानी है वेस्ट, व्यर्थ संकल्प, व्यर्थ समय, यह चेकिंग स्वयं ही अच्छी तरह से कर सकते हो। साधारण समय वह भी नष्टोमोहा होने नहीं देता। तो चेक करो हर सेकण्ड, हर संकल्प, हर कर्म, सफल हुआ? क्योंकि संगमयुग पर विशेष बाप का वरदान है, सफलता आपका जन्म सिद्ध अधिकार है। तो अधिकार सहज अनुभूति कराता है। और एवररेडी, एवररेडी का अर्थ है - मन-वचन-कर्म, सम्बन्ध-सम्पर्क में समय का आर्डर हो अचानक तो एवररेडी और अचानक ही होना है। जैसे अपनी दादी को देखा अचानक एवररेडी। हर स्वभाव में, हर कार्य में इज़ी रहे हैं। सम्पर्क में इज़ी, स्वभाव में इज़ी, सेवा में इज़ी, सन्तुष्ट करने में इज़ी, सन्तुष्ट रहने में इज़ी। इसीलिए बापदादा समय की समीपता का बार-बार इशारा दे रहा है। स्व-पुरुषार्थ का समय बहुत थोड़ा है, इसलिए अपने जमा के खाते को चेक करो। तीन विधियां खजानों को जमा करने की पहले भी बताई हैं, फिर से सुना रहे हैं। उन तीनों विधियों को स्वयं चेक करो। एक है - स्वयं

के पुरुषार्थ से प्रालब्ध का खजाना जमा करना। प्राप्तियों का खजाना जमा करना। दूसरा है - सन्तुष्ट रहना, इसमें भी सदा शब्द एड करो और सर्व को सन्तुष्ट करना, इससे पुण्य का खाता जमा होता है। और यह पुण्य का खाता अनेक जन्मों के प्रालब्ध का आधार रहता है। तीसरा है - सदा सेवा में अथक, नि:स्वार्थ और बड़ी दिल से सेवा करना, इससे जिसकी सेवा करते हैं उनसे स्वत: ही दुआयें मिलती हैं। यह तीन विधियां हैं, स्वयं का पुरुषार्थ, पुण्य और दुआ। यह तीनों खाते जमा हैं? तो चेक करो क्योंकि अगर अचानक कोई भी पेपर आ जाए, क्योंकि आजकल के समय अनुसार प्रकृति के हलचल की छोटी-छोटी बातें कभी भी आ सकती हैं। इसलिए कर्मो के गति का नॉलेज विशेष अटेन्शन में रहे। कर्मो की गति बड़ी गुह्य है। जैसे ड्रामा का अटेन्शन रहता, आत्मिक स्वरूप का अटेन्शन रहता, धारणाओं का अटेन्शन रहता, ऐसे ही कर्मो की गुह्य गति का भी अटेन्शन आवश्यक है। साधारण कर्म, साधारण समय, साधारण संकल्प इससे प्रालब्ध में फर्क पड़ जाता है। इस समय आप सभी जो पुरुषार्थी हैं वह श्रेष्ठ विशेष आत्मायें हैं, साधारण आत्मायें नहीं हो। विश्व कल्याण के निमित्त, विश्व परिवर्तन के निमित्त बनी हुई आत्मायें हो। सिर्फ अपने को परिवर्तन करने वाले नहीं हो, विश्व के परिवर्तन के जिम्मेवार हो। इसलिए अपने श्रेष्ठ स्वमान के स्मृति स्वरूप बनना ही है।

बापदादा ने देखा सभी का बापदादा और सेवा से अच्छा प्यार है। सेवा का वातावरण चारों ओर कोई न कोई प्लैन प्रमाण चल रहा है। साथ-साथ अभी समय के प्रमाण विश्व की आत्मायें जो दु:खी, अशान्त हो रही हैं उन आत्माओं को दु:ख अशान्ति से छुड़ाने के लिए अपनी शक्तियों द्वारा सकाश दो। जैसे प्रकृति का सूर्य सकाश से अंधकार को दूर कर रोशनी में लाता। अपनी किरणों के बल से कई चीज़ों को परिवर्तन करता। ऐसे ही मास्टर ज्ञान सूर्य अपने प्राप्त हुए सुख शान्ति की किरणों से, सकाश से दु:ख अशान्ति से मुक्त करो। मन्सा सेवा से, शक्तिशाली वृत्ति से वायुमण्डल को परिवर्तन करो। तो अभी मन्सा सेवा करो। जैसे वाचा सेवा का विस्तार किया है, वैसे मन्सा सकाश द्वारा आत्माओं में, जो आपकी टॉपिक रखी है, हैपी और होप, यह फैलाओ। हिम्मत दिलाओ, उमंग-उत्साह दिलाओ। बाप का वर्सा, इन बातों से मुक्ति तो दिलाओ। अभी आवश्यकता सकाश देने की ज्यादा है। इस सेवा में मन को बिजी रखो तो मायाजीत विजयी आत्मा स्वत: ही बन जायेंगे। बाकी छोटी-छोटी बातें तो साइडसीन हैं, साइडसीन में कुछ अच्छा भी आता है, कुछ बुरी चीज़ें भी आती हैं। तो साइडसीन को क्रास कर मंजिल पर पहुंचना होता है। साइडसीन देखने के लिए साक्षीदृष्टा की सीट पर सेट रहो, बस। तो साइडसीन मनोरंजन हो जायेगी। तो एवररेडी हो ना? कल भी कुछ हो जाए, एवररेडी हैं? पहली लाइन एवररेडी है? कल भी हो जाए तो? टीचर्स तैयार हैं तो अच्छा। यह वर्ग वाले तैयार हैं। जितने भी वर्ग आये हो, एवररेडी। सोचना। देखना दादियां, देख रही हो सब हाथ हिला रहे हैं। अच्छा है, मुबारक हो। अगर नहीं भी हैं ना तो आज की रात तक हो जाना। क्योंकि समय आपका इन्तजार कर रहा है। बापदादा मुक्ति का गेट खोलने का इन्जार कर रहा है। एडवांस पार्टी आपका आह्वान कर रही है। क्या नहीं कर सकते हो? मास्टर सर्वशक्तिवान तो हो ही। दृढ़ संकल्प करो यह करना है, यह नहीं करना है, बस। नहीं करना है, तो दृढ़ संकल्प से 'नहीं' को 'नहीं' करके दिखाओ। मास्टर तो हो ही ना! अच्छा।

अभी पहली बार कौन आये हैं? जो पहली बार आये हैं वह हाथ उठाओ। ऊंचा हाथ उठाओ, हिलाओ। इतने आये हैं। अच्छा है। जो भी पहले बारी आये हैं उनको पदमगुणा मुबारक है, मुबारक है। बापदादा खुश होते हैं, कि कल्प पहले वाले बच्चे फिर से अपने परिवार में पहुंच गये। इसलिए अभी पीछे आने वाले कमाल करके दिखाना। पीछे रहना नहीं, पीछे आये हो लेकिन पीछे नहीं रहना। आगे से आगे रहना। इसके लिए तीव्र पुरुषार्थ करना पड़ेगा। हिम्मत है ना! हिम्मत है? अच्छा है। हिम्मते बच्चे मददे बापदादा और परिवार है। अच्छा है क्योंकि बच्चे घर का श्रृंगार हो। तो जो भी आये हैं वह मधुबन के श्रृंगार हैं। अच्छा।

सेवा का टर्न भोपाल ज़ोन का है:- अच्छा, बहुत आये हैं। (झण्डियां हिला रहे हैं) अच्छा है गोल्डन चांस तो मिला है ना। अच्छा जो भी सेवा के निमित्त आये हुए हैं इनमें से सभी ने सेवा का जो बल है, फल है, अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति का, वह अनुभव किया? किया? अभी भले हाँ के लिए झण्डी हिलाओ, जिसने किया हो। अच्छा अभी तो अतीन्द्रिय सुख का अनुभव किया, यह सदा रहेगा? या थोड़ा समय रहेगा? जो दिल से प्रॉमिस करता है,

देखा देखी हाथ नहीं उठाना, जो दिल से समझता है कि मैं इस प्राप्ति को सदा कायम रखूंगा, विघ्न विनाशक बनूंगा, वह झण्डी हिलाओ भले। अच्छा। देखो, आप टी.वी. में आ रहे हो फिर यह टी.वी. का फोटो भेजेंगे। अच्छा। यह चांस जो रखा है वह बहुत अच्छा है। चांस लेते भी खुशी से हैं और टर्न बाई टर्न सभी को खुली दिल से छुट्टी भी मिल जाती है आने की। अच्छा, अभी कमाल क्या करेंगे? (2008 में आपको प्रत्यक्ष करके दिखायेंगे) अच्छा है, एक दो को सहयोग देकर इस वायदे को पूरा करना। जरूर करेंगे। मास्टर सर्वशक्तिवान के लिए कोई भी वायदा निभाना, कोई बड़ी बात नहीं है। सिर्फ दृढ़ता को साथी बनाके रखना। दृढ़ता को नहीं छोड़ना क्योंकि दृढ़ता सफलता की चाबी है। तो जहाँ दृढ़ता होगी वहाँ सफलता है ही है। ऐसे है ना! करके दिखायेंगे। बापदादा को भी खुशी है, अच्छा है। देखो कितनों को चांस मिलता है। आधा क्लास तो सेवा करने वालों की तरफ का होता है। अच्छा है। देखो साकार बाबा के होते हुए बहुत अच्छा पार्ट बजाया है, पहला-पहला म्युजियम इसने (महेन्द्र भाई ने) तैयार किया था। तो देखो, साकार बाप की दुआयें सारे ज़ोन को हैं। अभी कोई नवीनता करके दिखायेंगे। अभी बहुत समय हो गया है, कोई नई इन्वेन्शन नहीं निकाली है। वर्गीकरण भी अभी पुराना हो गया है। प्रदर्शनियां, मेला, कॉन्फ्रेन्स, स्नेह मिलन यह सब हो गये हैं। अभी कोई नई बात निकालो। शार्ट और स्वीट, खर्चा कम और सेवा ज्यादा। रायबहादुर हो ना! तो रायबहादुर नई राय निकालो। जैसे प्रदर्शनी निकली, फिर मेला निकला, फिर वर्गीकरण निकला, ऐसे कोई नई इन्वेन्शन निकालो। देखेंगे कौन निमित्त बनता है। अच्छा है, हिम्मत वाले हैं इसीलिए बापदादा हिम्मत रखने वालों को सदा एडवांस में मदद की मुबारक दे रहे हैं। अच्छा। इस ग्रुप में 5 विंग वाले आये हैं।

एज्युकेशन विंग, एडमिनिस्ट्रेटर्स विंग, बिजनेस विंग, यूथ विंग, स्पोर्टस विंग:- अच्छा है हर एक विंग अपने अपने वर्ग की सेवा कर रहे हैं और उमंग से करते हैं। हर एक रेस भी करते हैं, एक दो की विंग से रेस भी अच्छी कर रहे हैं। बापदादा सभी बच्चों के उमंग-उत्साह को देख बार-बार बच्चों पर मुहब्बत के फूल बरसाते हैं। थोड़ी सी मेहनत करते हैं लेकिन मुहब्बत में करते हैं इसलिए हर एक वर्ग एक दो से आगे जा रहा है। एज्युकेशन कितना अच्छा कार्य है। अभी जैसे गांव वालों ने कहाँ कहाँ, कोई गांव जो है उसको लेकरके गांव में आलराउण्ड सेवा की है, डाक्टर्स ने भी प्रैक्टिकल की है, हार्ट वालों ने अच्छा किया है। ऐसे एज्युकेशन वाले कोई स्कूल को अपना बनाओ। सारा स्कूल, कॉलेज इस आध्यात्मिक नॉलेज को माने। पढ़ाई तो नहीं छोड़ेंगे ना लेकिन आध्यात्मिक नॉलेज को एड करें सब क्लासेज में। एडाप्ट करो ऐसी कोई स्कूल या कॉलेज। हो सकता है। (युनिवर्सिटी, कॉलेज तथा स्कूलों में इस वर्ष विशेष सेवा के प्लैन बनायें हैं) रिजल्ट सुनाना, अच्छा है। रिजल्ट प्रैक्टिकल आयेगी तो और भी करेंगे ना। ऐसे सभी वर्ग बिजनेस वाले, एक बिजनेस का ग्रुप निकालें, यूथ वाले सभी तरफ से विशेष रिजल्ट का ग्रुप निकालें। जो भी वर्ग हैं, वह प्रैक्टिकल एक ग्रुप रिजल्ट का दिखाये। पहले लिखत में ले आना। यह वी.आई. पीज की लिस्ट लेकर आये हैं। (भोपाल से) ऐसे ग्रुप बनाओ। ग्रुप बनाके अभी अलग अलग शहरों में हैं, और जो भी भिन्न भिन्न शहरों में हैं उसका एक बारी संगठन करो। भिन्न भिन्न स्थान के एक स्थान पर इकटठा करो उनको और उमंग दिलाओ, आगे बढ़ाओ। हर एक को ग्रुप बनाना ही चाहिए। अभी थोड़े निकाले हैं और भी निकलेंगे। कोई आपस में बैठकर यह राय करो कैसे हर एक वर्ग का ग्रुप बनें और वह समझे, ग्रुप समझे हमारी जिम्मेवारी है। कहाँ भी प्रोग्राम हो तो विशेष ग्रुप को सहयोग देना ही चाहिए। ग्रुप बनाओ, 5-5, 6-6 का, हर स्थान पर उनको पहुंचना चाहिए। उनसे सेवा लो तो उनको खुशी होगी और आगे बढ़ेंगे। अच्छा यूथ वर्ग का कुछ आया है, स्कूलों में अच्छी सेवा की है, बापदादा ने देखा समाचार सुना है। अच्छा है एक ग्रुप बनाओ विशेष। उन्हों का नाम ही हो सेवाधारी ग्रुप, सहयोगी ग्रुप, सर्विसएबुल ग्रुप। जितने भी अच्छे निकल सकें वह बनाओ। अच्छा, तो सभी वर्ग वालों को बापदादा मुबारक दे रहा है, सभी अच्छी सेवा कर रहे हैं और अभी अगले वर्ष अपने ग्रुप का नाम ले आना। हर एक ले आवें और अपने तरफ उस ग्रुप का संगठन करके फिर नाम देना। पक्के हों। कोई वारिस होगा कोई माइक होगा, दोनों प्रकार के ग्रुप में हो सकते हैं। (स्पोर्टस विंग के भी हैं, बहुत अच्छे प्लैन स्पोर्टस् परसन की सेवा के बनाये हैं) प्रैक्टिकल में करना। (बिजनेस विंग की भी प्रदर्शनी बनाई है) अच्छा है, मुबारक हो। अगर सेवा की वृद्धि का प्लैन्स चलता रहेगा तो यह भी वायब्रेशन फैलता है, यह भी आत्माओं को पहुंचता है। एक द्वारा 10 को पहुंचता है।

बापदादा ने तो सुनाया कि सेवा में अच्छी रूचि भी रख रहे हैं और आगे भी बढ़ रहे हैं। लेकिन... लेकिन है स्व उन्नति, स्व परिवर्तन, स्व के अटेन्शन की सेवा। दोनों का बैलेन्स चाहिए। वह बैलेन्स अभी बनता जा रहा है। वह बैलेन्स जरूर अटेन्शन में रखो। आपका बैलेन्स होगा और विश्व में नारा लगेगा। अभी कुछ न कुछ क्रान्ति होनी ही है। अच्छा। (यूथ विंग की तरफ से स्व-उन्नति का प्लैन बनाया है) अच्छा है। कोई न कोई नवीनता करते रहो।

डबल विदेशी - 30 देशों से आये हैं: अच्छा - आपका यह तो नाम प्रसिद्ध हो गया है, डबल फारेनर्स। अभी डबल पुरुषार्थी यह नाम रखें? डबल पुरुषार्थी, रखें? पक्का। डबल पुरुषार्थ करेंगे? करने वाले हैं। अच्छा। एक एक्जैम्पुल दिखाओ कि फारेन में कोई भी विघ्न नहीं आवे। न मन्सा संकल्प का, न वाणी का, न बोल का, न सम्बन्ध-सम्पर्क का। बापदादा सभी भारत के ज़ोन को भी कहता है, डबल विदेशियों को तो कह रहा है लेकिन भारत के सभी ज़ोन को भी कहते हैं कोई ऐसा एक्जैम्पुल बनाओ जो सभी ज़ोन और सब डबल विदेशी निर्विघ्न, निरविकल्प, निरव्यर्थ संकल्प हों। करो रेस। हर एक ज़ोन रेस करे, फारेन भी तो एक ज़ोन हो गया ना। उसको बापदादा बहुत प्राइज़ देगा। पूरे ज़ोन में विघ्न का नाम निशान न हो। एक-दो को सहयोग देंगे तो हो जायेगा। जहाँ भी कुछ हो वहाँ एक दो के सहयोगी बनके भी उन्हें निर्विघ्न बनाओ। हिम्मत दो। उमंग-उल्हास दो। ऐसा नक्शा बापदादा देखने चाहते हैं। जैसे सेवा में करके दिखाया ना। जो भी एरिया रही हुई है उसको पूरा करके दिखा रहे हैं, दिखाया भी है तो जैसे सेवा में प्रैक्टिकल करके दिखाया, बापदादा खुश है। हर एक ज़ोन ने सेवा का कोई न कोई प्रोग्राम बनाया है, फारेन वालों ने भी बनाया है, प्रैक्टिकल किया है, ऐसे स्व पुरुषार्थ का भी प्लैन बनाओ। एक दो के सहयोगी बनो। जैसे अपने को सहयोगी निर्विघ्न बनाने का अटेन्शन रखते हो, वैसे सारे ज़ोन में सभी सेन्टर्स में अटेन्शन हो। उसमें देखें कौन नम्बरवन आता है। हो सकता है या मुश्किल है? ज़ोन वाले उठो। उठो। ज़ोन के बड़े आये हैं, रमेश बृजमोहन भी उठो, यह मधुबन भी उसमें हैं। मधुबन तो पहला नम्बर है ना। तो यह हो सकता है? हो सकता है? आप (निर्वैर भाई) बोलो, हो सकता है? थोड़ा मुश्किल लगता है? (आपका संकल्प है तो कुछ भी मुश्किल नहीं है) चलो पुरुषार्थ शुरू करो, सभी ज़ोन अपना ग्रुप बनाओ, जो भी आपके सहयोगी हैं, उनका ग्रुप बनाओ, प्लैन बनाओ, फिर शुरू करो, फिर देखेगे रिजल्ट क्या है। ग्रुप जरूर बनाना पड़ेगा। इसमें क्या है, पहले आपकी दीदी थी, बुजुर्ग थी, जगह-जगह पर चक्कर लगाती थी। बस में, यह थ्रीव्हीलर भी नहीं थी, बसों में आधा-आधा घण्टे ठहरके हर छोटे-छोटे स्थान में चक्कर लगाती थी। वह आजकल कम है। ऐसा ग्रुप बनाओ जो चक्कर लगाता ही रहे, उमंग-उत्साह लाता रहे। कोई न कोई प्लैन बनाओ क्योंकि समय की पुकार है, जल्दी करो, जल्दी करो। और अचानक होना है। इसलिए मीटिंग में कोई न कोई प्लैन बनाओ। कैसे करें, कया करें? वह डिटेल बनाओ। डबल फारेनर्स भी बनाना। देखें कौन नम्बरवन जाता है।

डबल फारेनर्स जब भी मधुबन के संगठन में आते हो तो मधुबन के संगठन में रौनक हो जाती है क्योंकि इन्टरनेशनल संगठन हो जाता है, नहीं तो सिर्फ भारत का संगठन होता है। तो बापदादा को अभी देख करके खुशी होती है कि हर सीज़न के टर्न में डबल विदेशी होते ही हैं। यह प्रोग्रेस अच्छी की है। और बापदादा का विशेष प्यार तो है ही क्यों? भारतवासी त्याग करते हैं लेकिन आपका डबल त्याग है। आपका कल्चर भी अलग है। भारत का कल्चर तो वही होता है। इसीलिए बापदादा को खुशी होती है तो अभी अनुभव करते हैं कि हम भारत के थे, भारत के रहने वाले हैं। आगे तो भारत ही होना है ना। यह अमेरिका, लण्डन नहीं होगा। यह सब पिकनिक के स्थान बन जायेंगे। बाकी जो भी होगा एक ही भारत। तो अभी यह अनुभव करते हैं कि हम सेवा के लिए विदेश में गये हैं। आप सोचो अभी भी 30 स्थानों से आये हैं, सीज़न जब थी फारेन की तो कितने तरफ के थे? (90 देशों के आये थे) तो सोचो, 90 देशों की भाषा अगर इन्डिया की बहिनें सीखें और सेवा करें तो योग लगायेंगे या भाषा सीखेंगे? इसीलिए आपको भिन्न भिन्न देश में सेवा के लिए भेजा गया है। परमानेंट एड्रेस आपकी कौन सी है? पता है। परमानेंट एड्रेस कौन सी है? मधुबन कि लण्डन अमेरिका? मधुबन है? बोलो, परमानेंट एड्रेस मधुबन है, पक्का है? सेवा के लिए गये हो। घर मधुबन है, सेवा स्थान अलग-अलग है। इन्डिया में भी अलग अलग है ना, कोई महाराष्ट्र में है, कोई राजस्थान

में है, यह सेवार्थ है। तो डबल विदेशी अभी टाइटल ही रखो डबल पुरुषार्थी। डबल विदेशी नहीं डबल पुरुषार्थी। अच्छा।

ट्रेनिंग की कुमारियां:- यह भी झण्डियां लेकर आई हैं, अच्छी पहचान हो जाती है। अच्छा, ट्रेनिंग हो गई? पक्की हो गई? या थोड़ी-थोड़ी कच्ची? पक्की? अभी वहाँ जाके ट्रेनिंग जो की है, उसका सबूत रूप दिखायेंगे ना। दिखायेंगी? कि कहेंगी क्या करें, हो गया... माया आ गई...। ऐसे तो नहीं कहेंगे। विजयी। सदा विजयी का तिलक लगाके जा रही हो। कभी भी कोई आपसे पूछे आपका हालचाल क्या है? क्या कहेंगी? अच्छे ते अच्छा कहेंगी। अभी झण्डियां हिलाओ। अच्छा। तो हर मास जो इन्चार्ज है ना दादी, उनको ओ.के. ओ.के का लिखना। बड़ा पत्र नहीं लिखना, यह हो गया, यह कह गया नहीं। ओ.के. या बीच में कुछ हुआ तो लकीर डाल दो बस। क्योंकि टाइम नहीं होता है पढ़ने का। शार्टकट या ओ.के., अगर कोई गड़बड़ हुई तो ओ.के. के बीच में लकीर लगाना बस। ठीक है अभी रिजल्ट देखेंगे। जो ग्रुप होके गये हैं, उनकी रिजल्ट आई है? रतनमोहिनी कहाँ है, (रिजल्ट आती रहती है) रिजल्ट जरूर आनी चाहिए। नहीं तो क्या है, ढीली हो जायेंगी। हर मास रिजल्ट आनी चाहिए। छोटा सा कार्ड भेजना। बड़ा कागज नहीं लेना, खर्चा नहीं करना। लेकिन रिजल्ट आवे जरूर, तभी पता पड़े कि ट्रेनिंग से फायदा क्या है। इतना महल बनाया है आपके लिए। सारे शान्तिवन में सबसे बढ़िया स्थान ट्रेनिंग का है। तो बापदादा और मधुबन निवासियों ने, आपसे प्यार है उसका सबूत दिया है, अभी आपको सबूत देना है। ठीक है। रिपोर्ट लिखते रहना, मास में एक बार। ज्यादा नहीं लिखना। अच्छा। बापदादा खुश है क्योंकि विश्व के सामने तो टीचर्स ही रहती हैं ना। टीचर्स विजयी तो सेन्टर विजयी। सेन्टर विजयी तो ज़ोन विजयी और ज़ोन विजयी तो विश्व विजयी। इसलिए यह पुरुषार्थ पक्का करना। ठीक है। अच्छा।

अभी एक सेकण्ड में सभी बहुत मीठी मीठी स्वीट साइलेन्स की स्टेज के अनुभव में खो जाओ। (बापदादा ने ड्रिल कराई) अच्छा।

चारों ओर के सर्व तीव्र पुरुषार्थी, सदा दृढ़ संकल्प द्वारा सफलता को प्राप्त करने वाले, सदा विजय के तिलकधारी, बापदादा के दिल तख्तधारी, डबल ताजधारी, विश्व कल्याणकारी, सदा लक्ष्य और लक्षण को समान करने वाले परमात्म प्यार में पलने वाले ऐसे सर्व श्रेष्ठ बच्चों को बापदादा का यादप्यार, दिल की दुआयें और नमस्ते।

दादियों से:- बच्चे हाजिर हैं, तो बाप तो हाजिर है ही। न बाप बच्चों से दूर हो सकता, न बच्चे बाप से दूर हो सकते। वायदा है साथ हैं, साथ चलेंगे, आधाकल्प ब्रह्मा बाप के साथ रहेंगे। (दादी जानकी जी ने कहा, वह भी तो समाया हुआ साथ में है) आपकी यह अनुभूति ठीक है। अभी तो गैरेन्टी है लेकिन जब राज्य करेंगे तो नहीं आयेंगे। कोई देखने वाला भी चाहिए ना। (ऊपर मन कैसे लगेगा) ड्रामा में पार्ट है। ब्रह्मा बाप तो साथ है ना। देखो, ड्रामा क्या करता है? अच्छा है सब एक दो को सम्मान देते, स्वमान में रहते, चल रहे हो, चलते रहो। हाँ यह भी साथी हैं ही। (मनोहर दादी और शान्तामणी दादी) थोड़ी तबियत है, कोई हर्जा नहीं। शुरू से निमित्त बने हैं स्थापना के। तो स्थापना तो अभी पूरी नहीं हुई है ना, तो साथी हैं ना।

अंकल आंटी ने यादप्यार भेजा है:- कहो बापदादा आपसे भी ज्यादा पदमगुणा याद करता है। अच्छे हैं। अच्छा। अपना रिटर्न अच्छा दे रहे हैं। अच्छा। (दादी निर्मलशान्ता ने भी याद भेजी है।)

(भाकी पहनते समय जानकी दादी ने कहा कि दादी की भाकी याद आती है) दादी आपके साथ है ही।

डा.अशोक मेहता से:- देखो, यह तो शरीर का बर्थ डे मनाया, बहुत अच्छा किया। लेकिन आपका अलौकिक बर्थ भी न्यारा और प्यारा है। और अच्छा है, यह भी जो बर्थ डे मनाया, तो यह सच्चे दिल से जो सेवा की है उसका रिटर्न मिल रहा है। दूसरों ने मिलके खास मनाया ना। तो यह सेवा का रिटर्न मिला। और अलौकिक जन्म में भी सेवा, सोशल सेवा विश्व में प्रसिद्ध करने की सेवा के निमित्त बने हो। जब से ग्लोबल हॉस्पिटल बनी तब से आबू का वायुमण्डल परिवर्तन हो गया। और सभी इन्ट्रेस्ट लेते हैं कि यह सिर्फ आध्यात्मिक सेवा नहीं करते लेकिन सोशल

वर्क भी करते और हेल्थ का भी करते हैं, तो यह प्रभाव बदलते बदलते सेवा बढ़ती गई है। तो निमित्त बने ना। तो कितनी दुआयें हैं? बहुत दुआयें मिली हैं। दुआओं का खजाना भरपूर है। अभी स्व पुरुषार्थ का जो खाता है, उसमें ज्यादा थोड़ा एडीशन करो, दुआयें और पुण्य का खाता ठीक है स्व पुरुषार्थ का जो खाता है उसमें थोड़ा और तीव्र करो। नम्बर लेना है ना। ले सकते हैं। अच्छा है आलराउण्डर है। हेल्थ में भी, वेल्थ में सहयोग में भी। अच्छा पार्ट बजा रहे हैं। यह भी साथी हैं। (सिरिन बहन से) निमित्त यह बनी। आपके उमंग से यह भी आ गये। सारी फैमिली अच्छी है। साक्षी भी है और साथी भी है। अच्छा पार्ट बजाया है, बापदादा खुश है। यह भी बहुत अच्छा पार्ट बजा रही है। बापदादा तो देखते रहते हैं ना। बहुत युक्तियुक्त पार्ट बजा रही हो।

(डा.जैन, दादी जी के डाक्टर बापदादा से मिलने आये हैं) अच्छा रोज़ पढ़ाई पढ़ते हो? रोज़ मुरली लेके भी पढ़ो। पढ़ तो सकते हैं ना। जो ड्युटी कर रहे हो ना कनेक्शन में, वह ठीक है। इसमें प्रोग्रेस करते जाओ। (दादी हमारी ठीक है) वह तो बहुत-बहुत ठीक है। निमित्त बनी हुई है ना, विशेषता है पार्ट बजाने की। वह तो अवतार की रीति से पैदा होगी। (सफलता के लिए वरदान दो) कोई भी काम शुरू करो पहले विशेष याद करो फिर कार्य करो तो सफलता है ही है।

एम.पी.(भोपाल) के मिनिस्टर, जज तथा अन्य मेहमान बापदादा से मिल रहे हैं:- :- कोई भी सेवा कर रहे हो, बहुत अच्छा लेकिन अभी विश्व परिवर्तन के कार्य में सहयोगी हो? हैं? यह संकल्प किया है कि विश्व परिवर्तन में सदा सहयोगी रहेंगे। यह संकल्प किया? क्योंकि आप लोग आत्माओं की सेवा बहुत सहज कर सकते हो। कैसे कर सकते हो? आपके सम्पर्क में एक दिन में कितने लोग आते हैं? सम्पर्क में आते हैं ना! और कुछ भी नहीं करो लेकिन जो अपना कार्ड छपाते हो ना, कार्ड तो छपाते हो ना, परिचय का। उसके पीछे कोई न कोई ज्ञान का स्लोगन लिखो और उसमें यह लिखो - अगर टेन्शन फ्री होना है तो यह एड्रेस है, कोई सेन्टर की एड्रेस लिखो। तो आपकी सेवा हो जायेगी। जिसको रूचि होगी वह आपेही आयेगा। तो घर बैठे सेवा कर सकते हो। कर सकते हो ना। इसमें मुश्किल तो नहीं है ना? क्योंकि ईश्वरीय कार्य में अंगुली देना इससे बड़ा पुण्य प्राप्त होता है। उसकी निशानी है गुरूद्वारे में देखो बड़े बड़े वी.आई.पी. भी सेवा करने जाते हैं? क्यों? जुत्तियां भी सम्भाल के रखते हैं। क्योंकि पुण्य प्राप्त होता है। तो यह तो डायरेक्ट ईश्वर के कार्य में सहयोगी बनना, कितना पुण्य है और पुण्य की पूंजी साथ में जायेगी और कुछ नहीं जायेगा। तो अपने पुण्य का खाता जमा करते रहो। स्नेही, सहयोगी बनते रहो।

अभी शिव शक्ति होके रहो। शिव परमात्मा साथ है। शिव शक्ति।

सदा खुश रहना, कभी भी खुशी नहीं गंवाना।

(महेन्द्र जी से) अच्छा ग्रुप है। सिर्फ इन्हों को कनेक्शन में रखते हुए आगे बढ़ाते रहो।

आंध्र प्रदेश के वी.आई.पीज से:- यह तो अनुभव करते हो कि हम ईश्वरीय परिवार के सहयोगी साथी हैं। सहयोगी हैं? देखो, परमात्म कार्य में सहयोगी बनना, यह कितना पुण्य है। क्योंकि जितना सहयोगी बनेंगे, अपने लिए पुण्य जमा करेंगे। समझते हैं? और पुण्य की पूंजी साथ चलेगी और सब यहाँ रह जायेगा। तो जितना हो सके उतना अपने पुण्य की पूंजी इकट्ठी करो। तो जन्म-जन्म यह पुण्य काम आयेगा क्योंकि ईश्वरीय कार्य है ना। तो जैसे ईश्वर अविनाशी है ना वैसे उनके कार्य में सहयोगी बनना वह भी अविनाशी है। तो सहयोग देते रहना। स्व परिवर्तन और विश्व परिवर्तन। कुछ भी हो जाए खुशी कभी नहीं गंवाना। सदा खुश रहना। अच्छा।

सदा अपने को परमात्मा के याद से शक्तिशाली बनाना। शिव शक्ति हैं। चारदीवार वाली माता नहीं, शिव शक्ति हो। यह निश्चय रखना।

जस्टिस ईश्वरैय्या: (युगल से): खुश हैं। खुशी जायेगी तो नहीं? कभी नहीं जाये, सदा खुश रहना। खुशनसीब हो जो साथ मिला है। तो खुश रहना। परमात्म कार्य में लग गया तो वह कार्य क्या है? यह तो पक्का है, विजयी है।

जो भी ईश्वरीय कार्य में सहयोगी बनता है उसको अन्दर खुशी की अनुभूति होती है। तो खुशी होती है ना। क्योंकि अविनाशी बाप द्वारा आटोमेटिक प्राप्ति होती है तो सदा खुशनसीब हो। खुशनसीब हैं और खुशी देने वाले हैं। ठीक है। अच्छा है।

''नये वर्ष में अखण्ड महादानी, अखण्ड निर्विघ्न, अखण्ड योगी और सदा सफलतामूर्त बनना''

आज बापदादा अपने सामने डबल सभा को देख रहे हैं। एक तो साकार में सम्मुख बैठे हैं और दूसरे दूर बैठे भी दिल के समीप दिखाई दे रहे हैं। दोनों सभाओं की श्रेष्ठ आत्माओं के मस्तक में आत्म दीप चमक रहा है। कितना सुन्दर चमकता हुआ नज़ारा है। इतने सब एक संकल्प, एकरस स्थिति में स्थित परमात्म प्यार में लवलीन एकाग्र बुद्धि से स्नेह में समाये हुए कितने प्यारे लग रहे हैं। आप सभी भी आज विशेष नया वर्ष मनाने के लिए पहुंच गये हो। बापदादा भी सभी बच्चों का उमंग-उत्साह देख चमकते हुए आत्म दीप को देख हर्षित हो रहे हैं।

आज का दिन संगम का दिन है। एक वर्ष की पुराने की विदाई है और नये वर्ष की बधाई होने वाली है। नया वर्ष अर्थात् नया उमंग और उत्साह, स्व परिवर्तन का उमंग है, सर्व प्राप्तियों को स्वयं में प्राप्त देख दिल में उत्साह है। दुनिया वाले भी यह उत्सव मनाते हैं, उन्हों के लिए एक दिन का उत्सव है और आप लकी लवली बच्चों के लिए संगमयुग का हर दिन उत्सव है क्योंकि खुशी का उत्साह है। दुनिया वाले तो बुझे हुए दीपक को जलाके वर्ष मनाते हैं और बापदादा और आप इतने सारे चारों ओर के जगे हुए दीपकों के साथ नया वर्ष का उत्सव मनाने आये हैं। यह तो रीति रसम मनाने की निमित्त मात्र करते हो लेकिन आप सभी जगे हुए दीपक हो। अपना चमकता हुआ दीप दिखाई देता है ना! जो अविनाशी दीप है।

तो नये वर्ष में हर एक ने दिल में स्व प्रति, विश्व की आत्माओं प्रति कोई नया प्लैन बनाया है? 12 बजे के बाद नया वर्ष शुरू हो जायेगा तो इस वर्ष को विशेष किस रूप में मनायेंगे? जैसे पुराना वर्ष विदाई लेगा तो आप सबने भी पुराने संकल्प, पुराने संस्कार उन्हों को विदाई देने का संकल्प किया? वर्ष के साथ-साथ आप भी पुराने को विदाई दे नये उमंग-उत्साह के संकल्पों को प्रैक्टिकल में लायेंगे ना! तो सोचो अपने में क्या नवीनता लायेंगे? कौन से नये उमंग-उत्साह की लहर फैलायेंगे? कौन से विशेष संकल्प का वायब्रेशन फैलायेंगे? सोचा है? क्योंकि आप सभी ब्राह्मण सारे विश्व की आत्माओं के लिए परिवर्तन निमित्त आत्मायें हो। विश्व के फाउण्डेशन हो, पूर्वज हो, पूज्य हो। तो इस वर्ष अपनी श्रेष्ठ वृत्ति द्वारा क्या वायब्रेशन फैलायेंगे? जैसे प्रकृति चारों ओर कभी गर्मी का, कभी सर्दी का, कभी बहार का वायब्रेशन फैलाती है। तो आप प्रकृति के मालिक प्रकृतिजीत कौन सा वायब्रेशन फैलायेंगे? जिससे आत्माओं को थोड़े समय के लिए भी सुख-चैन का अनुभव हो। इसके लिए बापदादा यही इशारा दे रहे हैं कि जो भी खजाने प्राप्त हुए हैं उन खजानों को सफल करो और सफलता स्वरूप बनो। विशेष समय का खजाना कभी भी व्यर्थ न जाये। एक सेकण्ड भी व्यर्थ को कार्य में लगाओ। समय को सफल करो, हर श्वांस को सफल करो, हर संकल्प को सफल करो, हर शक्ति को सफल करो, हर गुण को सफल करो। सफलतामूर्त बनने का यह विशेष वर्ष मनाओ क्योंकि सफलता आपका जन्म सिद्ध अधिकार है। उस अधिकार को अपने कार्य में लगाए सफलतामूर्त बनो क्योंकि अब की सफलता आपके अनेक जन्म साथ रहने वाली है। आपके समय सफलता का प्रालब्ध पूरा आधाकल्प सफलता का फल प्राप्त होगा। अब के समय की सफलता का प्रालब्ध पूरा समय ही प्राप्त होगा। श्वांस को सफल करने से भविष्य में भी देखो आपके श्वांस सफलता का परिणाम भविष्य में सभी आत्मायें पूरा समय स्वस्थ रहती हैं। बीमारी का नाम नहीं। डाक्टर्स की डिपार्टमेंट ही नहीं क्योंकि डाक्टर्स क्या बन जायेंगे? राजा बन जायेंगे ना! विश्व के मालिक बन जायेंगे। लेकिन इस समय आप श्वांस सफल करते हो और सर्व आत्माओं को स्वस्थ रहने का प्रालब्ध प्राप्त होता है। ऐसे ही ज्ञान का खजाना, उसका फल स्वरूप स्वर्ग में आपके अपने राज्य में इतने समझदार, शक्तिवान बन जाते जो वहाँ कोई वजीर से राय लेने की आवश्यकता नहीं, स्वयं ही समझदार

शक्तिवान होते हैं। शक्तियों को सफल करते हो, उसकी प्रालब्ध वहाँ सब शक्तियां विशेष धर्म सत्ता, राज्य सत्ता दोनों ही विशेष शक्तियां, सत्तायें वहाँ प्राप्त होंगी। गुणों का खजाना सफल करते हो तो उसकी प्रालब्ध देवता पद का अर्थ ही है दिव्यगुणधारी और साथ-साथ अभी लास्ट जन्म में आपकी जड़ मूर्ति का पूजन करते हैं तो क्या महिमा करते हैं? सर्वगुण सम्पन्न। तो इस समय की सफलता का प्रालब्ध स्वत: ही प्राप्त हो जाती। इसलिए चेक करो खजाने मिले, खजानों से सम्पन्न हुए हैं लेकिन स्व प्रति वा विश्व प्रति कितना सफल किया? पुराने वर्ष को विदाई देंगे तो पुराने वर्ष में क्या जमा खजाना सफल किया, कितना किया? यह चेक करना और आने वाले वर्ष में भी इन खजानों को व्यर्थ के बजाए सफल करना ही है। एक सेकण्ड भी और कोई खजाना भी व्यर्थ न जाये। पहले बताया है कि संगम समय का सेकण्ड, सेकण्ड नहीं है वर्ष के बराबर है। ऐसे नहीं समझना एक सेकण्ड, एक मिनट ही तो गया, व्यर्थ जाना इसको ही अलबेलापन कहा जाता है। आप सबका लक्ष्य है कि बाप ब्रह्मा समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बनना है। तो ब्रह्मा बाप ने सर्व खजाने आदि से अन्तिम दिन तक सफल किया, इसका प्रत्यक्ष प्रमाण देखा। सम्पूर्ण फरिश्ता बन गया। अपनी प्यारी दादी को भी देखा सफल किया और औरों को भी सफल करने का सदा उमंग उत्साह बढ़ाया। तो ड्रामानुसार विशेष विश्व सेवा के अलौकिक पार्ट के निमित्त बनी।

तो इस वर्ष, कल से हर दिन अपना चार्ट रखना – सफल और व्यर्थ... क्या हुआ कितना हुआ? अमृतवेले ही दृढ़ संकल्प करना, स्मृति स्वरूप बनना कि सफलता मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है। सफलता मेरे गले का हार है। सफलता स्वरूप ही समान बनना है। ब्रह्मा बाप से प्यार है ना। तो ब्रह्मा बाप का सबसे ज्यादा प्यार किससे था? जानते हो? किससे प्यार था? मुरली से। लास्ट दिन भी मुरली का पाठ मिस नहीं किया। समान बनने में यह चेक करना - ब्रह्मा बाप का जिससे प्यार रहा, ब्रह्मा बाप के प्यार का सबूत है – जिससे बाप का प्यार था उससे मेरा प्यार स्वत: ही सहज होना चाहिए। ब्रह्मा बाप की और विशेषता क्या रही? सदा अलर्ट, अलबेलापन नहीं। लास्ट दिन भी कितना अलर्ट रूप में अपने सेवा का पार्ट बजाया। शरीर कमजोर होते भी कैसे अलर्ट होके, आधार लेके नहीं बैठे और अलर्ट करके गये। तीन बातों का मन्त्र देके गये। याद है ना सबको। तो जितना अलर्ट रहेंगे, फालो करेंगे, अलबेलापन खत्म होगा। अलबेलेपन के विशेष बोल बापदादा बहुत सुनते रहते हैं। जानते हो ना! अगर इन तीन शब्दों को (निराकारी, निर्विकारी और निरंहकारी) सदा अपने मन में रिवाइज़ और रियलाइज करते चलो तो आटोमेटिकली सहज और स्वत: समान बन ही जायेंगे। तो एक बात सफल करो सफलतामूर्त बनो।

दूसरी बात - बापदादा ने बच्चों की वर्ष की रिजल्ट देखी। क्या देखा? महादानी बने हो, लेकिन अखण्ड महादानी, अखण्ड अण्डरलाइन, अखण्ड महादानी, अखण्ड योगी, अखण्ड निर्विघ्न अभी इसकी आवश्यकता है। क्या अखण्ड हो सकता है? हो सकता है? पहली लाइन वाले अखण्ड हो सकता है? हाथ उठाओ अगर हो सकता है तो। जो कर सकता है, कर सकते हो? मधुबन वाले भी उठा रहे हैं। बापदादा मधुबन वालों को पहले देखता है। मधुबन से प्यार है। शान्तिवन या पाण्डव भवन या जो भी दादी की भुजायें हैं, सबको ध्यान से देखते हैं। अगर अखण्ड हो गया, मन्सा से शक्ति फैलाने की सेवा में बिजी रहो, वाचा से ज्ञान की सेवा और कर्म से गुणदान वा गुण का सहयोग देने की सेवा।

आजकल चाहे अज्ञानी आत्मायें हैं, चाहे ब्राह्मण आत्मायें हैं सभी को गुण का दान, गुणों का सहयोग देना आवश्यक है। अगर स्वयं सहज सिम्पुल रूप में सैम्पुल बनके रहे तो आटोमेटिक दूसरे को आपके गुणमूर्त का सहयोग स्वत: ही मिलेगा। आजकल ब्राह्मण आत्मायें भी सैम्पुल देखने चाहती हैं, सुनने नहीं चाहती हैं। आपस में भी क्या कहते हो? कौन बना है? तो प्रत्यक्ष रूप में गुणमूर्त देखने चाहते हैं। तो कर्म से विशेष गुणों का सहयोग, गुणों का दान देने की आवश्यकता है। सुनने कोई नहीं चाहता, देखने चाहता है। तो अभी यह विशेष ध्यान में रखना कि मुझे ज्ञान से, वाचा से तो सेवा करते ही रहते हो और करते ही रहना है, छोड़ना नहीं है लेकिन अभी मन्सा और

कर्म, मन्सा द्वारा वायब्रेशन फैलाओ। सकाश फैलाओ। वायब्रेशन वा सकाश दूर बैठे भी पहुंचा सकते हो। शुभ भावना, शुभ कामना द्वारा किसी भी आत्मा को मन्सा सेवा द्वारा वायब्रेशन वा सकाश दे सकते हो। तो अभी इस वर्ष एक मन्सा शक्तियों का वायब्रेशन, शक्तियों द्वारा सकाश और कर्म द्वारा गुण का सहयोग वा अज्ञानी आत्माओं को गुणदान, नये वर्ष में गिफ्ट भी देते हो ना। तो इस वर्ष स्वयं गुणमूर्त बन गुणों की गिफ्ट देना। गुणों की टोली खिलाते हो ना। मिलते हो तो टोली खिलाते हो ना। टोली खिलाने में खुश हो जाते हैं ना। कोई आत्मायें, भागन्ती भी टोली को याद करते हैं। और भूल जाते हैं लेकिन टोली याद आती है। तो इस वर्ष कौन सी टोली खिलायेंगे? गुणों की टोली खिलाना। गुणों की पिकनिक करना क्योंकि बाप समान समय की समीपता प्रमाण और दादी के इशारे प्रमाण समय की सम्पन्नता अचानक कभी भी होना सम्भव है। इसलिए बाप समान बनना है वा दादी को प्यार का रिटर्न देना है तो जो आवश्यकता है - मन्सा और कर्म द्वारा सहयोगी बनने का, कोई कैसा भी है यह नहीं सोचो, यह बनें तो मैं बनूं। नम्बरवन बनना है तो बने तो बनूं, तो पहला नम्बर तो बनने वाला बन जायेगा। आपका नम्बर तो दूसरा हो जायेगा। क्या आप दूसरा नम्बर बनने चाहते हैं कि पहला नम्बर बनने चाहते हैं? वैसे अगर किसको कहो आप दूसरा नम्बर ले लो तो लेंगे? सभी यही कहेंगे पहला नम्बर लेना है। तो पहला निमित्त बनना है। दूसरे को निमित्त क्यों बनाते हो। अपने को निमित्त बनाओ ना। ब्रह्मा बाप ने क्या कहा? हर बात में खुद निमित्त बनके निमित्त बनाया। हे अर्जुन बन पार्ट बजाया। मुझे निमित्त बनना है। मुझे करना है। दूसरा करेगा, मुझे देखके और करेंगे। और को देख मैं करूंगा नहीं। मुझे देख और करेंगे। यह ब्रह्मा बाप का पहला पाठ है। तो सुना क्या करना है? सफलता मूर्त, सफल सफलता मूर्त, अखण्ड दानी, माया को आने की हिम्मत ही नहीं बनेंगी। जब अखण्ड महादानी बन जायेंगे, निरन्तर सेवाधारी रहेंगे, बिजी रहेंगे, मन बुद्धि सेवाधारी रहेगा तो माया कहाँ आयेगी। तो अभी इस वर्ष क्या बनना है? सबका एक आवाज निकले दिल से, यह बापदादा चाहता है, वह क्या? नो प्राब्लम, कम्पलीट। प्राब्लम नहीं लेकिन कम्पलीट बनना ही है। दृढ़ निश्चयबुद्धि, विजयमाला के नजदीक मणका बनना ही है। ठीक है ना! बनना है ना! मधुबन वाले बनना है। नो कम्पलेन? नो कम्पलेन। हाथ उठाओ हिम्मत रखने वाले। नो प्राब्लम। वाह! मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो।

देखो, निश्चय का प्रत्यक्ष प्रमाण है रूहानी नशा। अगर रूहानी नशा नहीं तो निश्चय भी नहीं है। फुल निश्चय नहीं है, थोड़ा बहुत है। तो नशा रखो क्या बड़ी बात है! कितने कल्प आप ही बाप समान बने हैं, याद है? अनगिनत बार बने हो। तो यह नशा रखो हम ही बने हैं, हम ही हैं और हम ही बार-बार बनते रहेंगे। यह नशा सदा ही कर्म में दिखाई दे। संकल्प में नहीं, बोल में नहीं, लेकिन कर्म में, कर्म का अर्थ है चलन में, चेहरे में दिखाई दे। तो होमवर्क मिल गया। मिला ना? अब देखेंगे नम्बरवार में आते हो या नम्बरवन में आते हो। अच्छा।

बापदादा के पास कार्ड, पत्र, ईमेल, याद-प्यार कम्प्युटर द्वारा भी बहुत आये हैं और बापदादा दूर बैठे दिलतख्तनशीन बच्चों को, हर एक को नाम सहित विशेषता सहित यादप्यार और दिल की दुआयें सम्मुख इमर्ज कर दे रहे हैं। बापदादा जानते हैं कि यादप्यार, प्यार तो सबको रहता ही है और बापदादा सदा अमृतवेले विशेष ब्राह्मण आत्माओं को यादप्यार का रेसपान्ड विशेष करता है। इसीलिए कार्ड भी अच्छे अच्छे बनाये हैं, बापदादा के पास तो वतन में, यहाँ रखते हैं लेकिन वतन में पहले पहुंचते हैं। अच्छा।

सेवा का टर्न यू.पी. ज़ोन और पश्चिम नेपाल का है:- बापदादा ने देखा है, जिस भी ज़ोन का टर्न होता है ना तो आधा ग्रुप तो वहाँ का होता है। अभी आप बैठ जाओ और जो दूसरे हैं इस ज़ोन के बिना जो आये हैं वह उठो। इस ज़ोन के बिना, अच्छा, आधा-आधा है, बैठ जाओ। अच्छा चांस मिलता है ना अपने सेवा के टर्न में कितने भी लाते हो ना तो खुला निमन्त्रण मिलता है। एक मिलन का चांस, दूसरा सेवा का चांस। तो डबल चांस लेने वाले। यू.पी. की विशेषता क्या है? पता है। यू.पी. सिकीलधी है। क्यों सिकीलधी है? क्यों है सिकीलधी? मम्मा बाबा के

ज्यादा चक्कर लगे हैं। जैसे बाम्बे, दिल्ली वैसे यू.पी. में भी चक्कर लगे हैं। यू.पी. में ब्रह्मा का यादगार है ना। ब्रह्मा का है। जैसे राजस्थान में पुष्कर में ब्रह्मा का यादगार है ना, ऐसे यू.पी. में भी ब्रह्मा कुण्ड है और प्रैक्टिकल में ब्रह्मा बाप ने यू.पी. में सेवा की है। बच्चों को बहुत लाडप्यार दिया है। जो उस समय थे, बहुत लाडप्यार प्यारा है। अच्छा। अभी यू.पी. नया क्या कर रही है? बापदादा ने लास्ट मुरली में कहा था कि नया कोई प्लैन निकालो। यह प्रदर्शनी, कान्फ्रेन्स, यह मेला, यह अभी कामन हो गये हैं। कई बार कई देख चुके हैं तो जब सुनते हैं ना मेला लगा है, प्रदर्शनी लगी है तो कहते हमने देखा है। समझा नहीं समझा लेकिन देख तो लिया ना। अभी नई कोई इन्वेन्शन निकालो। अब कम खर्चा बालानशीन ऐसी इन्वेन्शन निकालो जो छोटा सेन्टर भी कर सके, बड़ा सेन्टर भी कर सके। देखेंगे, कौन सा बच्चा नई इन्वेन्शन करने के निमित्त बनता है। यू.पी. वाले बनेंगे। यू.पी. में बुद्धिवान तो बहुत हैं। निकाल सकते हैं। यू.पी. की विशेषता दूसरी है कि यू.पी. के सेवा के आरम्भ में वारिस निकले। अच्छे अच्छे वारिस निकले। ऐसे दिल्ली में भी निकले हैं, बाम्बे में भी निकले हैं लेकिन यू.पी. में भी निकले हैं। अभी कर्नाटक में भी स्वर्णिम कर्नाटक कर रहे हैं बापदादा रिजल्ट देखेंगे वारिस कितने निकले, माइक कितने निकले? सन्देश तो मिला उसकी मुबारक है। और यू.पी. में भक्ति का यादगार भी बहुत है। भक्त क्वालिटी भी बहुत हैं। अन्धश्रधा वाले भी हैं और भावना वाले भी हैं, दोनों हैं। अभी यू.पी. वाले कमाल दिखाना। सबसे पहला नम्बर वारिस क्वालिटी आप निकालके लास्ट टर्न पर लिस्ट भेजना फिर यहाँ से तारीख जायेगी तब ले आना। वारिस बनाने की विधि क्या है? जानते हो ना! जो स्वयं हर बात में अनुभव मूर्त बन उन्हों के प्रति अपना दिल का अनुभव सुनाता नहीं है, लेकिन अपना अनुभव का स्वरूप उन्हों को अनुभव कराता है। वह वारिस बना सकता है। जो सिर्फ ज्ञान देता है वह अच्छा बनाता है लेकिन अच्छे ते अच्छा नहीं बनाता है। अच्छे ते अच्छा है वारिस क्वालिटी। तो देखेंगे लास्ट टर्न में क्या कोई लिस्ट आती है। कोई भी करे, निमित्त यू.पी. है लेकिन कोई भी ज़ोन वारिस की लिस्ट भेजे। नम्बरवन देखें कौन बनता है! अच्छा। मुबारक है यू.पी. वालों को। बापदादा ने सुना है कि यज्ञ सेवा का पार्ट बहुत अच्छी तरह से निभाया है। इसलिए सेवा की भी मुबारक है और साथ-साथ जी हाजिर का पाठ अच्छा बजाया, इसकी भी मुबारक। अच्छा।

डबल विदेशी - 60 देशों से 800 भाई बहिनें आये हैं:- अच्छा - बच्चों ने तो निशानी लगाई है, अच्छे हैं। बच्चों को चाकलेट की टोली दी है। दी है? खिलाई है। कौन है निमित्त। बच्चों को चाकलेट अच्छा लगता है ना! और अपने आगे उड़ने की विधि भी बताई है? कौन है निमित्त? बच्चों के लिए कौन निमित्त है हाथ उठाओ। तो अगले वर्ष यह बच्चे आयेंगे तो और चेंज होके आयेंगे ना। हाँ बच्चे आगे आओ। (बच्चों ने गीत गाया - बाबा आप कितने अच्छे हो, कितने प्यारे हो..) अच्छी मेहनत की है। अभी दूसरे साल आयेंगे तो इससे भी आगे उड़ते हुए उड़ने वाले फरिश्ते बनके आयेंगे। ठीक है ना! दूसरे वर्ष और प्रोग्रेस करके आयेंगे। अच्छा - सुनो, कल बापदादा के तरफ से बच्चों को विशेष चाकलेट बनाके खिलाना। अच्छा। डबल विदेशी - बापदादा ने कहा था कि डबल विदेशी नहीं, अभी डबल पुरुषार्थी। तो डबल हैं? बापदादा को याद है पहले की बात कि बापदादा ने कहा था कभी-कभी विदेशी जो हैं ना, वह वाह! वाह! के बजाए, व्हाई व्हाई बहुत करते हैं। व्हाई और आई... आप तो नहीं करने वाले हो ना। आप व्हाई कहने वाले हो या वाह! वाह! कहने वाले हो। वाह! वाह! सदा? सदा वाह! वाह! कभी किसी बात में व्हाई नहीं। व्हाई माना हाय। तो हाय हाय नहीं, व्हाई नहीं वाह! वाह!। जो हो रहा है वह बहुत अच्छा, जो हो गया वह उससे भी अच्छा, जो होने वाला है वह परम अच्छा। यह है डबल पुरुषार्थ की निशानी। नो प्राब्लम वाले हो ना। नो प्राब्लम कि थोड़ी-थोड़ी प्राब्लम है। अच्छा यहाँ प्राब्लम छोड़के जाना, प्लेन में नहीं ले जाना क्योंकि बाप के पास आये हो तो बाप को कुछ तो कमाल दिखायेंगे ना। तो यह कमाल दिखाओ, कभी-कभी नहीं, थोड़ा-थोड़ा है यह नहीं, सदा रूहानी गुलाब। खिला हुआ गुलाब। क्योंकि सभी भारतवासियों के फारेन वाले बाप

के भी, दादियों को भी फारेन वाले बहुत लाडले हैं, प्यारे हैं। फारेन वालों को देखके खुश होते हैं। तो आप भी सदा खुश रहेंगे ना। सदा शब्द याद कर लो। इस वर्ष की यह सौगात ले जाओ। सदा शब्द कभी नहीं भूलना। विघ्न आने में सदा नहीं करना, निर्विघ्न बनने में सदा। अच्छा है, मधुबन का श्रृंगार हो। डबल विदेशी विशेष मधुबन का श्रृंगार हो। तो श्रृंगार की बहुत वैल्यु होती है। तो वैल्युबुल हो। अच्छा है। यह बहुत अच्छा करते हो। बापदादा ने देखा है हर ग्रुप में इन्टरनेशनल ग्रुप होता है। अभी कितने देशों के हैं? (60 देशों के) तो देखो रौनक है ना! 60 देशों से भाग भागकर पहुंच गये हो। तो बापदादा के तरफ से मधुबन के तरफ से आपको पदम पदम मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो। अच्छा।

इन्टरनेशनल यूथ ग्रुप:- अच्छा इतना बड़ा है। यूथ ग्रुप भी बड़ा है। बापदादा ने यूथ ग्रुप का समाचार सुना। जो आपस में प्लैन बनाया है वह अच्छा प्लैन बनाया है लेकिन स्व उन्नति का प्लैन पहले नम्बर प्रैक्टिकल में लाना क्योंकि यूथ ग्रुप को दुनिया वाले भी कमाल करने की आशा से देखते हैं। गवर्मेन्ट भी इसी आशा से देखती कि यूथ कुछ करके दिखाये, बनके दिखाये और बनाके दिखाये। प्रोग्राम तो अच्छा बनाया है। सिस्टम भी अच्छी बनाई है। बनाने वालों को मुबारक दे रहे हैं। अभी हर समय अपनी रिजल्ट निमित्त बनने वालों को भेजते रहना क्योंकि चेकिंग करते रहेंगे ना तो चेंज हो जायेंगे। चेकिंग में अलबेलापन आयेगा तो चेंज भी नहीं हो सकेंगे। इसीलिए जैसे डायरेक्शन मिले हैं वैसे अपनी रिपोर्ट, रिपार्ट बुरी नहीं अच्छी, अपना चार्ट देते रहना। इसमें थकना नहीं, अलबेले नहीं होना। फिर फारेन के यूथ को इन्डिया में दिखायेंगे, गवर्मेन्ट से मिलायेंगे और इन्डिया के ग्रुप को फारेन गवर्मेन्ट से मिलायेंगे। तो तैयार हो जाओ। उनको चार्ट दिखायेंगे ना कि यह कैसे अपना पुरुषार्थ करते हैं, परिवर्तन करते हैं और सफलता पाई है। तो ठीक है, बहुत अच्छा किया है, करते रहना। अच्छा।

ज्युरिस्ट और कलचरल विंग:- अच्छा है बापदादा के पास समाचार तो सब पहुंचता रहता है। दोनों ही विंग कोई न कोई प्लैन बनाते रहते हैं और अच्छा प्रोग्रेस भी कर रहे हैं। जो स्पार्क विंग है, उसमें क्या रिसर्च किया है? क्या एक्जैम्पुल कोई रिसर्च करने के बाद प्रैक्टिकल प्रूफ बनाया है, जैसे हार्ट पेशेन्ट निरोगी बन गये हैं, वह सबूत है, यूथ का भी समाचार सुना, तो अच्छा गवर्मेन्ट तक सबूत जा रहा है। ऐसे गांव वालों की सेवा में भी प्रत्यक्ष सेन्टर गीता पाठशालायें खुल गये हैं, यह रिकार्ड तो अच्छा है, ऐसे स्पार्क वालों ने, स्पार्क वाले हैं कल्चर वाले खड़े हैं तो ऐसा कोई विशेष एक्जैम्पुल बनाया है कि रिसर्च से यह परिवर्तन का सैम्पुल बना है, बापदादा वह सैम्पुल देखने भी चाहते, सुनने भी चाहते। क्या रिसर्च किया और कितनों ने उस रिसर्च करने का प्रैक्टिकल लाभ उठाया। यह देखने चाहते हैं। कल्चर वालों ने क्या कल्चरल डिपार्टमेंन्टस में, कोई ऐसी डिपार्टमेंट तैयार की है जो प्रत्यक्ष रूप में वर्णन करें कि हमनें आध्यात्मिक कल्चर द्वारा यह-यह अनुभव किया है। हमारी सारी डिपार्टमेंट परिवर्तन हुई है। ऐसे सभी वर्ग को, सभी वर्ग को बापदादा यही कहते हैं ऐसे सात-आठ, दस-बारह एक्जैम्पुल तैयार करो जो फिर गवर्मेन्ट को, वर्गीकरण क्या करता है उसका एक्जैम्पुल सुनायें। तो गवर्मेन्ट का भी सहयोग मिल सकता है। बापदादा ने सुना था एक डिपार्टमेंट ने कहा है कि पैसा हमारे पास है, काम आपके पास है। तो काम का प्रत्यक्ष सबूत देखने से उन्हों का भी सफल कराओ ना, नहीं तो ऐसे ही बिचारा खजाना चला जायेगा। उन्हों को यूज़ करने नहीं आता, आप सफल करा सकते हो, प्रभाव से। तो सभी वर्ग वाले मिलके ऐसा कोई प्लैन बनाओ जो प्रैक्टिकल में हर वर्ग का सबूत दिखाई दे। (ऊषा बहन ने चन्द्रपुर, भोपाल के कलचरल प्रोग्राम का समाचार सुनाया) प्रोग्राम अच्छा किया उसकी मुबारक है, अभी अच्छा बनाके दिखाओ।

सभी को माइन्ड डांस आती है? मन की डांस आती है? तो सारे दिन में कितना समय मन में खुशी की डांस करते हो? इसमें तो थकने की बात नहीं। गोड़ों के दर्द की भी बात नहीं, बिजी की भी बात नहीं, टाइम देना पड़ेगा यह भी नहीं, खर्चा भी नहीं। तो क्या करना चाहिए? जब भी बापदादा टी.वी. खोले तो क्या दिखाई दे? हर बच्चा

मन की डांस में बिजी है। तो सदा बिजी रहेंगे तो बापदादा अचानक टी.वी. खोलेगा और देखेगा कौन-कौन डांस कर रहा है। खुशी की डांस तो अच्छी है ना। तो सदा यह डांस करते रहना। अच्छा - अभी क्या करना है? बापदादा तो मिलन मनाने में ही बिजी हो गये हैं। अच्छा।

चारों ओर के चमकते हुए आत्म दीप बच्चों को, सदा सफल करने वाले सफलता स्वरूप बच्चों को, सदा अखण्ड महादानी, अखण्ड निर्विघ्न, अखण्ड ज्ञान और योगयुक्त, सदा एक ही समय में तीन सेवा करने वाले मन्सा वायब्रेशन द्वारा वायुमण्डल द्वारा, वाचा वाणी द्वारा और चलन और चेहरे कर्म द्वारा, तीनों सेवा एक ही समय इकट्ठा हो तब आपका प्रभाव अच्छा कहने वाले नहीं, लेकिन अच्छा बनने वालों के ऊपर पड़ेगा। तो ऐसे अनुभवी मूर्त द्वारा अनुभव कराने वाले बच्चों को बापदादा का नये वर्ष के लिए पदम पदमगुणा यादप्यार, दुआयें और दिल का तख्त सदा तख्तनशीन बनाने वाला है, इसलिए चारों ओर के बच्चों को जो सम्मुख है, वा दूर बैठे दिलतख्त पर हैं, सभी को नाम और विशेषता सहित यादप्यार और नमस्ते।

अच्छा - जो पहली बार आये हैं वह उठकर खड़े हो जाओ। हाथ हिलाओ। देखो आधा क्लास पहले बारी का आया है। पीछे वाले हाथ हिलाओ। दिखाई दे रहा है टी.वी. में। बहुत हैं। अच्छा पहले वारी आने वालों को बापदादा की बहुत-बहुत दिल से मुबारक भी है, और दिल का यादप्यार भी है। जैसे अभी आये हो, तो अभी के आने वालों को बापदादा का वरदान है अमर भव।

दादी जानकी से:- अच्छा सम्भाल रही हैं। आप सन्तुष्ट हो। बीज सन्तुष्ट तो सब सन्तुष्ट। दादी की भी छत्रछाया है। उनकी भी दृष्टि है। यह सिर्फ सेवा के लिए बुलाया है बाकी है जैसे सेवा पर ही।

(मनोहर दादी से) अच्छा पार्ट बजा रही है। क्लास में हाजिरी देती हो, यह बहुत अच्छा स्वयं भी रिफ्रेश औरों को भी रिफ्रेश करती हो। यह छोड़ना नहीं। इसने संकल्प किया है, बिना डाक्टर के ठीक रहूंगी। हो जायेगी।

(तीनों भाईयों से) अच्छा त्रिमूर्ति ठीक है, त्रिमूर्ति हो ना। अभी जैसे बाप त्रिमूर्ति रूप में प्रसिद्ध है ना, ऐसे आप तीनों भी कोई ऐसा विशाल कार्य करके दिखाओ जो सब कहें वाह! सब वाह! वाह! के गीत गायें। स्व प्रति और सेवा प्रति, दोनों। स्व प्रति भी तीन नहीं, एक। एक ने कहा दूसरे ने माना। विचार दिया, सन्तुष्ट किया। यह सब देखने चाहते हैं। करना तो पड़ेगा ना। एक कोई निमित्त बन जाओ। मुझे निमित्त बनना है। हर एक अपने को समझे, मुझे निमित्त बनना है। प्राइज़ मिलेगी ना। दिल का प्यार यह प्राइज सबसे बड़ी है। इस बात पर प्यार। वैसे प्यार है लेकिन इस बात पर प्यार कौन लेता है वह प्यार प्राइज़ के रूप में, ठीक है ना। अच्छा।

2008 के आगमन पर प्यारे बापदादा द्वारा नये वर्ष की बधाईयां
(रात्रि 12 बजे के बाद)

चारों ओर के सभी लकी और लवली बच्चों को नये वर्ष की बहुत-बहुत मुबारक भी है और दुआयें भी हैं। नये वर्ष में सदा नये उमंग-उत्साह में रहना और नये संकल्प सेवा की वृद्धि और स्वयं के तीव्र पुरुषार्थ की सिद्धि को प्राप्त करते उड़ते रहना और उड़ाते रहना। अभी के लिए गुडनाइट और साथ में कल के लिए अभी-अभी शुरू हो गया तो गुडमार्निंग भी गुडनाइट भी। अच्छा।